CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Bhasatika
Folios - 140

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

RECORD NO. 31	LANGUAGE Skt.
ROLL NO. 6 Date of Filming 18-5-96	
ACC NO.	SCRIPT Dev Nagari
Ms. No. 1251	
Bundle No.	
DEC NO. /R. NO.	MATERIAL Paper
DESCRITIVE CATALOGUE/TRIENNIAL CATALOGUE VOLUME : An Index to the Register of Mss. in the Pothikhana of Jaipur	
AUTHOR Jayadeva	NO OF FOLIOS ~~PAGES~~ 140
TITLE Gītagovindam	COMPLETE/INCOMPLETE
WITH OR WITHOUT COMMENTARY Bhāṣaṭīkā	REMARKS
SUBJECT Kāvya	LOCATION The Maharaja Sawai Man Singh II Museum, Khasmohor Collection, JAIPUR.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Bhashatika
Folios-140

गीत० मार्ग विषै कुंज प्रति चले है॥ श्री नंदजू
२ की आग्या तैं॥ सु कैसी है नंदजू की आ
ग्या॥ श्री नंदजू कहत भये अहो राधा आ
कास मेघनि करि छायो है॥ अरु बन
की भूमि तमाल वृक्षनि करि स्या
म भई है॥ अरु कृष्ण रात्रि विषै कायर
है॥ डरपत है तातैं तुम इनहिं गृह लै
जाहु॥ ऐसी नीति श्री नंदजी राधाजी
सौं कहत भये॥ श्लोक॥ वाग्देवता च
रितचित्रितचित्तसद्मा॥ पद्मावती च
रण चारण चक्रवर्ती॥ श्री वासुदेव र
ति केलि कथा समेत मेतं करोति जय
देव कवि प्रबंधः॥ अर्थ॥ श्री जयदेव २

नामक क्रिया गीतगोविंद नाम प्रबंध
ही करत है॥ सो कैसो है प्रबंध॥ श्री रा
धा कृष्ण जी की एकांत जु क्रीड़ा ता करि
जु कामिभ्यो है॥ कैसो है जयदेव कवि॥
वाग्देवता जु सरस्वती॥ ता के चरित्र क
रि सोभित है मन जिन को॥ बहुरि कैसो
है जयदेव कवि॥ पद्मा जु लक्ष्मी तिन
के चरण सेवत है॥ चक्रवर्ती राजा है॥
अर्थ कहा जु सरस्वती लक्ष्मी एकत्र है॥
श्लोक॥ यदि हरिस्मरणे सरसं मनो य
दि विलास कलासु कुतूहलं॥ मधुर को
मल कांत पदावली॥ शृणु यदा जयदेव
सरस्वती॥ श्लो॥ अर्थ॥ कवि अब आपने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्रंथकौप्रयोजनकार्यकहतुहै॥अहो
कमलनकजु॥हरिजीकेस्मरणविषैतु(
मारौचित्तसरसहै॥अरुश्रीकृष्णजूकी
विलासकलातिनहीजांनिवेकीइछा
हैतौजयदेवकीवांनीसुनऊं॥सोकैसी
हैवांनी॥सरसहैअर्थजाकौ॥कोमल
हैपदजावांनीमैं॥ताहीतैंमनहीहरतु
है॥श्लोक॥वाचःपल्लवयत्युमापतिध
रःसंदर्भशुद्धिंगिरां॥जानीतेजयदेवए
वशरणंश्लाघ्योदुरूहद्रुतौ॥शृंगारोत्त
रसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्द्धनः॥स्प
र्द्धीकोपिनविश्रुतःश्रुतिधरःधोयी(
कविक्ष्मापतिः॥४॥अर्थ॥अबकवि(

औरश्रृंगारग्रंथनतैंआपनेंग्रंथमैंबहु
तगुनप्रगटकरतुहै॥सोईकहतुहै॥उमा
पतिधरनामकवि॥तिवचविस्तारबहु
तकरतुहै॥परिऔरश्रृंगारकेगुनकछू
नहीजांनत॥औरगोवर्धनाचार्यनामऐ
तुकवि॥तिश्रृंगारकरतुहै॥तिनकीबरा
बरिकोऊसुनियतुनांही॥परिमेरेग्रंथ
मैंश्रृंगारपुन्यऔरगुनहै॥तातैंगोवर्द्ध
नाचार्यकेग्रंथमेरेग्रंथहिनपूजै॥अरु
धोयीकविनामजुकवि॥तेश्रुतिधरक
हियतुहैं॥औरबडेकविहैं॥परिअर्थेउ
नपैंनांही॥तातैंअर्थकीसबदकीबात
हौंहीजानतहौं॥अरुग्रंथकाहूपैंन

गीत
३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

कह्योजुइताहिहौबेगिहीकहतहौं
तातैंसबकविनकौंसरणमेरौईग्रंथ
है॥यातैंतिश्रीजयदेवजीआपनेंग्रं
थकेगुनप्रगटकरतभये॥५॥मालव
राग॥इकतालीताल॥श्लोक॥प्रलय
पयोधिजलेधृतवानसिवेदं॥विहित
वहित्रचरित्रमखेदं॥केशवधृतमीन
शरीर॥जयजगदीशहरे॥१॥अर्थ॥
अहोकेसवजूवेदउधरिबेकौंधर्‍यो
हैमीनरूपजिन॥ऐसेअहोजगदीसज
गतनकेदुखहरनहारतुमारीजयहोउ
कैसेहौतुम॥प्रलयकालकौजुसमुद्र
ताविषैमग्नहोतहैजुवेदतिन्हैंबिना

कष्टहीउधरतहौ॥सुकैसेंप्रलयसमुद्र ४
विषैवेदतिन्हैंउधरिबेकौंजिन्हौंनेंचरित्र ज
करतहौं॥सुकहा॥जैसेंऔरसमुद्रमें
बूडैताकौंजिहाजसरणहोइ॥तैसेंप्र
लयसमुद्रमेंवेदनकौंसरणभये॥श्लो
क॥क्षितिरतिविपुलतरेवतिष्ठतिपृ
ष्ठे॥धरणिधरणकणचक्रगरिष्ठे॥के
शवधृतकच्छपरूप॥जयजगदीश
हरे॥२॥अर्थ॥अहोकेशवधर्‍योहै
कच्छपरूपजिन॥ऐसेहोजगदीश
तुमजयजुक्तहोउ॥तुमकैसेहो॥जि
नकीअतिविशालपृष्ठिपरिभूमिकौं
धरतहौ॥सोकैसीहैपृष्ठि॥सर्वदाभू

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बौ तिन करि छलसौ है बलि राजा जिन ॥
अरु त्रितिचरन करि ब्रह्मांड भेदि करि प
रम पवित्र गंगाजी जिन प्रगट करी है ॥ अथ
सौ है त्रैलोक्य जिन ॥ श्लोकः ॥ क्षत्रियरुधि
रमये जगदपगतपापं ॥ स्नपयसि पयसि शम
मितभवतापं ॥ केशव धृत भृगुपति रू
प ॥ जय जगदीश हरे ॥ अर्थ ॥ धृत धस्यौ
है परसराम रूप जिन ॥ ऐसे केशव जु तु
म ॥ क्षत्रियन को रुधिर जु जल ता बीषे
सकल विश्वहि स्नान करावत हो ॥ अरु
पाप रहित करत हो ॥ अरु संसार जनित
संताप हरि करत हो ॥ ऐसे जगदीस तु
म कौं जय हो ॥ ६ ॥ श्लोकः ॥ वितरसि दिक्षु

रणे कमनीयं ॥ दशमुखमौलिबलिं रमणीयं
॥ केशव धृत रामशरीर ॥ जय जगदीश
हरे ॥ अर्थ ॥ धृत धस्यौ है रामचंद्र शरी
र जिन ॥ ऐसे केशवजी संग्राम बिषै ॥ इं
द्र आदि दिगपालन कौं तुम कल्याण बां
टत हो ॥ अरु रावण के दश मस्तक तिन
पिरांम दशहूं दिशान कौं बलि देत हो ॥ ऐ
से जगदीशजी तुम जय जुक्त हो ॥ ७ ॥ श्लोकः ॥ व
हसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं ॥ ह
लहति भीति मिलित यमुनाभं ॥ केशव धृ
त हलधर रूप ॥ जय जगदीश हरे ॥ अर्थ ॥
॥ धृत धस्यौ है बलभद्र रूप जिन ॥ ऐसे
प्रभु जु तुम ॥ उज्जल शरीर बिषै बस्त्र हि ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तहै।सोबस्त्रकैसेहैं।जिनकौबरणमे
घसमानहै।बकारिकैसेहैंबस्त्र।हलकेम
यतेप्रापतलईजुजमुनां।तासमाननीलहै
ऐसेजुहलधररूपजगदीशतुमारैजयहो
हु।श्लोक॥निंदसियज्ञविधेरहहश्रु
तिजातं।सदयहृदयदर्शितपशुघातं॥
केशवधृतबुधशरीरजयजगदीशहरे
॥९॥अर्थ॥अहोबुधअवतार।परमदया
लहैअंतकरणहैजिनकौ।ऐसेतुमजग्य
कीविधिजामैंहैऐसोजुबेदताहिनिंदतु
हे।सोकैसोहैजग्यजामेंहैपशुघातहोत
होतहै।ऐसोबुधरूपजगदीशजीतुमारै
जयहोऊ।श्लोक॥म्लेछनिवहनिधनेक

लयसिकरवालं।धूमकेतुमिवकिमपि
करालं।केशवधृतकल्किशरीरजय
जगदीशहरे॥१०॥अर्थ॥धृतधर्योहैक
ल्कीरूपजिन।ऐसेजुतुम।म्लेछनकौ
जुसमूह।ताहिमारिबेकौषडगधार्यौ
है।सोकैसोहैषडगधूमकेतुजुहैअग्नि
।तासमानभयानकहैसोकहातुम॥अ
स्त्रिकीम्लेछननासकरतुहै।ऐसेकल्कि
रूपजुजगदीशतेजयजुक्तहोऊ।श्लो
क॥श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं
शृणुसुखदंशुभदंभवसारं।केशवधृ
तदशविधिरूप।जयजगदीशहरे॥११॥
[illegible]॥धृतधर्योहैदशविधिरूपजिन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत॰ ७

यजुक्त होऊ श्रीजयदेव कहतु है॥ यद
नुमेरौ ग्रंथ ताहि मन करि सुन रू सो के सो है
ग्रंथ मनोहर है॥ अरु सुषदायक है॥ अ
कल्याणकारी है॥ अरु संसार को सार है
॥१॥ प्रथम अष्टपदी समाप्तं॥ श्लोक॥
वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बि
भ्रते दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रं
क्षयं कुर्वते॥ पौलस्त्यं जयते हलं कल
यते कारुण्यमातन्वते॥ म्लेच्छान मूर्छ
यते दशाकृतकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः
॥१॥ अर्थ॥ अब पाछिली अष्टपदी को
अर्थ या श्लोक करि कहतु हैं॥ ऐसे तुम्ही
कृष्ण जू तिन कौं मेरौ नमस्कार है॥ सो कै

से है॥ मीन रूप धरि जिन वेद उधारे हैं॥ ब
हुरि कूर्म रूप करि जगत संसार हि धरत
हैं॥ बहुरी बाराह रूप धरि भूमि कौ उधा
र करत हैं॥ बहुरि नरसिंघ रूप धरि हि
रणाकस्यप को बध करतु है॥ बहुरि बा
मन रूप धरि बलि कौं छलतु है॥ बहुरि प न
रशुराम रूप धरि क्षत्रियन को नाश क
रत भये॥ बहुरि रामचंद्र रूप करि राव
ण को बध करत भये॥ बहुरि बलभद्र
रूप धरि हल आयुध जिन धरयो है॥ ब
हुरि बुद्ध रूप धरि दया बिस्तारत भये।
बहुरि कल्की रूप धरि म्लेच्छन को नाश
करत भये॥ यां भांति धरे है दश रूप जि

गीत०
८

नाम्कैसेश्रीकृष्णजीजयजुक्तहोऊ॥
गूजरीरागप्रतिमठताले॥श्रितकम
लाकुचमंडलधृतकुंडलये॥कलित
ललितबनमाला॥जयजयदेवहरे
॥२॥अर्थ॥अहोदेवपरमेश्वरतुम
जयजुक्तहोऊ॥तुमकैसेहौ॥आश्र
यहैलक्ष्मीजीकैकुचमंडलजिनकैं
बहुरिकैसेहौतुमधृतधरेहैंमकरा
कृतकुंडलजिन॥बहुरिकैसेहौ॥
कलितपहरिहैललितसुंदरबन
मालाजिन॥श्लोक॥दिनमणिमंडल
मंडनभवखंडनए॥मुनिजनमानस
हंसजयजयदेवहरा॥३॥अर्थ॥अ

होदेवहरितुमजययुक्तहोऊ॥कैसे
होतुम॥दिनमणिमंडनुसूर्यमंडल
ताकेमंडनआभूषनहौ॥बहुरिकैसे
हौ॥भवजुजन्मताकेखंडनहौ॥बहुरि
कैसेहौमुनिजनजुरिषीश्वरतिन
कोजुहृदयमानसरताविषेहंस
हौ॥श्लोक॥कालियविषधरगंजन
जनरंजनए॥यदुकुलनलिनदिने
शजयजयदेवहरे॥अर्थ॥अहोप्र
भुतुमजययुक्तहोऊ॥तुकैसेहौतुम
कालीयसर्पकेजीतनहारहौ॥बहु
रिकैसेहौ॥जनजुहैलोकतिनकौरं
जनहारहौ॥सुषदायकहौ॥बहुरि

गीत०
५

कैसे हौ तुम॥ ज्यादव बंसोई जु नलि
न कमल॥ ताके दिनेश सूर्य हौ॥ श्लो
का॥ श्रमल कमल दल लोचन भव मो
चन ए॥ त्रिभुवन भुवन निधांन जय ज
य देव हरे॥ अर्थ॥ अहो देव तुम जय जु
क्त हो॥ सो कैसे हौ तुम॥ निर्मल जो
है कमल दल ता समान हैं नेत्र जिन
को॥ बहुरि कैसे हौ तुम॥ भव कहिये
संसार ताके मोचन हौ॥ बहुरि कैसे
हौ॥ त्रिभुवन जु है त्रिभुवन जु है त्रिलो
क सोई जु भुवन घर ताके निधांन नि
धि हौ॥ श्लोक॥ मधु मुर नरक बिनाश
न गरुडासन ए॥ सुरकुल केलि निदां

न जय जय देव हरे॥ ६॥ अर्थ॥ अहो प्र
भु तुम जय युक्त हो॥ सो कैसे हौ तुम
मधु दैत्य मुर दैत्य नरकासुर इन के मा
रन हार हौ॥ बहुरि कैसे हौ गरुड है आ
सन जिन को॥ बहुरि कैसे हौ॥ सुरकुल
जु है देव कुल॥ तिन की जु केलि क्रीडा
ताके निधांन कारण हौ॥ श्लोक॥ ज
न सुताकृत भूषण ए॥ जित दूषण ए॥ स
मर समित दस कंठ॥ जय जय देव हरे॥
७॥ अर्थ॥ अहो देव तुम जय युक्त हो॥
कैसे हौ तुम॥ जनक सुता जु सीता जी॥
तिन को कृत कियो हो आभूषण जिन
बहुरि कैसे हौ॥ समर संग्राम बिषे स

मितमाथ्योहैदशाकंठरांवणाजिन॥
॥श्लोक॥ अभिनवजलधरसुंदरधृत
मंदरए॥ श्रीमुषचंदचकोरजयजय
देवहरे॥८॥ अर्थ॥ अहोप्रभुतुमज
यजुक्त होऊ॥ सोकैसो हो तुम॥ अभि
नवनूतनजुहैजलधरमेघ॥ तैसोसुं
दरहैबरणजिनकौ॥ बकुरिकैसेहैं॥
॥धृतधस्यौहैमंदरपर्बतजिन॥ बकु
रिकैसेहौ॥ श्रीजुलक्ष्मीतिनकोजु
मुषचंमा॥ तिनकेचकोरहौ॥ श्लोक॥
॥तवचरणोप्रणताबयमितिभावए
कुरुकुशलंप्रणतेषु॥ जयजयदेव
हरे॥९॥ अर्थ॥ श्रीजयदेवकहतु

हौ॥ अहोप्रभुतुमारेचरननिकौंनमस्का
रकरतहौं॥ ऐसेजुसरणआएजननति
नकौंकुसलकरऊ॥ अरुजयजुकहे
ऊ॥ श्लोक॥ श्रीजयदेवकबिरिदकर
तेमुदमं॥ मंगलमुंजुलगीतजयजय
देवहरे॥१०॥ अर्थ॥ अहोप्रभुजयदेव
कबिकरिकीनेंजुहैयहगीत॥ सोसब
लोकनिकौंकल्याणकारीहौ॥ अरुआ
नंदकरतहौ॥११॥ इतीअष्टपदीस
माप्तं॥ श्लोक॥ पद्मापयोधरतटीपरि
रंभलग्न॥ काश्मीरमुद्रितमुरोमधुसूद
नस्य॥ व्यक्तानुरागमिवखेलदनंगखेद
स्वेदांबुपूरमनुपूरयतुप्रियंबः॥१॥ अ

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

र्थ॥ त्र्प्रंबकबिकामोदीपनहैतातैंब
संतरितिबर्ननकियोचाहतहै॥मक्त
नकौंत्र्प्रासीरबाददेतुहै॥मधुसूदन
जीकौबक्षस्थलतुमारोत्र्प्रभिलाषपू
रणकरौ॥सोकैसौहैबक्षस्थल॥पद्मानु
लक्ष्मीतिनकौजुत्र्प्रालिंगनतातैंला
ग्योजुकुंकमताकरिचिन्हितहै॥सो
कुंकुमकरित्र्प्रारक्तनांही॥मानकंत्र्प्र
नुरागप्रीतिप्रगटभईहै॥त्र्प्रवरुएकां
तक्रीडातैंउपजेजुश्रमकण॥ताकौहै
प्रवाहजाबिषे॥श्लोक॥वसंतेवासंति
कुसुमसुकुमारैरवयवै॥र्भ्रमंतीकांता
रबहुविरहतकृष्णानुसारणां॥त्र्प्रमं

दंकंदर्पज्वरजनितचिंताकुलतया॥
वलद्वांधाराधांसरसमिदमूचेसह
चरी॥ ॥त्र्प्रर्थ॥कोउएकजुराधाजू
कीसषीसोबसंतबिषेराधाजूसौंरस
पूर्वककहतभई॥कैसीहैराधाजू॥
माधवीकेजुपुहुपतैसेकोमलहैंत्र्प्रं
गजिनके॥बहुरिकैसीहैराधाजी॥ब
नबिषेफिरतहै॥बहुरिकैसीहैराधा
जीहतीसोंबारबारश्रीकृष्णजीसोंमि
लनकोजतनकरतुहै॥बहुरिकैसी
हैराधाजी॥वढतउपजीजुकामपीडा
॥तातैंत्र्प्रतित्र्प्राकुलभईहै॥वसंतराग
५ ताला॥ताल॥ललितलवंगलताप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत०
१२

रिश्रीलन॥कोमलमलयसमीरे॥म
धुकरनिकरकरंबितकोकिलकू
जितकुंजकुटीरे॥बिहरतिहरिरिह
सरसबसंते॥नृततजुवतिजनेन
समंसषी॥बिरहतिजनस्यदुरंते
॥३॥अर्थ॥एकसषीराधाजूसोंक
हतुहै॥श्रीराधाश्रीकृष्णजीसर
सजुहैबसंतताबिषैबिहारक्रीडा
करतुहै॥अरुजुवतिनकेसमूह
मिलिनृत्यकरतुहै॥जुकैसोहैबसं
त॥बिरहीजनकौंदुषदायकहै॥ब
हुरिकैसोहैबसंत॥ललितमनोह
रजुहैलवंगनकीलतातिनकौंजु

परिश्रीलनमिलिबो॥ताहितैंपरम
सुषदायकबहुतहैमलयपर्वतको
बायुताबिषै॥बहुरिकैसोहैबसंत
भ्रमरनकेजुसमूहतातैंमिलिजुको
किलतिनकौंजुकूजितशब्द॥ताक
रिसोभितहैकुंजताबिषै॥श्लोक॥उ
न्मदमदनमनोरथपथिकबधूजन
जनितबिलापे॥अलिकुलसंकुल
कुसमसमूह॥निराकुलबकुलक
लापे॥४॥अर्थ॥बहुरिकैसोहैबसंत
अधिकउपज्योहैमदनकोअभिलाष
जिनकेऐसीपथिकबधूजनबिरह
नी॥तिनकरिजनितउपज्योहैबिला

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रिश्रीलन ॥ कोमलमलयसमीरे ॥ म
धुकरनिकरकरंबितकोकिलकू
जितकुंजकुटीरे ॥ बिहरतिहरिरिह
सरसबसंते ॥ नृततजुवतिजनेन
समंसषी ॥ बिरहतिजनस्यदुरंते
॥ ३ ॥ अर्थ ॥ एकसषीराधाजूसौंक
हतुहै ॥ श्रीराधाश्रीकृष्णजीसर
सजुहैबंसततातिषैबिहारक्रीडा
करतुहै ॥ अरुजुवतिनकेसमूह
मिलिनृत्यकरतुहै ॥ तुकैसोहैबसं
त ॥ बिरहीजनकौंदुषदायकहै ॥ ब
ऊरिकैसोहैवसंत ॥ ललितमनोह
रजुहैलवंगनकीलतातिनकोजु

परिशीलनमिलिबो ॥ ताहितैंपरम
सुषदायकवऊतहैमलयपर्वतकै
बायुजाबिषै ॥ बऊरिकैसोहैबसंत
भ्रमरनकेजुसमूहतातैंमिलिजुको
किलतिनकोजुकूजितशब्द ॥ ताक
रिसोभितहैकुंजजाबिषै ॥ ७ ॥ का ॥ उ
न्मदमदनमनोरथपथिकबधूजन
जनितबिलापे ॥ अलिकुलसंकुल
कुसमसमूह ॥ निराकुलबकुलक
लापे ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ बऊरिकैसौहैबसंत
अधिकउपज्योहैमदनकोअभिलाष
जिनकैऐसीपथिकबधूजनाबिरह
नी ॥ तिनकरिजनितउपज्योहैबिला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत० ११

पताबिषै॥बकुरिकैसैहैबसंत॥अ
लिकुलजुहैभ्रमरसमूह॥ताकरि
म्राम्रजुहैकुसमसमूह॥तिनकरि
सोभितहैबौलसरीकेछ्लताबिषै
॥भ्रंताका॥मृगमदसौरभरभसब
संतेबंदनचंदनमालतमालै॥जुव
तीजनहृदयबिदारणमनसिज
नषरुचिकिंसुकजालै॥ ॥अर्थ॥ब
कुरिकैसोहैबसंत॥मृगमदजुहैक
स्तूरी॥ताकौजुसौरभसुगंध॥ताकौ
जुरसअधिकताकेबसकरण॥हार
जुहैनयेतमालपत्रतिनकरिसोभि
तहै॥सोकहानूतनजुतमालपत्रते

तेकस्तूरीहिजीततहै॥बकुरिकैसो
हैबसंत॥जुवतीजननजुहैतरुनीजन
तिनकेहृदयकौजुबिदारनकत्तौमं
नसिजकामकेनषनिअनुसरतहै॥
किंसुकजालकेसूकेफूलजाबिषै॥
भ्रंता का॥मदनमहीपतिकनकदंड
रुचिकेसरकुसमबिकासे॥मिलित
सिलीमुषपाटलपटलकृत॥समरस
तूणबिलासे॥६॥अर्थ॥बकुरिकै
सोहैबसंत॥मदनमहीपतिजुराजा
ताकौसुबर्नकौहैदंडजाकौ॥अैसौ
जुछत्रतासमानदेषियतुहैनागके
सरकेफूलजाबिषै॥सोकहा॥ना

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत०
१४

गकेआरकेफूलनहोइ॥ कामराज
कौछत्रहैमानौं॥ बकुरिकैसोहैब
संतातैछेहैंचमरजिनपरसैसेजु
पाडलकेफूल॥ तिनकरिकीनौंहै
कामकेतरकसकौबिलासता॥ बि
षैसोकहा॥ पाडलकेफूलनहोइ॥
कामकौतरकसमानौं॥ छंदा॥ बि
गलितलजितजगदवलोकनतह
णकरुणछत्तहासै॥ बिरहिनेकौं
ननकुंतमुखोछति॥ केतुकिदंतुरि
तासै॥ ७॥ श्लोकः॥ अर्थ॥ बकुरिकै
सोहैबसंतासपिलहै औगजिनके
ताहितैंगइहैलाजजिनकी॥ अब

लोकतिनकोजुदेषिबौताकरित
रुणमनुष्यनिकीनौंहै॥ करुणछ
दकेफूलनकेमिसकरिजाबिषैसु
कहा॥ करुणछदनांहीफूल्यौ॥ छ
दमनुष्यनदेषितरुणहसतहैमां
नूं॥ करुणकेफूलस्वेतहै॥ अरुहा
सीपूनिस्वेतबरणियतुहै॥ तातैंयह
उपमांदीनी॥ बकुरिकैसोहैबसंता॥ वि
योगीजुपुरुषतिनकोजुनिछंतना
मारिबौ॥ ताकेकारणकुंतजुहैबरा
छताकेफलसमांनदेषियतुहैकेतु
केफूलजाविषै॥ सोकहाकेतकीके
फूलनहोइ॥ बिरहीजनमारबेकौं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत० कामदेवकोबरछाहैमांनूं॥टीका॥
२५ माधविकापरिमलललितेनवमा
लतिजातिसुगंधौ॥मुनिमनसामपि
मोहनकारणे॥तरुणाकारुणबं
धौ॥८॥अर्थ॥बकुरिकैसोहैबसंत
माधवीकेजुफूलतिनकौजुपरिमल
क लतिनैंरिललितमनोहरहै॥बकुर
रिकैसौहैबसंत॥मालतीकेफूल
अरुजाईकेफूलतिनकरिसुगंधहै
॥बकुरिकैसोहैबसंत॥रिषीस्वरन
हूंकेजुमनतिनहूंकौंकामउपजाव
तहै॥बकुरिकैसोहैबसंत.तरुनपु
रुषनकौसहजमित्रहै॥टीका॥स्फु

रिदतिमुक्तलतापरिरंभणे॥मुकलि
तपुलकतसूतेौ॥वृंदावनविपनेपरि
सरपरिगतजमुनांजलपूते॥९॥अ
र्थ॥बकुरिकैसोहैबसंत॥चंचलजुहै
तहैमाधवीकीलता ताकौजुपरिरंभ
ण आलिंगन॥तातैंपुष्पितफूल्योहै
आमजाविषै॥सुफूलनहोइलताकै
आलिंनतैं रोमांचितहैमानैं॥श्रीराधा
जीसोंसषीकहतहै॥अहोराधाअसो
बसंतरितुपाइकरि॥श्रीकृष्णजीवृंदा
बनकेकुंजनविषैक्रीडाकरतहै॥सो
कैसोहैकुंजनिकटआश्रम्यौजुजमु
नांजल॥ताकरिपवित्रहै॥टीका॥श्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत० जयदेवकबिरिदमुदयति॥हरिस्म
२६ रणस्मृतिसारं॥सरसबसंतसमय
बरनं॥मनुगतमदनबिकारं॥१०॥
अर्थ॥श्रीजयदेवकबिकौजुयहगी
तसोउदकौंप्रापतहोतहै॥सोकैसो
हैगीतश्रीकृष्णजीकेचरणकमल
तिनकौजुस्मरणसोईकह्योहैसार
जाबिषै॥औरकैसोहैगीत॥अतिस
रजुबसंतरितु॥ताबिषेकियोजुबन
बर्नन॥तातैंप्रगटहोतहैकामबिला
स॥ततीयअष्टपदीसमाप्ता॥श्लोक॥
दरबिदलितमल्लीचंचलसरागा॥उ
गटितपटबासैर्बासयन्काननानि॥

इहहिदहतिचेतःकेतुकीगंधबंधु॥
प्रसरदसमबाणंप्राणवद्गंधवाहः॥
॥२॥अर्थ॥बसंतकौजुबायुसोबिरही
नकेचित्तकौंहरतुहै॥सोकहाकरतुहै
फूलीजुमल्लीमालतीताकौजुपराग॥
सोईभयोअबीर॥ताकरिकानननकौब
नताहिसुगंधकरतुहै॥औरकैसोहैबा
यु॥केतुकीकीगंधसहितहै॥बहुरिकै
सोहैबायु॥परसतहैजुकामबाणति
नकौप्राणजीवहैमानौं॥श्लोक॥उ
न्मीलन्मधुगंधलुब्धमधुपव्याधूतचूतां
कुर॥क्रीडत्कोकिलकाकलीकल
रवैरुद्गीर्णकर्णज्वराः॥नीयंतेपथि

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कैःकथंकथमपिध्यानावधानक्षणः
प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैर
मीवासराः॥३॥अर्थ॥बसतकेजोदि
नतेकामोदीपकहैं॥सोईकहतहैं॥
बसंतकेजुदिन॥तिनबिषेपरदेसस्थि
तजेलोक॥तेकैसेंहंकरिदुःषकरि
काटतहैं॥सोकैसेंहैंबसंतदिन॥अग
टलयोजुपुष्परस॥तासोंलुब्धजोभ्रम
र॥तिनकरिकंपितजोआंबकीमंजरी
तिनबिषेक्रीडाकरतहैंजुकोकिला
तिनकोजुमधुरशब्द॥तिनकरिबढ
तउपजातहैंदुःषजिनदिवसनबिषे
औरकैसेहैंपथिकजनन॥ध्यानकरि

पायोजुप्रियासंगतातेंउपजतरसो
ल्लासजिनकौ॥श्लोक॥अनेकनारी
परिरंभसंभ्रमस्फुरन्मनोहारिविला
सलालसंमुरारिमारादुपदर्शयंत्यसौ
सखीसमक्षंपुनराहराधिकां॥४॥अर्थ॥
बहुरिसषीश्रीराधाजीकौंश्रीकृष्ण
हिसमीपदिषावतिकहतभईकैसे
हैंश्रीकृष्ण॥अनेकजोनारीतिनकौ
जुआलिंगन॥तातेंउपजतजुआनंद
ताकरिसोभायमानजुविलासताबि
षेउत्कंठाहैजिनकी॥रामकलीरागा॥
जतितालेन॥श्लोक॥चंदनचर्चितनी
लकलेवर॥पीतबसनबनमाली॥के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत० लिचलमनिकुंडलमंडितागंडयुगस्मि
२८ तसाली॥हरिरिहमुग्धवधूनिकरेवि
लासनिविलसतिकेलिपरे॥४॥अ
र्थ॥सषीकहतहै॥श्रीराधा॥श्रैसोऋ
तुसंततताबिषैसुंदरीकेजोमूहतेक्री
डाकरतहै॥अरुतिनहिंमिलिश्रीकृ
ष्णजीक्रीडाकरतहै॥सोकैसैहैंश्रीकृ
ष्णजी॥चंदनकरिचर्चितहैंस्यामशरी
रजीनको॥अरुपीतहैंबसनजिनकौं॥
अरुबनमालापहिरैंहैं॥बहुरिकैसे
हैंश्रीकृष्णजी॥क्रीडाकरतचपलजे
येजुमणिजटितकुंडल॥तिनकरिसो
भापावतहैंजोकपोलतिनकरिअ

रुमंदहास्यजोमुसकांनिताकरिसो
भितहै॥श्लोक॥पीनपयोधरभारभ
रेण॥हरिपरिरभ्यसरागं॥गोपवधू
रनुगायतिकाचिदुदंचितपंचमरा
गं॥५॥अर्थ॥सोगोपीनकीक्रीडाबर
नतहै॥राधाजीकीसषीराधाजीसों
सोईकहतहै॥सोकहाकरिकैं॥पीन
कहैजुबडेपयोधरस्तनतिनकौभ
रा॥ताकरिजुश्रीहरिकौंप्रीतिस
हितआलिंगनदेकरिआनंदमांन
तहै॥औरपंचमरागगावतहै॥श्लो
क॥कापिविलासबिलोचन॥खेलन
जनितमनोजं॥ध्यायतिमुग्धवधूर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत० षिकं मधुसूदनसरोजं ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ स
१९ षी कहत है। श्रीराधा कोऊ एक जो
गोपिका ॥ सो मधुसूदन जु है श्रीक
ष्णजी ॥ तिनकौ जु मुषकमल ॥ बिला
सपूर्बक बिलोलन ऐसे जु बिलोचन ने
त्र तिनकौ पेल जु कटाछि चितवनि ॥
ताकरि जनित उपज्यौ है मनोज काम
जा मुषकमल करि ॥ श्लोक ॥ करतल
तालतरलबलियाबलि। कलितजुक
लस्वरबंसे ॥ रासरसे सहनृत्यपराह
रिणा युवतिप्रसंसे ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ बऊरि
सषी कहत है। श्रीराधा कोऊ एका
जो गोपी सो हरिजू करि सराही ॥ सो

कैसी है गोपी ॥ रासकौतुरसता बिषै
श्रीकृष्णजी के संग नृत्य करत है ॥ सो
कैसो है नृत्य ॥ हस्त की जु ताली तिन
करि दीनैं जु चंचलपुटाह्नित ताल ॥ तिन
के हेत चंचल नलये जु कंकण ॥ तिनक
रि मधुर लयो जु गुणत्कार ॥ ताकरि
सोभित है मुरली को शाह मिल्यौ जा
नृत्य बिषै ॥ श्लोक ॥ कापि कपोलत
ले मिलिता लपितुं किमपि श्रुतिमू
ले ॥ चारु चुचुंब नितंबवती दयितं पुल
कैरनुकूले ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ सषी कहत है
श्रीराधा कोऊ एक जो गोपी ॥ सो
श्रीकृष्णजी के कपोल बिषै चुंबन देत

गीत० नई॥ सोकैसौहै कपोल॥ सालिकाली
२० वकेजुरोमांच॥ तिनकरिअनुकूलभ
योहै॥ कैसोहैश्रीकृष्णजी॥ कछूएक
रहसिकीबाततादिकहिबेकौंकर्ण
कीनिटप्रापतभयेहैं॥ श्लोक॥ श्लि
ष्यतिकामपिचुंबतिकामपि॥ काम
पिरमयतिरामा॥ पश्यतसस्मितसस्मि
तचारुपरामपरमनुगछतिवामा॥
११॥ अर्थ॥ यापदकरिश्रीकृष्णजीकी
बक्रतबलनताबर्णियतुहै॥ सो दू
सषीराधाजीसौंकहतहै॥ कोऊएक
जोगोपीताहिश्रीकृष्णजीआलिंग
नदेतहै॥ काहूकौंचुंबनदेतहै॥ का

हूकौंचुंबनदेतहै॥ काहूकौंरमावतहै
काहूकौंदेषिमुसकाइकटाक्षिकरि
चितवतहै॥ बहुरिकाहूकैसंगिगविव
लतहै॥ ऐसीभांतिक्रीडाकरतहै॥ श्लो
क॥ केलिकलाकुतकेनचकाचिदमु
यमुनाजलकूले॥ मंजुलवंजुलकुंज
गतंविचकर्षकरेणदुकूले॥ १२॥ अ
र्थ॥ सषीकहतहैअहोराधा॥ कोऊए
कगोपीएकांतक्रीडाकेनिमंतिजमुनां
ताबिषेजुबेतकौवना॥ तहांप्रापतभये
जुश्रीकृष्णजीतिनहिंपीतांबरपकरि
षेंचतभई॥ श्लोक॥ श्रीजयदेवभणि
तमिदमद्भुत॥ केशवकेलिरहस्यं॥ वि

पनबिनोदकलाबलितं॥बितनोतुसु
लानिजसर्स्यां॥२४॥अर्थ॥श्रीजयदेव
कबिकरिकहीजुश्रीकृष्णकेसवनी(
कीएकांतक्रीडा॥सोसुनजुहैकल्या
णतिनहिंकरहु॥सोकैसीक्रीडाहै॥
परमअद्भुतहै॥अरुबनबिषैकेलिक
लाजुचातुरीतासहितहै॥अरुजाके
सुनतजसहोतहै॥चतुर्थअष्टपदीस
माप्त॥४॥श्लोक॥विश्वेषामनुरंजने
नयननयनानंदमिंदीवर॥श्रेणीश्याम
लकोमलैरुपनयन्नंगैरनंगोत्सवः॥
स्वछंदंब्रजसुंदरीभिरभितःप्रत्यंग
मालिंगितः॥शृंगारःसखिमूर्त्तिमा(

निवमधौमुग्धोहरिःक्रीडति॥अर्थ
सखीकहतहै॥अरीराधा॥मनोहर
जोहरि॥तेबसंतबिषैक्रीडाकरतहैं
हरिकैसेहैं॥मूर्त्तिवंतशृंगारहैं॥मांन
डं॥सोकहाकरतुहै॥सबगोपीनकेम
नकोंअनुरंजकबचननिकरिआनं(
ददेतहै॥अरुनीलकमलसामान॥
जोअंगतिनकरिकामउछबाहिब(
धावतक्रीडतहै॥श्लोक॥अद्युत्संग
बसद्भुजंगकवलक्लेशादिवा॥प्राले
यप्लावनेछयानुसरतिश्रीखंडसैला
निलः॥किंचित्स्निग्धरसालमौलिमुकु(
लान्यालोक्यहर्षोदया॥उन्मीलंति

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत॰
२२

कुहूरितिकलोत्तिलाः पिकानां गिरः॥
२॥ अर्थ॥ अब पाछैं जु कह्यौ बसंत रि
तु॥ ताहि श्री राधाजी के आगैं सषी ब
रणत है॥ अरि राधा देषि आज॥ मल
यपर्बततैं निकट बसंत है जे सर्पे ति
न करि कीनौं है पान जाकौ॥ ता हीतैं
नयौ जु संताप॥ ताहि दूरि करिबे कौं
मलयबांयु कैलासपर्बत के हिमसैं त
रिबे की इछा करि आवत है॥ अर्थ क
हा जु त्रिबिधि पवन बहत है॥ और अ
ति सुंदर जु आंब के मौर॥ तिन हि देषि
नयौ है अधिक हर्ष जिनकौं॥ ऐसी जु
कोकिल मधुरता वनी कुहू कुहू।

ऐसो सब्द बोलत है॥ श्लोक॥ रासोल्ला
सभरेण विभ्रमभृतामाभीरवामभ्रुवा
मभ्यर्णे परिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमांधया
राधया॥ साधु त्वद्वचनं सुधामयमिति व्या
हृत्य गीतस्तुतिः॥ आजाऽश्चुंबितः
स्मितमनोहारी हरीः पातु वः॥ ३॥ अर्थ
॥ कबि कथा कौ प्रसंग छोडि करि लोक
न कौं आसीर्बाद देत है॥ श्री कृष्ण तुमा
री रक्षा करो॥ कैसे हैं श्री कृष्णजी॥ रास बि
षै जु उछाह ता मैं गोपीन के समक्ष द्द
आलिंगन दै करि श्री राधाजी कीनौ है
चुंबन जिनकौ॥ बहुरि कैसे हैं श्री कृष्ण
जी॥ मंद हास्य करि मनु हरत है॥ इति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत०
२३

श्रीगीतगोविंदे महाकाव्ये सामोददा
मोदरो नाम प्रथमः सर्गः ॥१॥ श्लोक ॥
विहरति वने राधा साधारणप्रणये हरौ
विगलितनिजोत्कर्षादीर्ष्यावसेन
गतान्यतः ॥ क्वचिदपि लताकुंजे गुंज
न्मधुव्रतमंडलीमुखरशिखरे लीना
दीनाप्युवाच रहः सखी ॥१॥ अर्थ ॥ श्रीरा
धाजी एकांत विषै पक्षा रि सखी सौं क
हत है ॥ सो कैसी है राधा राधाजी सौं श्री
कृष्ण प्रीति सौं समागम मैं करि श्रीकृ
ष्णजी कै बिहार करत नई ॥ जु आपने
सुहाग की हांनि ॥ तातैं खिन्न करि और
रोरपधारी है ॥ ताहीतैं कुंजन मैं ढ़िबै

ठी है ॥ सो कैसो है कुंज ॥ बोलत जो पं
छी अरु गुंजत जो भ्रमर समूह तिन क
रि सोभित है ॥ बहुरि कैसी है राधाजी
नई जु मांनहांनि तातैं अतिदीन भई है
॥ गूजरी राग जति ताल ॥ श्लोक ॥ संचर
दधरसुधामधुरध्वनिमुखरितमोहन
वंसं ॥ चलितदृगंचलचंचलमौलिक
पोलवतंसं ॥ रासे हरिमिह विहितवि
लासं ॥ स्मरति मनो मम कृतपरिहासं ॥
रा॥ ध्रुपद ॥ अर्थ ॥ अब राधाजी एकांत
विषै आपनी सखी सौं कहत है ॥ अरी
सखी अैसे जु हरि ॥ तिन कौं मेरो मन स्म
रत है ॥ सो कैसे हैं हरि ॥ रासक्रीडा बि

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत गीत०
२३ २४

षे कीनें हैं बिलास जिन ॥ बक्र रि हरि
के से हैं ॥ कृत कीनों है परिहास जिन
बक्र रि के से हैं ॥ प्रसरति है अधरामृत
ना विषै ॥ औसो जु मधुर आह्व ॥ ताकरि
बजायो है मोहा ॥ नकारी बंस जिना ॥ ब
क्र रि के से हैं हरि चंचल हो तजु कटाछि
तिन सों मिलें चंचल होत हैं कपाल ॥
चंचल है अवतंस कर्णाभरण जा क
पोल विषै ॥ श्लोक ॥ चंद्रकचारु मयूर
शिखंडक मंडल बलयित केशं ॥ प्रचुर
पुरंदर धनुरनुरंजित ॥ मेदुर मुदिर सुबे
शं ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ बक्र रि के से हैं हरि ॥ अ
ति बिचित्र जो है मयूर चंद्रिका ॥ तिन

को जु मंडल समूह ॥ तिन करि चेष्टित है
केश जिन को ॥ अर्थ यह जु मुकुट पहरैं
है ॥ ताही करि इंद्रधनुष सहित अति
स्निग्ध है जु मेघ ता मान बेषु जिन को ॥
श्लोक ॥ गोपकदंब नितंबवती मुष चुंब
नलंभित लोभं ॥ बंधुजीव मधुराधर पल्ल
वमुल सित सस्मित शोभं ॥ ४ ॥ अर्थ ॥
बक्र रि के से हैं हरि ॥ गोपकदंब जु है ग्वा
लनि के समूह ॥ तिन की जु नितंबवती
स्त्री तिन को जु मुष चुंबन ता विषें बांध्यो
है लोभ जिन ॥ बक्र रि के सौ है ॥ बंधुजीव
है दुपहरिया को फूल ता समान आरक्त
अधर जिन को ॥ बक्र रि के से हैं ॥ प्रगटम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत गीत०
२३ २५

योजुमंदहासताकरिसोभितहै॥
श्लोक॥बिपुलपुलकभुजपल्लववल
यितबल्लवजुवतिसहस्रं॥कर
चरणोरसिमणिगणभूषण॥किर
णबिभिन्नतमिस्रं॥५॥अर्थ॥बकु
रिकैसैहैंहरि॥बौहोतनयोहैरोमां
चजिनविषै॥ऐसेजुहस्तकंवल
तिनकरिआलिंगीहैगोपीसहस्र
जिनकरि॥बकुरिकैसेहैं॥हस्तनि
विषैचरननिविषैपहिरेहैंमणिज
टितआभूषण॥औरहृदयविषैम
णिजटितआभूषणधरेहैजिन॥ति
नकीजुकांतिताकरिहरिकीनोंहै

अंधकारजिन॥श्लोक॥जलदपट
लचलदिंदुविनंदक॥चंदनतिलक
ललाटं॥पीनपयोधरपरिसरमर्द
न॥निर्दयहृदयकपाटं॥६॥अर्थ॥
बकुरिकैसेहैंहरि॥जलदपटलजुहै
मेघसमूहताविषैप्राप्तजुहैचंद्रमा॥
ताकीशोभाताकोजीतनहारऐसोजुसे
तचंदनताकोतिलकशोभितहैलला
टविषैजिनकै॥बकुरिकैसेहैंहरि॥
गोपिकानिकेअतिस्थूलजुस्तन॥ति
नकेपरसपर्शमर्दनगाढआलिंगन
दतहैं॥निर्दयहैदयारहितहृदयजि
नकौ॥श्लोक॥मणिमयमकरमनोह

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत०
२६

रकुंडल॥मंडितगंडमुदारं॥पीतवसन
मनुगतमुनिमनुज॥सुरासुरवनपरि
वारं॥३॥अर्थ॥वज्रारिकेसेहैंहरि॥म
णिमयजुमकराकृतकुंडल॥तिनक
रिशोभितहैंसुंदरकपोलजिनको॥व
ज्रारिकेसेहैहरि॥पितहैवस्त्रजिनकैं॥
वज्रारिकेसेहैंहरि॥अनुगतसेवाकर
तहैं॥रिषीश्वरअरुमनुष्य॥सुरकहियै
देवता॥असुरदैत्य॥तेईहैंपरिवारसेव
कजिनकैं॥॥श्लोक॥विपदकदंबत
लेमिलितं॥कलिकलुषभयंसमयंतं
मामपिकिमपितरंगअनंगा॥दृशामन
सारमयंतं॥४॥अर्थ॥वज्रारिकेसेहैंह

विसदनिर्मलजुहैकदंबताकेतलेवैठे
हैं॥वज्रारिकेसेहैंहरि॥कलिजुगसत
जुहै॥पापताहिहरिकरतहै॥वज्रारि
केसेहैंहरि॥राधाजीकहतहै॥अरीस
खीमोहूकोंअतिअद्भुतप्रगटहोतहै
कामजातें॥ऐसीजुदृष्टिअरुमनता
करिरमावतहैं॥श्लोक॥श्रीजयदेवभ
णितमतिसुंदर॥मोहनमधुरिपुरूपं॥ह
रिचरणस्मरणप्रतिसंप्रति॥पुन्यवता
मनुरूपं॥५॥अर्थ॥कहतहैश्रीजयदे
वकारिकह्योजुयहगीत॥सोनकनिकों
श्रीकृष्णचरणस्मरणकरायवेकोंजो
ग्यहै॥होऊ॥सोकैसोहैगीत॥अतिसुं

हरहै॥ बकुरिके सोहै परममनोहरहै
बकुरिके सोहै॥ मधुरिपु जु श्री कृष्णजी
को रूप बर्नन है जा बिषै॥ पंचमअष्ट
पदी समाप्त॥ ५॥ श्लोक॥ गणपतिगु
णग्रामं ग्रामं भ्रमादपि नेहते बहति
च परितोषं दोषं मुंचतदूरतः॥ युवति
षु वलत्तृष्णे कृष्णे बिहारिणि मां बिना
पुनरपि मनो वामं कामं करोति करो
मि किं॥ १॥ अर्थ॥ अब श्री राधाजू केम
ई जु श्री कृष्णजू की मिलिबे की उत्कंठा
तातें सषी सों कहत हैं॥ मेरो मन मैं रै हा
थि नांही कहा करौं॥ अरी सषी मेरो म
न अब ही श्री कृष्णजी के बिषै इच्छा कर

तु है॥ जद्यपि वै मो ही बिनु बिहार कर
त है॥ अरु और जुवतिन सौं मोह करत है
॥ तथापि उन हिं मेरो मन चाहति है॥ का
हा करौं॥ अरु उनहीं के गुणनि गनिबे
लषो करत है॥ न म हूं करि उनहिं भूल
त नांही॥ अरु उनके गुन सुनि संतोष
पावति हौं॥ अरु उन मेरो अपमान हू
पजु अपराध कीनौं ताहि हरि करें डार
त है॥ तातैं री सषी हौं कहा करौं॥ मेरो
मन मेरे बस नांही॥ तातें आगिली अ
ष्टपदी करि फेरि सषी सों कहत है जु
मो सौं मिलन होइ सो जतन करि॥ गी
॥ मालव रागं॥ इकताली ताल॥ श्लो

गीत०
२८

का॥निर्ग्गतनिकुंजगृहगतयानिसि
रहसिनिलीयवसंतं॥चकितविलो
कितसकलदिशारतिरभसरसेनहसं
तं॥सषिहेकेशिमथनमुदारं॥रमयहे
मयासहमदनमनोरथभावितयावि
तयासविकारं॥ध्रुपद॥अर्थ॥श्रीरा
धाजीकहतहै॥अरीसषीकेशीमथ
नजुश्रीकृष्णजीतिनहिंमोसौंक्रीडा
करवाइ॥सोकैसेहैंश्रीकृष्णजी॥भ
योहैकामविकारजिनकौ॥औरहौं
कैसीहौं॥एकांतविषेजुहैकुंजतहां
प्रापतभईहौं॥औरकैसेहैंश्रीकृ
ष्णजी॥रात्रिविषैंएकांतस्थलविषै

दुरिरहतुहै॥अरुहौंकैसीहौं॥भयपू
र्वककासौंदिशानिदेषतहैं॥औरकै
सेहैंकृष्ण॥रतिजुहैकेलिताविषेजुर
भसउछाह॥ताकेबसकरिहसतहै
बकुरिहौंकैसीहौं॥कामजनितजोवि
कारताकेबसिभईहौं॥श्लोक॥प्रथ
मसमागमलज्जितयापटुचाटुशतैरनुकू
लं॥मृदुमधुरस्मितभाषितयाशिथि
लीकृतजघनदुकूलं॥२॥अर्थ॥रा
धाजीकहतहै॥हौंकैसीहौं॥प्रथमस
मिलनजुसमागम॥तातैंलईहैला
जजाकौं॥औरकैहैंश्रीकृष्णजी॥प्रि
यजुहैमीठेबोलतिनकरिमेरीला

जनुडाॅबेकौंम्ब्रनकूलतिनकरिजयो
हौ॥बक्रारिहौंकैसीहौं॥मृदुकहिये
कोमलऔसेजुमधुरबचनतिनक
रिबोलतिहौं॥ऋहकैसेहैंश्रीकृष्ण
जी॥मेरीबातसुनिसिथिलहीनो
कीनोहैंकटिवस्त्रजिन॥श्लोक॥१
किसलयशयननिवेशितयाचि
रमुरसिममैवशयानं॥कृतपरिरं
भणचुंबनयापरिरभ्यकृताधरपा
नं॥३॥अर्थ॥बक्रारिहौंकैसीहौं॥श्री
कृष्णजीकरिकिशलयजुनूतनको
मलपत्रतिनकीजुसेजताबिषेपौर
ढायेहौं॥बक्रारिकैसेहैंश्रीकृष्णजी

चिरकालबहुतकालपर्यंतमेरेव
क्षस्थलबिषेसयनकरतहैं॥बक्रारि
हौंकैसीहौं॥कृतकीनौहैआलिंगन
अरुचुंबनताकरि॥औरकैसेहैंश्री
कृष्णजीआलिंगनदेकरिकीनौहैअ
धरपानजिन॥श्लोक॥अलसनिमी
लितलोचनयापुलकावलिललित
कपोलं॥श्रमजलसिक्तकलेवरया
वरमदनमदादतिसुलोलं॥४॥अर्थ
श्रीराधाजीकहतहैं॥हौंकैसीहौं॥अ
लसकरिमूंदेहैंलोचनजिन॥औरकै
सेहैंश्रीकृष्णजी॥पुलकावलिजुहैरो
मांचनकीपांति॥तिनकरिमनहरैं

गी
२

गीत०
३०

कपोजिनके।।बक्रारिहौंकेसीहौं।।श्र
मजलजुहैप्रस्वेदताकरिसीओहैक
ठेवरजिनको।।बक्रारिकैंसेहैंश्रीकृ
ष्णजी।।बरष्क्षेष्टजुहैंकाम।।तातेंउपज्यो
जुमद।।ताकरिअतिचंचलहै।।श्लोकः।।
कोकिलकलरवकूजितया।।जितम
नसिजतंत्रविचारं।।श्लथकुसुमाकु
लकुंतलयानषलिषितघनस्तनभा
रं।।प।।अर्थ।।हौंकेसीहौं।।कोकिलाका
जुमधुरशब्दतेसोहैकूजितशब्दजाको
ऐसीएकैसेहैंश्रीकृष्णजी।।जितजीत्यो
हैकामशास्त्रतिनबक्रारिहौंकेसीहौं
सिथलनयेहैंफूलतिनकरिसोभाय

मानहैकेशजिनकेबक्रारिकैसेहैंश्री
कृष्णजी।।नषनिकरिचिन्हकीनेहैंमेरे
स्थूलस्तनबिषे।।श्लोकः।।चरणरणित
मणिनूपुरयापरिपूरितसुरत
बितानं।।मुषराबिश्रृंषलमेषलया।।स
कुचग्रहचुंबनदानं।।६।।अर्थ।।हौंकै
सीहौं।।चरननिबिषेरणितशब्दशब्द
करतहैमणिजटितनूपुरजाकै।।ऐसो
एकैसेहैंकृष्णजी।।पूरणकीनौहैसुरत
केलिसमूहजिन।।हौंकैसीहौं।।मुषरा
शब्दकरतहैछूटीहैमेषलाजिनकी
कैसेहैंश्रीकृष्णजी।।केसपकरिदीनो
हैचुंबनजिन।।श्लोकः।।रतिसुषसमय

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी
गीत०
३१

रसालसयादरा॥मुकलितनयनस
रोजं॥निसृहनिपतितनुलतया॥म
धुसूदनमुदितमनोजं॥अर्थ॥ह्वोकै
सीकहौं॥रतिसुषसमयजुसुरतको
समयताविषैजुप्रीति॥तातैंउपज्योहै
आलसजिनकों॥असकैसेहैंश्रीकृ
ष्णजी॥कछूएकमुकलितप्रफुलित
लयेहैंनेत्रकमलजिनके॥बहुरिहौं
कैसीहौं॥निःसहअसमर्थजाहीतैंनि
पतितपरीहैशरीरलताजाकी॥बहु
रिकैसेहैंश्रीकृष्णजी॥उदितप्रगट
कियोहैमनोजकामजिन॥श्लोक॥
श्रीजयदेवभणितमिदमतिशय॥

धुरिपुबनिधुबनिशीलं॥सुषमुत्कंठि
तगोपवधू॥कथितवितनोतसुलीलं
॥८॥अर्थ॥श्रीजयदेवकरिवर्णितजु
हैयहगीत॥सोश्रोतानिकौंसुषदाता
होहु॥सोकैसोहैगीत॥मधुरिपुजुहैश्री
कृष्णजीतिनकोजुनिधुवनसुरतसो
वर्णयोहैजाविषै॥बहुरिकैसोहैगी
तलीलासहितहै॥अष्टमअष्टपदीस
माप्ता॥श्लोक॥हस्तस्रस्तविलासवंश
मनृजुभ्रूवल्लिमद्बल्लवीवृंदोत्सारि
दृगंतवीक्षितमतिस्वेदार्द्रगंडस्थलं॥
मामुद्वीक्ष्यविलक्षितस्मितसुधामुग्धा
ननेकानने॥गोविंदव्रजसुंदरीगणवृ

तंपश्यामिहृष्यामिच॥ ॥ अर्थ॥ श्रीरा
धाजीकहतहै॥ अरीसषी श्रीगोबिंदजी
कौंदेषतहौं अरुहर्षपावतहौं॥ सोकै
सोहैश्रीकृष्णजी॥ वृंदावनबिषैव्रजसुं
दरीजुगोपीतिनसहितहै॥ बहुरिकैसे
हैगोबिंदजी॥ मोहिदेषिगिरीहैमुरली
जिनकी॥ बहुरिकैसेहैंश्रीगोबिंदजी
कुटिलहैंभौंहजिनकीअैसीजुगोपिका
तिनकीवोरकटाछिकरिचितवतहै॥ ब
हुरिकैसेहैंश्रीगोबिंदजी॥ प्रस्वेदकरि
आईहैकपोलजिनके॥ बहुरिकैसेहैं
लाजसहितजुमंदहासताकरिसोभित
हैमुषजिनको॥ छंद॥ डरालोकस्तोक

स्तवकनवकाशोकलतिका॥ विकाशः
कासारोपवनपवनोपिव्यथयति॥ अ
पिभ्रामद्भृंगीरणितरमणीयानुमु
कुल॥ प्रसूतिश्चूतानांसखिशिखरिणी
यंसुखयति॥ ३॥ अर्थ॥ श्रीराधाजीकह
तहै॥ अरीसषी॥ बियोगीजननकौंडप
जनकअैसीजुअशोककीलता॥ ताकौ
जुविकाशफूलिबो॥ सोमोहिडपदेत
है॥ अरुसरोवरकोजुपवनसोपुनि
पीडाकरतहै॥ बहुतकहाकहौं॥ आ
बकीजोमंजरीसोबहुतसंतापकरा
तहैं॥ सोमंजरीकैसीहै॥ सुबासतेंनि
कटगुंजारकरतहैसोभ्रमरतिनक

रिसोभितहै अथजिनके ॥ श्लोक ॥ स
कृतस्मितमाकुलाकुलगलद्धम्मिल्ल
मुल्लासितं ॥ भ्रूवल्लीकमलीकदर्शि
तभुजामूलार्द्धदृष्टस्तनं ॥ गोपीनां नि
भृतं निरीक्ष्य दयितां कांचिच्चिरं चिं
तयन्नंतर्मुग्धमनोहरो हरतु वः
क्लेशं नवः केशवः ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ नवत
रुनजु केशव तेम कानिके उपद्रव हरउ
सो कैसे हैं केशव जू गोपिनाकोजु
गुप्तनाव देषिकरि कोऊ एक जो प्रि
या ताहि मन विषे स्मरत है बहुरि कै
से हैं सुंदर और मोहन हैं और गोपि
कानिको जु गुप्तनाव सो कैसे सो है चि

तकी बात निप्रगट करत है जु मंद हा
सि जामे ॥ बहुरि कैसो है गुप्त नाव ॥ मि
सकरि दिषायो है जु ना आधे के आह
स्त अंगना विषे ॥ इति श्री गीतगोविंद
[illegible] अक्लेशकेशवो नाम द्वितीयस
र्गः ॥ २ ॥ श्लोक ॥ कंसारिरपि संसारवा
सनाबंधशृंखलां ॥ राधामाधाय हृ
दये तत्याज ब्रजसुंदरीः ॥ अर्थ ॥ रा
धाजी को बिरह कह्यो ॥ अब श्रीकृष्ण
जी को बिरह बर्नत है ॥ सो कहत है ॥
श्रीकृष्ण राधाजी कों हृदय विषे राषि
करि ॥ ब्रजसुंदरी जु गोपी तिनकों छोड
त भये ॥ कैसो है राधाजी संसार विषे

गीत० ३४

नुवासनाताहि वांधिवेकौं उद्यत है॥
श्लोक॥ इतस्ततस्तामनुसृत्य राधिका
मनंगबाणव्रणखिन्नमानसः॥ कृता
नुतापः सकलिंदनंदिनी॥ तटांतकुं
जे विषसाद माधवः॥ १॥ अर्थ॥ तेजु हैं
माधवजी॥ सोजमुनांतटके कुंजन
मां बैठत नये॥ सो कहा करिकें॥ अ
नेकठौरनि श्री राधाजीकों सोधिक
रिकैसें हैं माधवजी॥ कामबाणके
जु लागे घाव॥ तिन करि दुषित है म
न जिनको॥ बहुरि कैसें हैं माधवजी
कियो है पश्चाताप जिन॥ सोई पाछि
तारो आगें अष्टपदी करि प्रगटक

रत है॥ गूजरी राग इकताली ताल॥ श्लो
क॥ मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधु
निचयेन सापराधतया मयापि न वा
रितातिभयेन॥ हरि हरि हतादरत
या गता सा कुपितेव॥ १॥ ध्रुपद॥ अर्थ
॥ श्रीकृष्णजी कहत है॥ यह जो राधि
का मोहि बहुत गोपीनके झुंडमें दे
षिकरि चली॥ अरु कीनी है राधिका
कों जु अपराध॥ ताही तें डरपि कें मैं हूं
न बरजी ताही तें घटयो जु आदर॥ तातें
श्रीकृष्ण कहत है॥ हरि हरि बहुत कष्ट
पाइ राधा षिजि गई॥ श्लोक॥ किं करि
ष्यति किं वदष्यति सा चिरं हो विर

गीत०
३५

रेण॥ किं धनेन जीवनेन किं मम जनेन न
रहेण॥ २॥ अर्थ॥ श्रीकृष्णजी कहत है
बुकरि राधाजी चिरंकालपर्यंत जो वि
रहताकरि कहा धौं करेगो॥ अरु किं
बदष्यंति॥ कहा कहैगी॥ अरु मोकों
वा राधा बिन किं धनेन॥ धन सौं कहा
काम॥ अरु जनेन किं॥ लोकनि सौं क
हा काम॥ वा राधा बिनु ये सब निःफ
ल है॥ श्लोक॥ चिंतयामि तदाननं कु
टिलभ्रु कोपभरेण॥ शोणपद्ममि
वोपरि भ्रमताकुलं भ्रमरेण॥ अर्थ॥
श्रीकृष्ण कहत हैं॥ हौं राधा कों मुष
ता कौ स्मरण करत हौं॥ सो कैसो है मु

ष॥ अत्यंत क्रोध तैं कुटिल भई है भौं
हता विषै॥ सो कैसो दिषियतु है॥ ऊप
रि फिरत है भ्रमर जाकै ऐसो जु आर
क्त कमल है मानौं॥ यह रूप मांया तें
जु क्रोध तैं लाल नेत्र भये हैं॥ अरु भौं
हन्यां मै है॥ श्लोक॥ तामहं हृदि संगता
मनिसं भृशं रमयामि॥ किं वनेनुसरामि
तामिह किं वृथा विलापयामि॥ ४॥ श्लो
क॥ श्री कृष्णजी कहत है॥ वह राधा
मेरे हृदि दृढी जीत रहै॥ बार बार मोंतें
अरु इहां बन मैं बादि ही काहे कों
सोधौं॥ अरु काहे कौं बिलाप करौं
॥ श्लोक॥ ह अपसे पुरुतो गतागतमे

गीत०
३६

वमेविदधासि॥ किंपुरेवससंभ्रमं
परिरंभणं ददासि॥५॥ अर्थ॥ अब
श्रीकृष्णजी राधिका हि मिलिबेकी
अति उत्कंठा तातें श्रीराधाजीको आ
गम देषत है। सोई कहत है॥ श्रीरा
धा तू मेरे आगें आवा दिसा दिसा दे
षत हो। पारिलेसें पहलै आदरपूर्व
क आलिंगन देती तैसें अब क्यों न दे
हि॥ श्लोक॥ तवपिनमस्तुयाहृद
यं चवाकुलयामि॥ तन्न वेद्मि कुतो
गतासि न तेन तेऽनुनयामि॥६॥ अर्थ॥
श्रीकृष्णजी कहत है॥ अहो राधा तुम
रो छिद्रो क्रोध करि न स्यो जानत हों॥

अरु हू सौ यह जानत नाहीं जु कित ग
ई है॥ ताही तें नाहीं मनावत हों॥ श्लोक
॥ दृश्यतां मम परं कदापि तव दर्शनक
रोमि॥ दहि सुंदरि दर्शनं मम मन्मथेन
दुनोमि॥७॥ अर्थ॥ श्रीकृष्णजी कहत
है॥ अहो राधे॥ यह जु मोपै अपराध प
र्यो॥ ताकी क्षमा करऊ॥ अरु अपरा
ध हरि करि दर्शन देऊ॥ हौं काम करि
दुःषपावत हों॥ श्लोक॥ वर्णितं जयदे
वकेन हरेरिदं प्रणतेन॥ किंदुबिल्व
समुद्रसंभवरोहिणीरमणेन॥८॥ अ
र्थ॥ कहत है यह गीत जयदेव कवि
करि वरण्यो॥ कैसो है जयदेव कवि॥

गीत॰
३१

श्रीहरिकौंकीनौहैनमस्कारजिन॥व
ऊरिकैमैंहैंजयदेवकविकिंडविल्वहै
नामजिनकौ॥तातैंअगटमयेरोहिणी
रमण॥सप्तमअष्टपदीसमाप्त॥श्लोक॥
भ्रूपल्लवंधनुरपांगतरंगितानि॥बाः
णागुणःश्रवणपालिरितिस्मरेण॥
तस्यामनंगजयजंगमदेवतायाः॥मस्त्रा
णिर्जितजगंतिकिमर्पितानि॥१॥अ
र्थ॥श्रीकृष्णजीकौविरहाधिक्यबर्ण
तहैसोईकहतहैं॥श्रीराधाजीमानकूं
विश्वसकलबसिकरिकैंकामआ
पनैंअस्त्रसौं॥पैसोकैसीहैश्रीराधिका
जी॥अनंगजोकंदर्पताहिजयदेवेकौं

देवतारूपहै॥जैसेंकोऊदेवताप्रसन्न
होइकरिकाहूकौंअस्त्रदेइ॥वऊरिव
हपुरुषआपनौंकार्यसिधिकरिपि
रिताहीदेवताहिअस्त्रसौंपै॥तैसैंमा
नकूंराधाजीकौंकामदेवअस्त्रसौंपैहै
सोकहाहै॥सोईकहतहैं॥भौंहतौध
नुष॥अरुकर्णकौनिकटप्रत्यंचाका
हियेधनुषकीजेहा॥अरुकटाक्षिका
रिचितवतेईबांणहैमांनौं॥श्लोक॥
हृदयबिसलताहारो॥नायंभुजंगम
नायकः॥कुवलयदलश्रेणी॥कंठे
नसागरलद्युति॥मलयजरजोनेदंन
साप्रियारहितेमयिप्रहरनत्वांस्याने

गीत०
३८

गकुधाकिमुधावसि॥३॥[illegible]॥श्रीकृ
ष्णजीकहतहैं।हेअनंगमहादेवकौ
नमकरिकैंमोहिअहारिबेकौंकाहे
कौंक्रोधकरिदौरतहोतासोंबेरहैमं
हादेवसोंउनकेंधोषेमोहिकाहेकौं
मारतहै।सोधोषेहरिकरतहैं।प्रिया
कारहितनयोतातेविरहाग्निसंता
पहरिकरिबेकौंकमलनिकेजुकोम
लनालतिनकीमालापैहेरिहै।इहम
पमतिजांनऊ।औरकंठविषैकमो
दिनीहैतीनविषैकोनीलिमामतिजा
नें।अरुकामसंतापनिवारिबेकौंअंग
विषैचंदनकीपौरिकरीहै।ताहितूज

सजिनजांनहि।तातेंमेरेमनमेंधो
षोहैसोहरिकरिमोहिनिपराधमेंसं ति
ताबै॥[illegible]॥पाणौमाकुरुशून्यमसा
यकममुमांचापमारोपय॥क्रीडाजि
र्जितविश्वमूर्छितजनाघातेनकिं
पौरुषं।तस्याएवमृगीदृशोमनसि
जप्रेंखत्कटाक्षायतेअप्येतौजर्जरित
मनागपिमनोनाद्यापिसंधुक्षते॥४
[illegible]॥श्रीकृष्णजीकहतहैं।बिनाक
ष्णजीस्योहैविश्वजिन॥[illegible]सेकामदे
वयदजुआंबकेफूलरूपबांणसो
हाथिमतिलेहा।अमधनुषपचढावै
मति।सोकहा।मूर्छितनयोताहिमा

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत० ३५ रैं कछु पुरुषार्थ नांही सो मूर्छा कौ का
रन कहत है॥ सो जु मृगनैंनी राधा ति
न के कटाक्ष बांण करि षंडित भयो
जु मन॥ सो अब हूं नैंक सावधांन नां
हीं होत॥ तातैं प्रिया कटाक्ष करि मू
र्छित भयौ हौं॥ ताहि काहे कौं मारहि
मोहि मारैं कछु पुरुषार्थ नांही॥ [illegible]
का भ्रूचापे निहितः कटाक्षविशि
खो निर्मातु मर्मव्यथां॥ स्यामात्मा कु
टिलः करोतु कबरीभारोपि मारोद्य
मं॥ मोहं तावदयं च तन्वि तनुतां बिं
बाधरो रागवान् सद्वृत्तस्तनमंडलस्त
व कथं प्राणैर्मम क्रीडति॥ ५॥ [illegible]

अब मन मैं श्री राधाजी कौं आनि क
रि श्री कृष्णजी कहत हैं॥ अहो राधा
जी तुम जु भौंह धनुष बिषै कटाक्ष बा
ण जु राष्यो है॥ सो मरम बिषै पीडा क
रत हैं॥ सो या बात कौ अचिरज नांही
और स्याम बरण अरु टेढी जु बेणी
ता करि मारिबे कौ उद्दिम कर्यो है॥
सो या बात कौ पनि अचिरज नांही॥
परि सद्वृत्त कहियै गोल स्तन ते मेरे
प्रान हरत है॥ सो उचित नांहिं करत
है॥ [illegible]॥ तानि स्पर्शसुखानि ते च
रला: स्निग्धा दृशो विभ्रमा: स्वद्वक्त्रां
बुजसौरभं स च सुधास्यंदी गिरां वक्रि

मांसा बिंबाधरमाधुरीति बिषयासं
गेपि चेन्मामसां तस्यालयसमाधि
हंत बिरहमाधिकथंवर्तते ॥ ६ ॥ अ
र्थ ॥ श्रीकृष्णजी कहत हैं जो नेनाय
का के संग करि अनुभावतु है । अरु
वेई कटाक्ष चंचल अति प्रेम जुक्त है
अरु जे है मुख को सुगंध है । अरु तेहै
तर्क सहित बचन है । अरु अधर अति
मधुर है । इन्हि नांति बिषयनि के अ
त मेरो मन ता नायका बिषे एकाग्र स
माधि लागी है । सो अबिरज है । सो का
हे तें जो लों बिषय बासनां न जाइ ॥
तो लों जोग न साधे ॥ समाधि है सो जो

ग बिनां न होइ ॥ मेरे बिनाहीं बिषे हरि
न गये ॥ जोग न यों परि जोग साधे ता
के आधि न बूझिये ॥ सो मेरे एकतो य
ह अबिरज ॥ बिषय रहित ही जोग भ
यो ॥ ह सौ ये यह अधिक अबिरज जोग
न ये हूं बिरह आधि न गई ॥ श्लोक ॥ १९ ॥
तिर्यक्कंठबिलोलमौलितरलोत्तंस
स्य वंशोच्चलद्गीतिस्थानकृतावधान
ललनालक्षैर्न संलक्षिताः ॥ संमुग्धं म
धुसूदनस्य मधुरे राधामुखेंदौ मृदुस्पं
दं पक्ष्मविनामिरं दधतु वः क्षेमं कटा
क्षोर्मयः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ कवि कहत है । कि
श्री कृष्णजी के कटाक्षनि कानि को क

कल्यान करह्न॥ कैसे हैं कटाक्ष॥ पर
मम धुरजो राजा मुष चंद्र॥ ता बिषै मुस
कांनि सहित प्राप्त भयो॥ बहुरि कैसे है
कटाक्ष॥ मुरली ते प्रगट होत जु गीत
तिन बिषै राषे हैं श्रवण जिन ऐसी जो
गोपी का ग्राह श्रुति नकरि नांही जानै
बहुरि कैसे हैं श्रीकृष्णजी॥ बक्र है ग्री
वां जिनकी॥ अरु चंचल है मस्तक जि
नकौ॥ तिनकरि चपल है कुंडल जिन
को॥ इति श्री गीत गोविंद मुग्ध मधुसूद
नो नाम द्वितीय सर्गः॥ २॥ ॥ श्लोक॥
जमुनातीर वानीर निकुंजे मंद मा
स्थितं॥ प्राह प्रेम भरोद्भ्रांत माध

वं राधिका सखी॥ १॥ अर्थ॥ अब श्री
राधाजी की सखी श्रीकृष्णजी सों कह
त है॥ सो कैसे हैं श्रीकृष्णजी॥ जमुनां
तट बिषै बेत हद्दानि को कुंज॥ ताम
ध्य मौंन धरे बैठे है॥ बहुरि कैसे हैं श्री
कृष्णजी मो सों कैसे प्रसन्न कहै है या चि
ता सौं आकुल है॥ अरु सु कुराय णि
बिषै जु अधिक प्रेम॥ तातैं उद्विग्न है॥
कर्णाट राग॥ एकताली ताल॥ श्लोक
निंदति चंदन मिंदु किरण मनु विंदति
खेद मधीरं॥ व्याल निलय मिलने
न गरल मिव कलयति मलय समीरं
सा बिरहे तव दीना॥ माधव मनसि

गीत०
४२

नं बिशिषनयादि वृंदावनयालयिनी॥२॥ ध्रुवपद॥ अथ॥ बिरहकरिग्लं गित जु राधिकाजी॥ तिनकी अवस्था सषी श्रीकृष्णजी सों कहत है॥ अहो श्रीकृष्णजी तुमारे बिरहतैं राधिकाजी अति दीन भई है॥ सो कैसी है राधिका श्रीकृष्ण बिषै प्रबिष्ट मो है नये काम के बाण न लागि है॥ ऐसी भावना करिकें कामबाण के भयतें॥ तुम बिषै लीन ह्वै रही है॥ अरु करत कहा है सो सषी श्रीकृष्णजी सों कहत है॥ चंदन कों निंदति है॥ अरु चंद्रमा की किरण देषि अति दुष पावत है॥ अरु कायर होत हैं॥ अरु चंदन के द्रव में सु सर्प॥ तिनहिं स्पर्श करि आवत है जु मलयवायु॥ ताहि बिष करि मानत हैं॥ श्लोकः॥ अविरलनिपतितमदनशरादिव॥ भवदवनाय बिशालं॥ स्वहृदयमर्मणि वर्म करोति सजलनलिनीदलजालं॥३॥ अर्थ बहुरि कहा करत है राधा॥ अति बिशाल जु है जल सहित कमलन के दल॥ तिनहिं आपने हृदय कौ जु मर्म॥ ता बिषै बर्म कवच करत है॥ सो काहे कौं॥ हृदय में बसत जो तुम तिन करि परत है जु काम के बाण॥

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिनतैंरष्याकरिबेकौं॥ श्लोक॥ कुसुमबिशिषशरतल्पमनल्पं॥ बिलासकलाकमनीयं॥ ब्रतमिवतवपरिरंभकराय॥ करोतिकुसुमसयनीयं॥ ३॥ अर्थ॥ बक्रृष्णसषिकहाकरतहै राधा॥ तुमाराआलिंगनकोअभिलाष॥ ताकोजुरूप॥ ताकेकारणाब्रतकरतहै सोकहाब्रत॥ कुसुमबिशिषजोकाम॥ ताकेजुशरपुहपतिनकीजुसेजताबिषैसोवतहै॥ सोकहा॥ औरनीकाईकठिनब्रतकरै॥ सोसरसज्यासोवै॥ तैसेंफूलनकूंकामकेसरजांनिसोवतहैं॥ कैसीहैफूलनकीसे

ज॥ कामकेंजुबिलासताकरैजोग्यहैं॥ श्लोक॥ बक्रृतिचबलितबिलोचनजलधरमाननकमलमुदारं॥ बिधुमिवबिकटबिधुंतुददंतदलनगलितामृतधारं॥ ४॥ अर्थ॥ बक्रृषिकैसीहैराधा॥ बक्रृत है॥ अश्रुजलनेत्रनबिषै॥ तिनकरिसोभायमांनहैमुषकमल॥ सोकैसोहूरियतहैमुषकमल॥ अतिबिकटजोहैबिधूंतुदराहु॥ ताकेग्रसेतैंछूटीअमृतधाराजातैं॥ असौचंद्रमाहैमांनों॥ ५॥ श्लोक॥ बिलिखतिरहसिकुरंगमदेनभवंतमसमसरभूतं॥ प्रणमतिमकरमधोबिनिधायकरेचशरंनवचूतं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत०
४४

६॥ अर्थ॥ सषी कहतु है अहो कृष्णजू व
हे राधा कामरूप जा होतु भ॥ तिन हि
एकांत बिषे॥ कुरंगमद जो है कस्तूरी
ताकरि लिषत है॥ अरु काम कौ बांह
ण जु है मकर॥ ताहि चरणतलें लिष
त है॥ अरु काम के बांण हैं आंब के मौ
र ताहि हाथ में लिषि नमस्कार करतु
है॥ श्लोक॥ प्रतिपदमिदमपि निग(
दति माधव तव चरणे पतिताहं॥ त्व
यि विमुखे मयि सपदि सुधानिधिर(
पि तनुते तनुदाहं॥ ६॥ अर्थ॥ सषी क
हतु है॥ अहो कृष्णजू तुमारे बिरह तें व
ह राधा॥ बार बार यह कहतु है॥ अहो

माधव में तुमारे चरननके सरन आइ
परी हूं॥ सो काहे तैं॥ या तें॥ तुमारे बिरह
मय तें॥ सुधानिधि अमृत कौ निधान औ
सो जु चंद्रमां॥ सो मेरे शरीर कौं जारतु है॥
॥श्लोक॥ ध्यानलयेन पुरः परिकल्प्य
भवंतमतीव दुरापं॥ विलपति हसति वि
षदति चंचति मुंचति तापं॥ ७॥ अर्थ॥
सषी कहति है॥ अहो कृष्णजू ऊ पका(
रि पाय यतु हो जु तुम॥ तिन ही वह राधा
ध्यानलय जु चित्त की एकाग्रता करिकैं
आगें ग्रहें करिकैं॥ बिलाप हि करतु
है॥ ध्यान में पायो जु दरशन॥ ता तें हस(
ति है॥ बहुरि जब नांही देषत तब बि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०
५५

पादरूपकरतुहै।। अरुमदनकरतुहै
बक्रिमनमैयहविचारतुहै।। औरगे
रगायेंमिलैंगेतातेंउछिचलतुहै।। अरु
मनकेसंतापहिंहरिकरतुहै।। श्लोक
श्रीजयदेवभणितमिदमधिकंयदि
मनसानटनीयं।। हरिबिरहाकुलब
ल्लवयुवतिसखीवचनंपठनीयं।। ८
अर्थ।। कहतुहैजुजयदेवकबिकरि
कह्योजुयहगीत।। ताहिमनपूर्बकजी
नपरिनचायोचाहतहौं।। तोश्रीकृष्ण
जूकाबिरहकरिआकुलजुहैराधाजू।।
तिनकीसषीकोजुयहबचनताहिपढ
जो।। इतिश्रीअष्टमीअष्टपदीसमाप्त।। ८।। छ।।

का।। उत्कंठानवतियस्यासंकेतेनागतः
प्रियः। तस्यानगतमेहेतुंचिंतयंत्याकु
लावेतु।। ९।। अर्थ।। जानायकाकासं
केतबिषैपतिनआवै।। अरुनायकाय
हबिचारिबोकरैजुमोसोंतोप्रियका
ह्योहैजुहौंतोयहांहीआयहौं।। अरु
प्रियजोश्रीकृष्णनपधारेसोकाहेतें।।
ऐसेंकहिकरिअतिआकुलहोइ।। ता
नायकाकोंविरहोत्कंठकहिये।। श्लो
क।। अथवासोविपनायतेप्रियसखी
मालापिजालायतेतापोपिश्वासितेन
दावदहनज्वालाकरालायते।। सापि
तद्विरहेणहंतहरिणीरूपायतेहा

कथंकंदर्पोपियमायते बिचरयन्नृशा
र्दूलबिक्रीडितं॥२॥ अर्थ॥ पाछिलीअ
ष्टपदीको अर्थ याश्लोककरिकहतु
है॥ राधाजूकी सखी श्रीकृष्णजूसों कह
तुहै॥ अहो प्रभु राधा पुनि तुम्हारे बिर
हतें हरिणीलों होतुहै॥ सो कैसें सोई
कहतुहै॥ गृह तौ बन होतहै॥ अरु
प्रियसखी तेजाल होतहै॥ सोका हेते
दुहां पधारिबेकों नांहीं देत॥ देहकौ
जुसंताप सोई दावानल होतहै॥ अ
रु कामदेव यमहोंतहै॥ सिंघकीसी
नांई त्रास देतहैं॥ दसापरांग॥ एकता
ली ताल॥ श्लोक॥ स्तनविनिहितम

पिहारमुदारं सा मनुते कृशतनुरिव
भारं॥ राधिका बिरहेतव केशव॥ध
अर्थ॥ सखी कहतुहै॥ अहो श्रीकृष्णतु
म्हारे बिरहकरि अति कृशहै॥ तनु
शरीरताको॥ ऐसी जु राधिका॥ सो जि
दे बिषें पहिरें हैं। मोतिंन के बडमोल य
हार तिंहिं भारकरि मांनतहै॥ श्लोक॥
सरसमसृणमपिमलयजपंकं॥ पश्य
ति विषमिव वपुषि सशंकं॥२॥ अर्थ॥ स
खी कहतुहै॥ अहो श्रीकृष्णजू॥ तुम्हा
रे बिरहतें॥ राधाजी शरीर बिषें चढायो
जु सुंदर चंदन॥ ताहि शरीर बिषें बिष
सो जांनतहै॥ श्लोक॥ श्वसितपवन(

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

मनुपमपरिणाहं॥मदनदहनमिवव
हतिसदाहं॥३॥अर्थ॥अहोकृष्णजू॥
वहैजुराधा॥आपनेंअतिबडेउसासे(
तिनहींकामकीअग्निसमांनदाहक
रिआंनतहै॥श्लोक॥दिशिदिशिकिर
तिसजलकणजालं॥नयननलिनमि
वविगलितनालं॥४॥अर्थ॥अहोश्री
कृष्णजू॥वहराधातुमहींदेषिबेकीइ
छाकरिकैंअश्रुजलसहितहैजुनेत्र
तिनहींचहूंवोरपसारतहै॥सोकैसे
हैंमानौं॥श्लोक॥नयनविषयमपि
किसलयतल्पं॥कलयतिविहितहुता
सनकल्पं॥५॥अर्थ॥सखीकहतुहै(

वहैजुराधानेत्रनिकेआगेहै॥ऐसी(
जुपल्लवनकीसेज॥ताहिहुतासन
जुहैअग्नि॥तासमांनकरिदेषतहै
॥श्लोक॥त्यजतिनपाणितलेनकपो
लं॥बालशशिनमिवसायमलोलं॥
६॥अर्थ॥वहराधाचिंतातैंकपालअ
स्योहस्तपरि॥ताहिहरिकरिनांहिस
कति॥सुकैसोदेषियतुहै॥संध्यासम
यनिश्चलद्वितीयाकोचंद्रहैमांनहु
॥श्लोक॥हरिरितिहरिरितिजपतिस
कामं॥विरहविहितमरणेवनिका
मं॥७॥अर्थ॥अहोकृष्ण॥वहराधा॥
हरिहरिइहिंभांतिकहतुहै॥सोहैं

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

परजांनतहौं॥उहिंबिरहसंताप
मैं॥मारिबेबिषेनिश्चयकीनोंहै॥११
श्लोक॥श्रीजयदेवभणितहरिगी
तं॥सुखयतिकेशवपदमुपनीतं॥
दा॥अर्थ॥श्रीजयदेवकबिकह्योजु
यहगीत॥सोभक्तनिकौंसुखदेऊ॥
सोकैसोहैगीत॥श्रीकेशवजूकेच
रननिकौंसमर्प्योहै॥नवमअष्टप
दीसमाप्तं॥९॥श्लोक॥सारोमांच
तिसीत्करोतिविलपत्युत्कंपतेताम्य
तिध्यायत्युद्भ्रमतिप्रमीलतिपतत्युद्या
तिमूर्छत्यपि एतावत्यतनुज्वरेव
रतनुर्जीवेन्नकिंतेरसात्स्वर्वैद्यप्र

तिमप्रसीदसियदित्यक्तोन्यथाह
कः॥१॥अर्थ॥अबश्रीराधाजूकी
सखीकहतुहै॥अहोकमलअश्विनी
कुमारसमानबैद्य॥जोतुमप्रसन्न
होऊ॥तुमारेरसतेउहराधाजूकौ
उपजीहैजोकामज्वरकीजुबिथाता
तेंछूटै॥जैसेंज्वरवंतभयेंज्वरांकु
आदीनैंनीकैंहोतहै॥सोज्वरकेचिन्ह
कहतुहै॥रोमांचहोतहै॥अरुतनसा
सछोडतहै॥कांपतहै॥बिलापकरतु
है॥अरुगलानियुक्तहोतहै॥कबहु
बकतहै॥नेत्रनिमूंदिरहतहै॥उभिच
लतहै॥गिरपरतहै॥मूर्छापावतहै॥

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इतनेंज्वरकेलछिनलयेहैं॥हमतौ
श्रासडारीजोतुमप्रसन्नहोतौआ
सबंधै॥श्लोक॥स्मरातुरांदैवतवै
द्यहृद्यत्वदंगसंगामृतमात्रसाध्यां॥
बिमुक्तबाधीकुरुपेनराधांउपेंद्रव
ज्रादपिदारुणोसिरः॥१॥अर्थ॥
सखीकहतहै॥अहोश्रीकृष्ण॥अ
श्वनीकुमारसमांनसुंदरजोतुम॥
परिराधाजूकौंनीकीनीकरौतौतु
मबज्रहूतैंकठोरहौ॥कैसीहैराधा
॥तुम्हारेअंगकोजुसंग॥सोईजुअ
मृतताहीकरिसाध्यहै॥औ
रउपधीयाज्वरकौंनलागै॥श्लोक॥

कंदर्पज्वरसंज्वरातुरतनोराश्चर्यमस्याश्चि
रंचित्तंचंदनचंद्रमाःकमलनीचिंता
सुसंत्याम्यति॥किंतुक्षांतवसेनशी
तलतनुःत्वामेकमेवप्रियंध्यायंती
रहसिस्थिताकथमसौक्षीणापिमां
प्राणिति॥२॥अर्थ॥सखीकहतिहै
तुमारौहीध्यानकरिजीवतिहै॥औ
रयाराधाकौचितअैसौहै॥चंदनचं
द्रमांकमलनीइतनेंजुशीतलउप
चारतिनकोस्मरणकरहीदुखपाव
तहै॥औरकैसीहैराधा॥कामज्वर
कोजुसंताप॥तातैंआकुलभईहै॥
तुमकैसेहौ॥परमशीतलहैजिनकौ

कीनौहै॥ बज्रिकैमैहैंवाङः॥ का
मकरिजुक्तजोगोपी॥ तिनकरिकी
नौजुआलिंगन॥ तातैंसिंहरकरि
चिह्नितहै॥ इतिश्रीगीतगोविंदेस्नि
ग्धमधुसूदनोनामचतुर्थःसर्गः॥४॥श्री
का॥ अहमिहनिवसामियाहिराधा
मनुनयमद्वचनेनचानयेथाः॥ इ
तिमधुरिपुणासखीनियुक्तास्वय
मिदमेत्यपुनर्जगादराधां॥१॥ टी
॥ कविकहतहै मधुरिपुश्रीकृष्णजी
करिऐसीभांतिकह्यौ॥ तबनायक
रिराधाजीसौंआगिलीअगिलीअष्ट
पदीकरिऐसीभांतिकह्यौ॥ सोकैसें

कहतनयेराधाजीकीसखीसौंश्रीकृ
ष्णजी॥ अरीसखीहौंयहांबैठौहौं॥
तूजाइराधाहिमनायलै॥ आदमेरे
बचनतैं॥ देशाषरागे॥ रूपकताले॥
गीत॥ वहतिमलयसमीरेमदन
मुपनिधाय स्फुटतिकुसुमनिकरे
विरहिहृदयदलनाय॥ तवविरहेव
नमालीसखिसीदतिकुंजगृहे॥ ध्रु॥
वपदी॥ अर्थ॥ सखीकहतहै॥ अरी
राधातुमारेविरहतें॥ वनमालीजुश्री
श्रीकृष्णजीतेदुषपावतहै॥ कामहै
सहायजाकै॥ ऐसौजुमलयपर्बत
तकौपवन॥ ताहिवहतेदेषि॥ वज

गीत०
५२

रिकैहाहोत॥बिरहीनकौजुहृदय
ताहिविदारनकरिबेकौंफूलनवि
कसतदेषि॥श्लोक॥दहतिशिशि
रमयूषेमरणमनुकरोति॥पततिः
मदनविशिखेविलपतिविकलतक
रोति॥या॥अर्थ॥सखीकहतहैश्र
रीराधा॥श्रीकृष्णकौंतेरविरहतैंसं
तापकरतहैंचंद्रमां॥तबश्रीकृष्ण
जीमिलणकोंआकारकरतुहै अ
रुविवसहोतहै॥ ॥ध्वनति
मधुपसमूहेश्रवणमपिदधाति
मनसिवलितविरहेनिशिनिशि
रुजमुपयाति सखी

कहतहै॥श्रीराधाजबभ्रमरगुंजा
रकरतहै॥तबश्रीकृष्णउपितहोइ
कांननिमूंदतहै॥अरुजबमनवि
षेविरहव्यापतहै॥तबरात्रिविषे
अतिदुषपावतहै॥श्लोक॥वसति
विपिनवितानेत्यजतिललितधा
म॥लुठतिधरणिशयनेबहुविल
पतितवनाम॥या॥अर्थ॥श्रीसखी
तेरविरहतैश्रीकृष्ण॥अतिसुंदरगृ
हछोडतहै॥अरुबननविषेवसतिहै
अरुभूमिविषेसयनकरतहै॥अरु
वारंवारतेरोहीनामलेतहै॥श्लोक॥
भणतिकविजयदेवेविरहविलसि

गीत०
पत्र

तेन।मनसिस्मसिविन्नवे हरिरुदय
नुसुक्तेन॥४॥ अर्थ॥ कविकहतहै
वरणोपोंहै श्रीकृष्णकौविरहविला
सजिन॥ ऐसेजुजयदेवकवि॥ तिन
कोपूर्वजन्मकोजुपुन्य॥ तिनकरि
श्रीहरिमनविषेप्रगटहोऊसोकै
सोहैमन॥ श्रीराधाकृष्णकीलीला
वर्णतहोतहोतहै आनंदजाविषे
दशमीअष्टपदीसमाप्तः॥ [illegible]
पूर्वेयत्रसमंत्वयाररतिपतेरासादि
तासिद्धयेस्तस्मिन्नेवनिकुंजमन्म
थमहातीर्थेपुनर्माधवः ध्यायंस्ता
मनिशंजपन्नपितवैवालापमंत्रा

वलंम्भूयस्त्वकुचकुंभनिर्भरपरीरंभा
मृतंबांछति॥ १॥ अर्थ॥ सखीराधाजी
सोंकहतहैं॥ अरीराधामाधवजीता
हीकुंजरूपकामतीर्थमध्य॥ निरंतर
तेरोहीध्यानकरतहै॥ अरुतेरोहीना
मरूमंत्रताहिजपतहै॥ हरितेरेहीअं
गआलिंगनकीइच्छाकरतहै॥ सुकौ
नकामतीर्थ॥ जहांपहलैंतौसहितर
तिपतिकीजुसिद्धिमनोरथजातीर्थ
मेंपाइये॥ [illegible]
[illegible] रतिसुखसारेगतमभिसारे
मदनमनोहरवेसं॥ नकुरुनितंबिनि
गमनविलंबनमनु

गीत० ५४

सरते हृदये श्री ॥ धीरसमीरे यमुनाती
रे बसति बनमाली ॥ गोपीपीनपयो
धरमर्द्दनचंचलयुगसाली ॥ [illegible]
दा ॥ अर्थ ॥ सषी राधाजी सौं कहतु है
श्री राधिका यमुना के तीर बिषै ब
नमाली जु कृष्ण बसत है ॥ सु कैसो है
यमुनां कौ तीर ॥ धीर कहतां मंद स
मीर जो पवन बहतु है जा बिषै ॥ औ
र कैसे हैं श्री कृष्णजी ॥ अभिसारको
संकेत स्थान तहां प्रापत नये हैं ॥ सो
कैसो है संकेत स्थान ॥ रति सुष जो है
संजोग सुष सोई है सुष जा बिषै ॥ ब
हुरि कैसे हैं श्री कृष्ण ॥ मदन जो है

काम ताको मन हरि बियोग्य सुंदर
है बेष जिनको ॥ तातैं कहत हैं श्री
राधा बिलंब मति करै ॥ प्रान बल्लभ
जु है श्री कृष्ण ॥ तिन पै बेगि चलि ॥ ब
हुरि कैसे हैं श्री कृष्ण ॥ गोपिकानि के
जु पीन कुच ॥ तिनको जु मर्द्दन ॥ ता बि
षै चंचल है हस्त जिनके ॥ [illegible] ॥ ना
मसमेतं कृतसंकेतं बादयते मृदु बे
णुं बहु मनुते तनुसंगतपवनचल
तमपि रेणुं ॥ अर्थ ॥ सषी कहतु है
अरी श्री राधा श्री कृष्ण तेरे नाम सहि
त परम मधुर बेणु बजावत है ॥ अरु
कैसे हैं श्री कृष्ण तेरे शरीर के सपर

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सकौबतनुपवन॥ताकरिउडाईहै
नुपरमरेणु॥ताहिबजतप्रियकरि
मानतहैं॥श्लोक॥पततिपतत्रेविच
लितपत्रेसंकितभवदुपयानं॥रच
यतिशयनंसचकितनयनंपश्यप
तितवपंथानं॥३॥अर्थ॥सषीकह
तहैश्रीराधा॥श्रीकृष्णपल्लवनिकी
सेजरचतहै॥अरुतेरोपैंडोदेषतहै
कैसोहैपैंडो॥पतत्रहैजोपंषीतेजब
उडतहै॥अरुपातगिरतहै॥तिनते
तबहीश्रीकृष्णजीतेरेआगमनको
भ्रमकरतहै॥भयकरिचकितराषे
हैं॥नेत्रराषेहैंजाविषे मुर

खरमधीरंत्यजमंजीरंरिपुमिवकेलि
सुलोलं॥चलसखिकुंजंसतिमिरपुं
जंशीलयनीलनिचोलं॥६॥अर्थ॥स
खीकहतहैश्रीराधा॥तेरेनिमतिश्री
कृष्णअतिआकुलातहैं॥तातेंकुंजकों
चलि॥अरुमंजीरजुहैनूपुर॥तिनहिंउ
तारधरि॥सोकाहेतें॥यातेंजु॥नूपुरबो
लतहैं॥अरुसंकेतस्थानकेचलिबेको
बेरीलौंप्रगटकरतुहै॥अरुक्रीडाबि
षेचंचलहै॥तातेंउन्हींउतारिकरिनी
लोबस्त्रवोढिकरिनिकुंजकोंचलि॥
कैसोहैनिकुंज॥बहुतहैअंधकारजा
विषे॥श्लोक॥उरसिमुरारेरुपहित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

हारे घन इव तरल बलाके ॥ तडिदिव
पीते अतिविपरीते राजसि सुकृत(
विपाके ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ सषी कहत है ॥ र
पीत कहता गौर है अंग जाको ॥ ऐ(
सी राधा तू श्री कृष्ण के हृदय परी तसु
रत बिषै जोग्य है ॥ बकारि कैसी है तू ॥
सुकृत जु है पूर्व जन्म कौ पुन्य ॥ तिन(
कौ पायौ है फल जिन ॥ अन्यथा श्री
कृष्ण सौं बिपरीत सुरकै सैं पाइजै ॥
कैसो है श्री कृष्ण कौ हृदय ॥ सोभित
है मुक्ता हार जा बिषै ॥ ता बिपरीत
बिषै तू कैसी दीपियेगी ॥ चंचल है ब
गपंकति जा बिषै ऐसो जु मेघ ॥ ता

मैं दामिनी जैसी दीपियेगी ॥ श्री कृष्ण
जू कौं मेघ की उपमा ॥ अरु राधा जू
कौं दामिनी की उपमा ॥ अरु मोतिन
कौ हार ताकौं बगपंकति की उपमा ॥
[illegible] ॥ बिगलितबसनं परिहृतरस
नं घटय जघनमपिधानं ॥ किसलय(
शयने पंकजनयने ॥ निधिमिव हर्ष(
निदानं ॥ [illegible] ॥ सषी कहत है ॥ र
श्री राधा पल्लव जे सेज परि बिराज
मान जु कृष्ण बकारि कैसी है जघन ॥
हरि कीनौं है बस्त्र जातें ॥ ऐसो जु निधि
कही जे रतनन कौ पात्र ताकी नांई
हर्ष को निधान है सो कहा ॥ जैसे नि

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धिपायें आनंद होइ तैसैं तेरे जघन पा
ये श्री कृष्ण जू के आनंद होइगो या
करि बिपरीत जनायो ॥ [illegible] ॥ हरि
रभिमानी रजनिरिदानीमियमपि
याति बिरामं । कुरु मम बचनं सत्वर
रचनं पूरय मधुरिपुकामं ॥ [illegible]
सषी कहत है अरी राधा श्री कृष्ण
परम अभिमानी हैं जो न चलौ तौ
और नायका हि अनुसरैंगे तातें हौं
तेरे हित कूं उतावलि करि चलावत
हौं अरु मधुरिपु हैं जो कृष्ण तिन
के मनोरथ पूरन करि अरु रात्रि
पुनि बीतत है तातें ढील मति करै

॥ [illegible] ॥ बिक्षेपेन समं समम मधु
नाति ग्मांशुरस्तंगतो गोविंदस्य म
नोरथेन सच मं आसंतमःसांद्रता ॥
कोकानां करुणस्वनेन सदृशी दीर्घ
मदभ्यर्थना तन्मुग्धे बिफलं बिलंब
न मसौ रम्यो भिसारक्षणः ॥ ३ ॥ अथ
सषी कहत है अरी राधा तेरे बचन
की साथि सूर्य अस्त भयो । कहा जै
सें तेरे बोल अस्त से होइ रहे हैं । तै
सें सूर्य तिनहीं के साथ अस्त भयो
अर्थ यह सांझ भई । अरु गोविंद जू
के मनोरथ के साथ अंधकार बढ़
त भयो । अब जैहै अब जैहै जै सें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत०
५८

हीश्रीगोबिंदजीकैकहतअंधिया
रीभयो॥अबचलिबेकोसमयहै॥१
अरुचवानकोजुबिरहदयायुक्त
करुणासबदातेसीमेरीप्रार्थना१
बिनतीहै॥करुणांकरिकरिकह
तहौंबेगिचलि॥श्रीराधासांरुन
डौ॥अतिलयोहैसमयचलिबेको
निफलबिलंबजिनिकरैबेगचले
॥प्लोक॥आश्लेषादनुचुंबनादनु
नखोल्लेखादनुस्वांतजप्रोद्बोधादनु
संभ्रमादनुरतारंभादनुप्रीतयोः॥१
अन्यार्थंगतयोर्भ्रमान्मिलितयोःसं
भाषणैर्जानतोर्दंपत्योरिहकोनको

नतमसिव्रीडाविमिश्रोरसः॥३॥श्लो
कं॥अर्थ॥सषीकहतहै॥श्रीराधा
अभिसारबिषैशृंगाररसअधिकहो
तहै॥सोईकहतहै॥दंपिरीस्त्रीपुरु
षकोअंधकारमैंकोनकोनलज्जायु
क्तरसनांहीहोत॥कहांसंभ्रमसेहो
होतहै॥जिनस्त्रीपुरुषनकोंरसउप
जतहै॥सोकेसोहै॥पुरुषअरुनाय
काकेनिमतिबडेअंधकारमेंएकही
स्थाननभूलिकरिप्राप्तभयेहैं॥अरु
कामरसकोजुबढतआवेशतातैंना
यकाजानतहै॥जासोंमैंसंकेतकीनौ
हौसोईनायकहै॥अरुनायकजा

गीत०
पत्र

नतहौं ।। जा सौं मैं संकेत कीनौं हौ सो ना
यका है ऐसें स्वम सौं मिलि पीछें आलिं
गन चुंबन षंडत नितैं न योजु काम उद्दी
धा काम सेवा न ये पीछें न योजु संतोष
ना पीछें जब संभाषण न यो ।। तब जान
त न यो ।। पहतौ औरैं न डौं ।। तब उपजी जु
लाजु ।। ताकरि ऐसुतरस ही पावत न
यो ।। तातैं तो सौं कहत हौं संकेत स्थानं
चलि ।। श्लोक ।। सनयचकितं विन्यस्यं
तीदृशौ तिमिरे पथि प्रतितरु मुहुः स्थि
त्वा मंदं पदानि वितन्वतीं ।। कथमपि र
हः प्राप्ता मंगैरनंग तरंगिभिः सुमुखि
सुभग पश्यन्स त्वामुपैतु कृतार्थतां

।। ७ ।। अर्थ ।। सषी कहत है ।। सुंदर है सुष
जाको ऐसी राधा ताहि देषत श्रीकृष्ण
कृतार्थ होऊ ।। तू कैसी है ।। अंधकार
करि मार्ग ता विषें न यतें चहूं वोर चित
वत है ।। बहुरि तूं कैसी है ।। रूषनि रूष
प नि प्रति गाढी होऊ ।। हौ रैहौ रैय गाधर
त है ।। सो काहेतैं ।। मतिया ही रूष की वो
ट होइ तौ मो हिय हां ही मिलै ।। या क्रम
तें ।। बहुरि तू कैसी है ।। अनंग की उठत
हैं लहरि जिन तें ।। ऐसें अंगनि करि
सोभित है ।। लहरि कैसी है ।। एकांत प्रा
प्त भई है ।। ऐसी तोही देषि श्रीकृष्ण कृ
तार्थ होऊ ।। श्लोक ।। राधा मुग्ध मुखा

गीत०
६०

रविंदमधुपस्त्रैलोक्यमौलीनेपथ्यो
चितनीलरत्नमवनीभारावतारांत
कः।।स्वछंदंब्रजसुंदरीजनमनस्तोष
प्रदोषोदयः कंसध्वंसनधूमकेतुरव
तुवोदेवकीनंदनः।।५।।अर्थ।।कबि
कहतुहै।।देवकीनंदनभक्तनकीर
क्षाकरऊ।।सोकैसेहैंदेवकीनंदन।।प
रममुग्धजोराधाताकोजुमुखकमल
ताबिषेमधुपहै।।बहुरिकैसेहैंत्रैलो
क्यकेमस्तककेजुमुकुट।।तिनकेनी
लमणिहैं।।बहुरिकैसेहैंभूमिकोजु
भारताहिउतारिबेसमर्थहैं।।बहुरि
कैसेहैंअपनैंआधीनजोगोपिका।।

तिनकेमनकौंआनंददेतुहैं।।बहुरिकै
सेहैं।।कंसकोबिध्वंसकरिबेकौंधूम
केतुअग्निसमानहैं।।इतिश्रीगीतगो
विंदेअभिसारिकावर्णनेसाकांक्षपुंड
रीकाक्षनामपंचमसर्गः।।५।।श्लोक।।
अथतांगंतुमशक्तांचिरमनुरक्तांल
तागृहेदृष्ट्वा।।तच्चरितंगोविंदेमन
सिजमंदेसखीप्राह।।१।।अर्थ।।अब
सखीश्रीकृष्णजूकेनिकटआइकरि
राधाजूकेचरित्रकहतहै।।सोकहाक
हतुहै।।कुंजलौंराधाजाकौंजांनअस
मर्थदेषिकरिकैसेंहैंराधाजी।।बहुतक
ष्णजीकामकरिबिहबलहैं।।गुनक

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागरागा॥ जतितालौ॥ ॥श्लोक॥ पश्यंति
दिक्षु दिक्षु रहसि भवंतं त्वदधर
मधुर मधुरमधूनि पिबंतं॥ नाथ हरे
सीदति राधा वासगृहे॥१॥ अर्थ॥
अब सखी राधाजी की अवस्था कृष्ण
जूसों कहत है॥ हे राधा वासगृहे सं
केत स्थान॥ ता विषै तुमारे निमित्त दु
ख पावत है॥ सो कैसैं॥ सो आई कहत है॥
राधा दिशि दिशि विषै तुमकौं दूढत
है॥ कैसी है राधा॥ तुमारो जु है अधरपा
न अमृत॥ ताहि पीवत है नारु ना करि
॥ पुनः श्री कृष्ण प्रति कहत हैं॥ अहो
श्रीकृष्णजू राधा तुमारे मिलिबे कौ
मनोरथ करि चली है॥ अरु चरननकौ
धरतु है॥ पिसलि पिसलि परतु है॥ प
रितु मसों मिलिबेकौ जतन करतु है॥
श्लोक॥ त्वदभिसरणरभसेन वलंती
पतति पदानि कियंत चलंती॥२॥४
अर्थ॥ पुनः कैसी है राधाजी॥ करै है अ
ति उजल निर्मल पाद नारि तिंहि कैकं
गारिंहिं करि॥ बडत श्री राधाजू की प्री
ति श्रीकृष्णजू विषै॥ ताकरि जीवति है
॥ बहुरि कैसी है राधाजू॥ श्रीकृष्णजू की
रासमंडल की लाताहि बारबार अव
लोकत है॥ और कैसी है राधाजी॥ मधु
रिपु है श्रीकृष्णजी॥ तिनके सरूप कौ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जुध्यांन॥तिनकों अपनपो करि मान
तहै॥श्लोक॥ विछ्छित विभ्रम विभ्र
कि त्र्प्रलयवलया॥ जीवृति परमिह
तव रति कलया॥ मुजर वलोकित मं
डल लीला॥ मधुरिपुरहमिति भावन
सीला॥३॥ अर्थ॥ राधाजी सपी सों क
हत है॥ अहो सपी वेग दै न पधारे॥
नांही आये सो काहे तें॥ इंहिं भांति रा
धाजी सषी सों वारंवार श्रीकृष्णजी
की बात पूछति है॥ पुनः राधाजू के म
न मांहि॥ श्रीकृष्णजी के मिलिबे कों
भ्रम होत है होत है॥ तब श्रीराधाजू सजल
जो मेघ अति स्याम॥ तिनकी तुल्य श्री

कृष्णजू तिनकों आलिंगन करतु है॥
पुनः चुंबन देत हैं॥ पुनः हरि आगत इ
ति चिंता करि॥ अधिक अंधकार लै ट
त॥ इंहिं भांति राधाजू विलाप करत है
॥श्लोक॥ त्वरितमुपैति न कथमभि
सारं॥ हरिरिति वदति सखीमनुवारं
श्लिष्यति चुंबति जलधरकल्पं॥ हरि
रुपगत इति तिमिरमनल्पं॥४॥ अ
र्थ॥ पुनः कोइक सखी श्रीकृष्णजू सों
राधाजू की अवस्था कहत है॥ अहो
श्रीकृष्णजू तुमारे विलंब करिबि ग
लित॥ हरि इहै जो लज्जा ता राधाजी
की॥ अरु विलपति है॥ पोढिबे की जो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

सख्यातारूपरितुमबिनदेषं॥ श्रीराधा
जूकेमनमैंमहाउपहोतहै॥ अरुरु
दनकरतुहै॥ श्लोक॥ नवतिबिलं
बिनिविगलितलज्जा॥ बिलपतिरो
दतिबासकसज्जा॥ था॥ अर्था॥ पुनः
कोईकसखीश्रीकृष्णजीप्रति॥ रा
धाजीअवस्थाकहतुहै॥ अहोश्री
कृष्णप्रतिराधाजूकीअवस्थाकह
तुहै॥ अहोश्रीकृष्णजू॥ राधाजूअ
धिककांपतहै॥ रोमांचहोतहै॥ स्वा
सकोंकरतहै॥ आकुलव्याकुलहो
तजातहै॥ औरतुमसौंमिलिबेकी
चिंताकरतहै॥ अरुतुमारौश्रृंगारर

ससोईसमुद्र॥ ताबिषैक्रीडतहै॥ अ
रुमृगसिरषीआंषिसो॥ तुमबिषैला
गीहै॥ [illegible]॥ श्रीजयदेवकबेरिद
मुदितं रसिकजनेनतनुतामतिमुदि
तं॥ [illegible]॥ श्रीकहतांजुठकुरानी
नी॥ तिनकोजुजयदेवकबि॥ ताको
उचितअष्टपदीरूपजुएबचन॥ सो
रसिकजननकौंअधिकआनंदक
रो॥ [illegible] विपुलपुलकपालिः॥
स्फीतसीत्कारमंतर्जनितजडिमका
कुव्याकुलंव्याहरंति॥ तवकितवबि
धयामंदकंदर्पचिंतां स्मरजलधि
निमग्नाध्यानलग्नामृगाक्षी

पुनः कोईक सषी राधाजू की
अवस्था कहत है तुमारे निमति
राधाजू अंगन विषे सिंगार करत है
बारंबार अरु तुमारे निकट आइ
बे कौं उछवे है इंहि भांति तुमारे नि
मति सज्या कौं रचत है अरु सज्या
विषे बड़त बेर तुमारो ध्यान करत
है अरु तुमारी जो पूर्व काल की ली
ला तिन कौं अवलंबन करि जीव
ति है अरु तुम धारें बिन राधा कौं
न पाइहौ इंहि भांति राधाजी कृ
ष्ण के बिरह करि तपमान है
अंगेषाभरणं करोति बहुशः

पत्रेपि संचारिणि प्राप्तं त्वां परिशंक
ते वितनुते शय्यां चिरं ध्यायति। इत्या
कल्पविकल्पतल्परचनासंकल्पली
लाशतव्यासक्तापि विना त्वया वर
तनुर्नैषां निशां नेष्यति॥८॥ अर्थ॥
राधा की अवस्था सषी कृष्ण प्रति क
हत है। अहो कृष्ण राधाजी अंग बि
षे शृंगार करत है। अरु तुमारे निम
ति राधाजू सज्या कौं चरत है। इंहि भां
ति संकल्प विकल्प करत है। अरु तु
मारी जो पूर्व काल की लीला तिन के
अवलंब जीवति है। अरु तुमारे बि
न पधारे राधा रात्रि कौं तप करि है॥

गीत०
६५

॥श्लोक॥ किं विश्राम्यसि कृष्णभोगि
भवने भांडीरभूमिरुहि भ्रातर्यासि
न दृष्टिगोचरमितः सानंदनंदास्प
दं। राधाया वचनं तदध्वगमुखान्
नंदांतिके गोपतेर्गोविंद स्वजयंति
सायमतिथि प्राशस्त्यगर्भा गिरः॥
अर्थ॥ श्रीकृष्णजी कोई क पंथी प्रति
कहते हैं। अहो पथिक तू इहां तें जा
ज्ञा। अत्र किं विश्राम करि है। अत्र स्था
ने अस्मिन् भांडीर बटवृक्षे कृष्णभो
गपजो सर्प्यो तिहिं को घर है। अथवा
श्रीकृष्णभोग संकेत की क्रीडा को स्
थान है। हो पथिक नाई तू जाऊ॥

दृष्टिगोचरं दृष्टि आश्रय होइ आनं
द सहित नंदरुद्रजा हां तूं जाइ गोकु
डुंहि तांति श्रीकृष्णजी नंदजू के निका
ट वचन छल सौं कहत हैं। पुनः संध्या
समय प्राशस्त्य अतिश्लाघा योग्य श्रीगो
विंद स्वजयति सर्वोत्कर्षेण वर्तते॥ इ
ति श्रीगीतगोविंदे वासकसज्जा वर्णने
धन्य वैकुंठ नाम पंचम सर्गः॥५॥ श्लो
क॥ अत्रांतरे च कुलटा कुल वर्त्म पात
संजात पातक इव स्फुट लांछन श्रीः॥
वृंदावनांतरमदीपयदंशुदीपैर्दिग्
सुंदरी वदन चंदन बिंदुरिंदुः॥१॥ अर्थ
॥इंदु जु चंद्रमा॥ अस्मिन् वृंदावनांत

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रश्मिपुंजजालैः किरणसमूहै॥ तिनक
रि प्रकासत है॥ चंद्रमा कै सो है॥ कुल
टाजु वेश्या तिनको समूह॥ तिनको जु
मार्गता को नास करिबो॥ तिन करि
उपज्यौ जु पातक पाप॥ तिहिं करि मा
नौं प्रगट कलंक देषियै है॥ पुनः कै
सो है चंद्रमा॥ दिग सुंदरी जो दिशा॥
तिनको बदन जु मुष कमल॥ तिनकौ
चंदन बिंदु है मानौ॥ श्लोकः॥ प्रश
रति अशिधर बिंबे॥ विहित बिलंबे
च माधवे बिधुरा॥ विरचित बिबिधि
बिलापं॥ सा परितापं चकारोच्चैः॥ ४॥
अर्थ॥ जो बिरहणी राधा सो अति प

रिताप दुष करत भई॥ तौ कैसो है परि
ताप॥ बिरह बिलाप बढ़त है जा बि
षे॥ कहौ होत॥ अशिधर जु चंद्रमा॥
ताकी उजियारी कै फैलत॥ अरु श्री
माधव जी कें बिलंब करत॥ गोड मा
लव रागा॥ जातितालं॥ श्लोकः॥ कथित
समयेपि हरिरहह न ययौ वनं॥ मम
विफलमिदममलरूपमपि यौवनं॥
या मिह कामिह शरण सखीजन ब
चन वंचिता॥ १॥ ध्रुपद॥ अर्थ॥ अ
ब राधा अति दुषित होइ करि कह
त है॥ अहो सखीन के बचन करि ड
हकाई अब या निर्जन बन बिषै कौ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत· नकी आरएा जांउं॥ सोकैसो है सषी॥
६७ नकौ बचन॥ अरि राधा तू संकेत स्था
न चलि॥ श्री कृष्ण उहां पधारैंगे॥ इंहि
भांति कह्यौ॥ तातैं हूं इहां आई॥ अ
रु श्री कृष्णजू जा समय पधारन का
ह्यौ॥ सो समय बीत्यौ॥ परि श्री कृष्ण
संकेत स्थानन आये॥ तातैं उन बि
नां मेरौ यौवन रूप वृथा भयौ॥ श्लो
क॥ यदनुगमनाय निशि गहनम
पि शीलितं॥ तेन मम हृदयमिदम
समशर कीलितं॥ १॥ अर्थ॥ बजरा
मैं धाजी कहत हैं॥ श्री कृष्ण हि सुरत
केलि करि संतुष्ट करिबे कौं॥ रात्रि

के समय गहन जो बन ता बिषै आ
ई॥ अरु श्री कृष्ण न पधारे॥ तातैं मो
हि अकेली देषि करि कांम अपने बं
न करि बेधत भयो॥ श्लोक॥ मम म
रणमेव वरमति वितथ केतना॥ कि
मिति विषहामि विरहानल चेत
ना॥ २॥ अर्थ॥ श्री राधाजी आपने
मन सौं कहत हैं॥ अबैं बिरह अग
नि कौ संताप सो मैं काहे कौं सहत
हौं॥ श्री कृष्णजी बिनां मेरो शरीर वृ
था है॥ तातैं अब मेरो मरण भयो॥ सं
ताप काहे कूं सहूं॥ श्लोक॥ मामह
ह विधुरयति मधुर मधु यामिनी॥

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत०
६८

कापिहरिमनुनबतिकृतसुकृतका
मिनी॥४॥ अर्थ॥ बहुरि राधाजीक
हतुहै॥ मोहि परममधुरजोबसंतकी
रात्रि॥ तेपरमदुषदेतहैं॥ अरु कीनो
है बहुतपुन्यजिना ऐसीजुकोउना
यका॥ सो श्रीकृष्णजीसौं क्रीडाकर
तुहै॥ श्लोका॥ अहह कलयामिव
लयादिमणिभूषणां॥ हरिविरह
दहनवहनेन बहुदूषणां॥ ५॥ अ
र्थ॥ बहुरि श्रीराधाजी अपनें मनसौं
कहतुहै॥ यह बडोजु कष्ट॥ वलयजु
कंकणतादि आदिजु मणिजटित
आभूषण॥ तिनकौं हौं श्रीकृष्णके

विरहते अति बहुत बुरे देषत हौं॥
श्लोका॥ कुसमसुकुमारतनुसरली
लया॥ स्रगपि हृदि हंति मामतिविष
मशीलया॥ ६॥ अर्थ॥ राधाजी कह
तुहै॥ स्रगजु फूलनकी माला॥ सो जुमे
रे हृदय विषै कामके बाणनि की मा
ला समान लगत है॥ अरु कुसुमस
मान कोमल है शरीर जिनको॥ श्लो
का॥ अहमिह निवसामि नगणित
वनवेतसा॥ स्मरति मधुसूदनो मा
मपि न चेतसा॥ ७॥ अर्थ॥ बहुरि रा
धाजी कहत है॥ बहुत है बेत बेत जा
बन विषै॥ तहां मैं बसत हौं॥ अरु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पदेषतहौं॥अरुमधुसूदनजोश्री
कृष्णतेमोहिचितह्नुनांहिसंभारत॥
श्लोकाा॥हरिचरणशरणजयदेवकवि
भारती॥बसतुहृदियुवतिइवकोम
लकलावती॥८॥अर्थ॥श्रीकृष्ण
चरणहैशरणजिनकोऐसेंजुजय
देवकवि॥तिनकीजुभारतीसरस्व
ती॥तेभक्तनिकेहृदयविषेबसऊ॥
कैसीहैसरस्वती॥कोमलकवितयु
क्तहै॥सोकैसेंजैसेंनायककेहृदय
विषेचतुरिनायकाबसतहै॥इति
श्रीत्रयोदशअष्टपदीसमाप्तं॥श्ला
श्लोक॥अथगतांमाधवमंतरेणस

खीमिमुहवीस्वबिषादमूकां॥बिशं
कमानारमितंकयापिजनार्दनह
ष्टवदेतदाह॥८॥अर्थ॥राधाजीस
षीसौं॥माधवजीकरिकहतुहै॥सषी
कैसीहै॥बिषादसहितहै॥कार्येनम
यो॥ताइषतेकछुकहिबेकोंअसम
र्थहै॥अरुराधाजीकैसीहै॥जनार्द
नश्रीकृष्णजूतिनकोंकाहूनायका
सोंरमेजांनतहै॥सोकैसेंमानौंनाय
कासहितदेषेहै॥बसंतरागं॥जति
ताले॥श्लोक॥स्मरसमरोचितबिर
चितबेसा॥गलितकुसुमदरबिलुलि
तकेशा॥कापिमधुरिपुणा॥बिलस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत० रिललितमनोहरहैकपोलजाकौ
७२ अरुसबदकरतहैजुदुघंटिकाजा
बिषे॥ऐसोजुजघनतिनकीजुगति
चपलताकरिचंचलहै॥श्लोक॥द
यितविलोकितलज्जितहसिता॥
बहुविधकूजितरतिरसरसिता॥
५॥अर्थ॥बजुरिकैसीहैनायका॥
दयितजुहैप्रीतम॥तिनकौबिलो
कितदेषिबो॥तातैंकछुयेकलज्जा
करतहै॥अरुकछुयेकहसतिहै॥
अरुनानाप्रकारकेंशबदबोलतहै॥
अरुक्रीडाकरतहै॥तातैंआनंदित
है॥श्लोक॥बिपुलपुलकपृथुवेप

थुभंगा॥श्वसितनिमीलितविगमद
नंगा॥अर्थ॥बजुरिकैसीहैनायका॥
बहुतनयोरोमांचजाकौ॥अरुबहुत
हैकंपजाबिषे॥अरुश्वसितजुहैस्वा
सनाबिषे॥श्लोक॥श्रमजलकणभ
रसुभगशरीरा॥परिपतितोरसिरति
रणधीरा॥७॥अर्थ॥बजुरिकैसीहै
नायका॥सुरततैंनयोजुप्रस्वेदताक
रिसोभितहैशरीरजाकौ॥अरुप्रीत
मजूकेबक्षस्थलबिषेपरीहै॥अरु
कामसंग्रामबिषेअतिसूरहै॥श्लोक
श्रीजयदेवभणितहरिरमितं॥कलि
कलुषंसमयतुपरिसमितं॥८॥अर्थ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजयदेवकरिबर्णितहै श्रीकृष्ण
जीकीसंजोगक्रीडा॥सोजकलिकेजु
कलियुगकृतपाप॥तिनहिंहरिका
रो॥चतुर्दशअष्टपदीसमाप्तं॥१४॥४
श्लोक॥बिरहपांडुमुखांबुजंद्युतिर
यंतिरयन्नपिवेदनां॥बिधुरतीवत
नोतिमनोभवःस्वहृदयेहृदयेमद
नमथ्यां॥१॥अर्थ॥राधाजूकहतिहैं
अरीसषीचंद्रमांमेरेहृदयबिषेअ
तिपीडाकरतुहै॥सोकैसोहैचंद्रमा
बिरहकरिपांडुरबर्णभयोजुश्रीकृ
ष्णजीकोमुषकमल॥ताकीसीसोभा
जाचंद्रमाबिषेसोकहा॥ग्यांनहिंदू

रिकरता॥बकुरिकैसेहैंचंद्रमा॥मनोभ
वकामताकोमित्रहै॥गुजरीराग॥एक
तालीताल॥श्लोक॥समुदितमदनेरम
णीबदनेचुंबनबलिताधरे॥मृगमद
तिलकंलिखितसपुलकंमृगमिवरज
नीकरे॥बिजयमुरारिरधुनारमतेय
मुनापुलिनबने॥१॥ध्रुपद॥अर्थ॥श्री
राधाजीसषीआगें॥श्रीकृष्णजीकीचे
ष्टाकहतेहैं॥अरीसषीजोमोहिंकोमस
यामजिना॥ऐसेजुमुरारिश्रीकृष्ण॥तेज
मुनांकेतीरबनबिषेक्रीडाकरतेहैं॥सो
कैसोहै॥सोईकहतुहै॥रमणीजुहैको
उएकप्रिया॥ताकोजुबदनमुष॥ता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत· बिषैमृगमदजोकस्तूरीताकौतिलक
७३ लिपहै॥अरुरोमांचउपजतहै॥बज़ुरि
प्रियाकोबदनकेसोहै॥जादेषतका
मप्रगटहोतहै॥बज़ुरिकेसौहैबदन
चुंबनकेनिमतिसन्मुषकीनोहैअधर
जिन॥औरचंद्रमाकेबिषैकलंकहै॥
जैसोकस्तूरीकोतिलकसोभितहै॥श्लो
क॥घनचयरुचिरेरचयतिचिकुरेत
रलितरुणानने॥कुरबककुसुमंचप
लासुसमंरतिपतिमृगकानने॥२॥अ
र्थ॥बज़ुरिकहाकहतहैश्रीकृष्ण॥ता
नायकाकेजुकेसतिनबिषैकुरबकके
पुहपगूंथतहै॥बज़ुरिकेसंहैं॥मेघस

मूहतैसमनोहरहैं॥बज़ुरिकेसेहैं॥
चंचलकीनोहैश्रीकृष्णकोमनतिनके
ग्रां॥बज़ुरिकैसेहैं॥रतिपतिजोहैकांम
सोईमृगताका॥बसिबेकोबनहै॥कैसे
हैकुरबककेपुहपा॥पीतबरनदामिनी
जैसेसोभितहै॥श्लोक॥घटयतिसुघ
नेकुचयुगगगनेमृगमदरुचिरुषि
ते॥मणिसरममलंतारकपटलोंलप
पदस्यशिनूषिते॥३॥अर्थ॥बज़ुरि
कहाकहतहैश्रीकृष्ण॥तानायका
केजुदोउकुच॥तेईजुनयेगगनआ
कास॥तिनबिषैमोतिनकोहारसोई
नयोनक्षत्रसमूहताहिबनावतहै॥

गीत०
७४

औरचंद्रमाचाहिजे॥नषक्षतनये
चंद्रमा॥ताकरिसोभिहै॥कैसेहैंस्तन
मृगमदजोकस्तूरीताकीजुकांतिता
करिसोभितहै॥श्लोकः॥जितबिस
कलेमइवकुंजतुगलेकरतलनलि
नीदले॥मलकतमनयंमधुकरनि
रचयं॥बितरतिहिमशीतले॥४॥
अर्थः॥बजरिकहाकरतहैश्रीकृ
ष्ण॥तानायकाकेजुदोऊभुजा॥तिन
बिषैनीलमणिजटिहैजुकंकणते
जुभ्रमरहिप्रगटकरतहै॥सोकं
णहस्तसोईकमल॥अरुनीलम
णिसोईभ्रमर॥बजरिकैसेहैदोऊ

भुजा॥कोमलताकरिजीतेहैंकमलना
लजिन॥बजरिकैसेहैंदोऊभुजकम
ल॥करतलजुहैहथेली॥तेईहैंपत्र
नाको॥बजरिकैसेंभुजकमल॥हिम
जुहैशीततासमानशीतलहैं॥श्लो
क॥रतिगृहजघनेबिपुलापघने॥
मनसिजकनकासने॥मणिमयर
सनंतोरणहसनं॥बिकरितकृत
बासने॥५॥अर्थः॥बजरिकहाकर
तहैश्रीकृष्ण॥वानायकाकोकाम
कोघरजुजघन॥ताबिषैमोतीनकी
जुमेषला॥ताहिपेहरावतहै॥कैसो
हैजघन॥अतिस्थूलहै॥बजरिकै

गीत०
७५

जघन॥अति स्थूल है॥बजरि कै सौ
है॥मनसिज है कामता कौ सुबर्णम
य सिंघासण है॥बजरि मणि जटि
त छुद्र घंटिका है ता बिषै॥बजरि पै
है स्या है बखूजा बिषै॥कैसी है छुद्र घं
टिका॥तोरण जो है बंदनमाला ता
कौं हंसत है॥श्लोका॥चरणकिसल
य कमला निलये॥नषमणिगणपू
जिते बहिरपि बरणं यावकभरणं
जनयति हृदि योजिते॥६॥अर्थ॥ब
जरि कहा करत हैं श्रीकृष्ण॥वा नाय
का के जु चरण ता बिषै॥जावक जु है
औ एन ताकौ रंग ताहि पूरण करतु

है॥सो वैसे नायका के चरण अति करि
हैं श्रीकृष्ण जी हृदय बिषै धरै है॥कैसे
है श्रीकृष्ण जी कौ हृदय॥कमला जु है
लक्ष्मी॥ताकौ निलय स्थान है॥बजरि
कैसे हैं चरण॥नष सोई मणिसमूह
तिन करि पूजे है॥और कैसे है महाव
र औलतौ बाहरिही प्रगट होत है॥श्लो
का॥रमयति सुन्दरं कामपि सुदृशं ख
लु हलधर सोदरे॥किमफलमवशं चि
रमिह बिरसं बद सखि बिट
पोदरे॥७॥अर्थ॥राधाजी सखी सौं क
हत है॥अरी सखी हलधर के सोदर ला
डे॥ऐसे कृष्ण ते निश्चय करि औरना

गीत०
७६

यका सौं क्रीडा करत है।। तौ अब यह
मो सौं कही।। हौं इन कुंजनि में बाधि
का है कौं रहौं।। अरु बिरह होत हैं।।
श्लोक।। स्फुरत्सु गुणेन कृतहरिगुणेन
मधुरिपुपदसेवके।। कलियुगचरि
तंन बिसतु दुरितं।। कबिनृपजयदेव
के।। ८।। अर्थ।। जयदेवजू कहतु है।। मो
बिषे कलियुगकृतपाप मति रहौ।। हौं
के सौ है।। श्रीकृष्णजी के श्रृंगार कौ क
नौ है।। बहुरि है कैसौ है।। प्रकासे है
श्रीकृष्ण के गुण जिना।। बहुरि है कै
सौ है। मधुरिपु है श्रीकृष्ण तिन के चर
णनि कौ सेवक है।। पंचम अष्टपदी स

समाप्त।।५।। श्लोक।। नायातः सखि नि
र्दयो यदि सठस्त्वं दूति किं दूयसे स्वच्छं
दं बहुवल्लभः स रमते किं तत्र ते दूष
णं।। पश्याद्य प्रिय संगमाय दयितस्या
कृष्यमाणं गुणै रुत्कंठार्तिभरादिव
स्फुटदिदं चेतः स्वयं यास्यति।।१।। अ
र्थ।। अब राधाजी श्रीकृष्णजी के आये
बिनां उपित नई ताहि सखी समझावत
है।। अरी सखी जो परम निर्दय अरु
बंचक।। जो ये कृष्ण न आये तौ तू काहे
कूं दुखपावत है।। अरु बहुत हैं प्रिया
जिन कौं।। अरु स्वेच्छाचारी है।। तिन प्रि
यानि सौं क्रीडा करतु है।। तेरौ अपराध

गीत० ७६ यकासौं क्रीडा करतहै॥तौ अबयह
मोसौं कही॥हौं इनकुंजनिमें बादि
काहे कौं रहौं॥अरुबिबसहोतहैं॥
श्लोक॥स्फुरसनगणेनेकृतहरिगुणने
मधुरिपुपदसेवके॥कलियुगचरि
तंनबिशतुडरितं॥कबिनृपजयदेव
के॥८॥अर्थ॥जयदेवजू कहतुहैं॥मो
बिषेकलियुगकृतपापमतिरहौ॥हौं
केसोहैं॥श्रीकृष्णजीके श्रृंगारकौक
नौहौं॥बढ़ रहौं केसोहौं॥प्रकासेहैं
श्रीकृष्णकेगुणजिन॥बढ़रहौं कौं
सोहौं मधुरिपुहै श्रीकृष्णतिनके चर
णनिकौ सेवकहौं॥पंचदशप्रबंधःस

माप्तः॥१५॥श्लोक॥नायातः सखिनि
र्दयोयदिशठस्त्वंदूतिकिंदूयसे स्वच्छं
दंबहुबल्लभः सरमतेकिंतत्रतेदूष
णं॥पश्याद्यप्रियसंगमाय दयितस्या
कृष्यमाणंगुणैरुत्कंठार्तिभरादिव
स्फुटदिदंचेतः स्वयंयास्यति॥१॥अ
र्थ॥अबराधाजीश्रीकृष्णजीकेआये
बिनांउपितभईताहिसखीसमझावति
है॥अरीसखीजोपरमनिर्दयअरु
वंचकाऐसेकृष्णनआयेतौतूकाहे
कुंउपपावतहै॥अरुबढ़तहैंप्रिया
जिनकौं॥अरुस्वेच्छाचारीहै॥तिनप्रि
यानिसौंक्रीडाकरतुहै॥तेरोअपराध

गीत
७७ नही॥तूमतिउपपावै॥कदाचित्‌स
खीकहैवैइहांकैसैंआइहै॥ताकोउ
त्तरकहतुहै॥अरीसषीतूदेषिजहि
आजपरमप्रियजेकृष्णकेगुणातिन(
करिआकर्ष्योमेरोमन॥तोउनकेसं
गकूंआपहीजायगो॥सोकैसोहैमेरो
मन॥लइहैजुकामपीडाजाबिषै॥॥३
परागे॥जलिताले॥श्लोकः॥अनिलत
रलकुवलयनयनेन॥तपतिनसाकि
सलयशयनेन॥सखियारमितावन
मालिना॥१॥क्रुपदा॥अर्थ॥राधाजीस
षीसौंकहतुहै॥अरीसखीबनमाली
जोकृष्ण॥तेजानायकासौंक्रीडाकरतु

है॥सोनायकापल्लवनकीसेजपरिना
हीपोढतहै॥सोमोसमांनबिरहणी(
नांही॥तातैंनपोढती॥अरुकैसैंहैं(
बनमाली॥अनिलजोपवन॥ताकरि
चंचलकीनेंजुनीलकमल॥तिनस
मानहैनेत्रजिनकैं॥श्लोकः॥विकसि
तसरसिजललितमुखेन॥स्फुटति
नसामनसिजविशिखेन॥यारम्य
राधाजीरमीहैजोनायका॥कामके
बाणनिकरिनांहीबेधीजाति॥कैसें
हैंश्रीकृष्णजी॥कमलसमानमनोह
रहैमुखजिनको॥श्लोकः॥अमृतम
धुरमृदुतरबचनेन॥ज्वालतिजसाम

लयपवनेन॥३॥ अर्थ॥ राधाजी कहतु
है अरी सखी॥ जो नायका श्रीकृष्णजीक
रि रमाई है॥ मलयपर्वत कौ जु पवन
कैसो है श्रीकृष्ण॥ अमृतसे मधुर अरु
कोमल है बचन जिनके॥ श्लोक॥ स्थ
लजलरुहरुचिकरचरणेन। दहति
न सा हिमकरकिरणेन॥४॥ अर्थ॥
राधाजी कहतु है॥ अरी सखी॥ श्रीकृ
ष्णजी नायका सों क्रीडा करतु है॥ सो ना
यका चंद्रमां की किरणि करि नांही सं
तापपावति॥ अरु कैसे है श्रीकृष्ण॥ स्
स्थलकमलन की सी कांति है जिनकी
ऐसे ही हैं हस्तचरण जिनके॥ श्लोक॥

सजलजलदसमुदयरुचिरेण। दल
ति न सा हृदि बिरहभरेण॥५॥ अर्थ॥
राधा कहति है॥ अरी सखी जा नायका
सों श्रीकृष्ण क्रीडा करतु है॥ सो नाय
का बिरह कौ जु अधिक ताप ता करि
बिदारण नांही होत हृदय बिषै॥ सो
कैसे हैं श्रीकृष्णजी॥ जलसमेत जु नये
जु मेघ॥ ता समान सुंदर है शरीर जिन
कौ॥ श्लोक॥ कनकनिकषरुचिसु
चिबसनेन। श्वसिति न सा परिजन
हसनेन॥६॥ अर्थ॥ राधाजी कहत है
अरी सखी जो नायका श्रीकृष्णजी क
रि रमाई है॥ सो नौ कनिकी हासी

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निरापत है। मेरे प्राणा का हे हरति है॥
श्लोक॥ रिपुरिव सखि संवासोयं शि
खी वह्निमानिलो विषमिव सुधारश्मि
र्यस्मिन् दुनोति मनोगते। हृदय सदा
येतस्मिन्नेवं पुनर्बलतैर्बलात् कुवल
यदृशां वामः कामो निरंकुशः॥४॥ अ
र्थ॥ अब राधाजी सखी सों कहत है॥
अरी सखी जिनके हरि पधारे हैं। यह
जु सखीन सहित बसिबो। सो मन हि
संताप देत है। अरु हिमजु शीतल प
वन सो अग्नि ज्यूं मन कूं दहत है। औ
र अमृत रूप है किरण जाको। ऐसो
जु चंद्रमा विष सो लागत है। अरु जि

नके लीने ऐसी गति लई। तिन हि निर्द
य कल विषे मेरो मन वरजित है। हृ
ष करि बिना कारण द्वेश होत है। सो हौं
जानत हों स्त्रीन को काम निश्चय करि
निरंकुश स्वेच्छाचारी॥ श्लोक॥ बाधां
विधाय मलयानिल पंचबाण प्राणा
न्हाण न गृह पुनराश्रयिष्या। किं ते कृ
तांत भगिनि क्षमया तरंगैरंगानि सिं
च मम शाम्यतु देह दाहः॥५॥ अर्थ॥
अब श्री राधाजी प्रान नि तें उदास हो
इ कहत है। अरे चंदन बन के बायु पी
डा करि। अरे पंचबाण कामप्राणानि
को ले हा। जैसे बहुरि घरि न जांहि। अ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

रीयमकीबेदैंनयमुनांआपनेंतरं
गीसीघिअ्योंदहकोदाहमिटै॥क्ष
ातयमकीबेदैंन॥तोहिदमासों
कहाकाम॥ऐसैंनिरपेक्षहोइक
हतभई॥श्लोक॥सांद्रानंदपुरंदरा
दिदिविषद्वृंदैरमंदादरादानम्रैर्मु
कुटेंद्रनीलमणिभिःसंदर्शितेंदी
वरां।स्वच्छंदंमकरंदसुंदरगलन्मंदा
किनीमेदुरंश्रीगोविंदपदारविंदम
शुभस्कंदायवंदामहे॥[illegible]॥अर्थ॥
कबिकहतहैं।श्रीगोविंदजीकेजु
चरणकमल॥तिनकौंहमआपनें
अशुभहरिकरिबेकौंबंदतहै।सो

केसेचरण॥बढतहैआनंदजिनके
ऐसेजुइंद्रआदिसकलदेवता॥ति
नकेजुमुकट॥तिनकेनीलमनि॥तिन
करिसोभितहै॥बहुरिकैसेहैंचर
णकमल॥प्रगटहोतजुगंगा।सोई
मानोंकमलकौमकरंदरसहै॥ता
करिसोभितहै॥इतिश्रीगीतगोविं
दांविप्रलब्धावर्णनेनागरनारायणो
नामसप्तमःसर्गः॥७॥ ॥श्लोक॥अ
थकथमपियामिनींविनीयस्मरश
रजर्जरितापिसाप्रभाते॥अनुनयव
वचनंवदंतमग्रेप्रणतमपिप्रियमा
हसाभ्यसूयं॥१॥अर्थ॥अबरा

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धाजीप्रातयेंआये॥अरुआगेंगाढ़ी
बीनतीकरतुहै॥श्रीमाधवजीतिन
सोंइछासहितबचनकहतुहै॥सो
आगिलीअष्टपदीकरिकहतहै॥
कैसीहैराधाजी॥कैसैंहूंकैसैंगमा
इहैरात्रिजिन॥अरुकामबाणतिन
करिअतिपीडायुक्तकरीहै॥त्र्यथाष्ट
पदी॥भैरवराग॥जतिताल॥श्लोका
रजनिजनितगुरुजागररागकषा
यितमलसनिबेशं॥बहसिनयन
मनुरागमिस्फुटमिवमुदितरसाभि
निबेशं॥याहिमाधवयाहिकेशव
माबदकैतवबादं॥तामनुसरसर

सीरुहलोचनयातवहरतिविषादं
॥१॥ध्रुपद॥अर्थ॥पहिलश्लोकमें
कहिआयेसु॥राधाजीइछासहित
बचनकहतहै॥अहोमाधवजूके
शवतुमपधारो॥हरिहेरिकैतवादजु
हैमिथ्याबचनताहिमतिबोलजुअ
रुवाहीनायकाहिअनुसरऊ॥जो
तुम्हारेउपहरिकरै॥मिथ्यावचनबै
सीनांतिजांनियेंसोईकहतहै॥अहो
कृष्णरात्रिविषैकीनौंजुअतिहीजाग
रण॥तातेंकषायेंनयेअैसेजुतुम्हारे
नेत्र॥सोतुम्हारीप्रीतिप्रगटकरतुहै॥
कैसेहैंनेत्र॥औरनायकासोंकीनी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

नुकेलि॥ताकेआनिप्रायकरिजना
वतहै॥श्लोक॥कज्जलमलिनवि
लोचनचुंबनविरचितनीलिमरूपं
दशनवसनमरुणंतवकृष्ण॥तनो
तितनोरनुरूपं॥२॥अर्थ॥अबराधा
जीश्रीकृष्णकेऔरनायकासौंरति
केलिकेचिन्ह॥तिनहिप्रगटकरिक
हतहै॥अहोकृष्णजूतुम्हारेजुदश
नवसनकहीजेअधरतेतांबूल
नतणातेआरक्तकुतेअबजोतुम्ह
वानायकाकेनेत्रनिविषेचुंबनकी
नो॥सोकज्जललग्योतातैंनीलेदेषि
यतुहैं॥मानऊंतुम्हारेशरीरकीबरा

बरिकरतुहैसुकहो॥तुम्हारेअधरतां
बूल॥पणि॥अबनायकाकेनेत्रकज्जल
तेंजैसोतुम्हारोरूपहैतैसेहीनयेहैं॥
श्लोक॥वपुरनुहरतितवस्मरसंगर
खरनखरक्षतरेषं॥मरकतसकलक
लितकलधौतलिपेरिवरतिजयले
खं॥३॥अर्थ॥कृष्णजीतुम्हारेशरीर
कामसंग्रामकेजयकेजुपत्र॥तासौं
जेबराबरिकरतुहै॥सोकेसोहैतुम्हा
रोशरीरलागेहैंवानायकेजुतीक्ष्ण
नषजाबिषें॥अरुकेसोहैकामजपत्र
मरकतमणिजेनीलमणिताबिषें॥सौं
नेंकीमसिजूंलिष्योहैं॥श्रीकृष्णजीके

गीत०
८५

बंचयसेजनमनुगतमस्रामस्रारज्ज
रहन्नं ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ श्रीराधाजीकहतहै
॥ अहोश्रीकृष्णजी जैसें तुमबादरि
मिलतहौ तैसेंही हमजांनतहैं ॥ म
नहूंमैलौहोइगौ ॥ अन्यथा कामज्व
रकरिकैंडपित ॥ अहतुम्हारेसरण
आइयेजैसें ॥ मोहिकहाडहकाव
तहौं ॥ नातिहूं जानतहौ ॥ जूंतुम्हा
रोचिपलिमिलतहै ॥ श्लोक ॥ त्वम
सिवानबलाकबलायबनेषु किम
विचित्रं ॥ प्रथयतिपूतनिकैवबधू
बधनिर्दयबालचरित्रं ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ ९
श्रीराधाजीकहतहै ॥ अहोश्रीकृ

ष्णजी ॥ तुमनांहीहैबलजिनकोंऐसी
गुप्ती तिनकूं मारिबेकोंबनमांहिफि
रतहौ ॥ सुयाकोकहाआयहै ॥ जिनतु
म्हें नरिकाई पूतनानिर्दयह्वैमारी ॥
तिनकौं अबलरुनाईमें स्त्रीनकौबध
करिबौ आश्चर्यनांही ॥ श्लोक ॥ श्रीज
यदेवभणितरतिबंचितखंडितयुव
तिबिलापं ॥ श्रृणुत सुधामधुरं बिबुधा
लयतोपिदुरापं ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ श्रीजयदे
वकहतहै ॥ औरखंडितह्वयहमोक
रिकह्योजुश्रीकृष्णकरिडहकी ॥ ऐ
सीजुखंडिताहैनायका ॥ ताकौबिला
पताहिसुनौ ॥ सुकैसोहैयहगीत ॥

गीत०
८६

बिबुधालयतूं है स्वर्ग॥ ता हूतें उत्तम
है अरु अमृत समान मधुर है॥ या अ
ष्टपदी में खंडिता नायका बरनी ताको
लक्षण कह्यौ॥ श्लोक॥ उल्लंघ्य समयं
यस्याः प्रेयानन्योपभोगवान्॥ भोग
चिन्हांकितः प्रातरागच्छेत्साहि खंडि
ता॥८॥ अर्थ॥ जा नायका कौ समया
मेटि करि॥ अरु पिय और नायका कौं
रति दै करि॥ अरु और नायका सौं की
न्ही रति ताके चिन्ह प्रगट धरें॥ प्रात
आवै ता नायका सौं खंडिता कही जै।
इति श्रीगीतगोविंदे सप्तदशाष्टपदी
समाप्तं॥१७॥ श्लोक॥ तवेदं पश्यंत्याः प्र

सरदनुरागं बहिरिव प्रियापादालक्त
कछुरितमरुणद्योति हृदयं ममाद्य प्रख्या
तप्रणयभंगेन कितव त्वदालो
कः शोकादपि किमपि लज्जां जनयति
॥१८॥ अर्थ॥ आगें हाथ जोरें जु ठाढे मा
धवजी तिन सौं श्रीराधाजी कहतु हैं।
अहो श्रीकृष्णजी तुम धूर्त कपटी हौ
मेरी प्रीति प्रकासि कै तुम जानत हौ॥
ताकूं तुम भंग कीनो॥ तातें जो उपज्यो
है शोक॥ ताहीतें तेरौ जु दरसन॥ मो
कूं बहुत उपजावत है लाज॥ हौं कैसी हूं
तुम्हारी जु प्रिया॥ ताके चरनकौ महा
वर ताकरि आरक्त है॥ सो तुम्हारे हृदै

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हीदेषतहं।।सोकैसोहैहहैसो।।अरुणा
हिछायाजाकीसोअरुणताकोहैकी
नोप्रियाविषेअनुरागझीनि।।सोई
मानूबाहरिदेषियतुहै।।श्लोक।।आ
तनीननिचोलमच्युतमुरःसंवीत
पीतांशुकंराधायाश्चकितंविलोक्य
हसतिस्वैरंसखीमंडलेव्रीडाचंच
लमंचलंनयनोराधाननेस्मेरस्मेर
मुखोयमस्तुजगदानंदायनंदात्म
जः।।२।।अर्थ।।कविकहतुहै।।नंदात्म
जहैश्रीकृष्णजी।।तेलोकनिकौंसुख
देजाकैसैहैंनंदात्मज।।लाजकरिचं
चलजुहैनैननिकीकोरताहिराधा

जीकेमुखपैतननाषिकरिअतिहीसु
सकानियुक्तमनहैजिनकौ।।सुसका
निकोकारणकहतुहै।।प्रातकालही
नीलांबरचोहैश्रीकृष्णजीकूंदेषिक
रिसखीनकेहस्तश्रीकृष्णजीसुस
कांनियुक्तमनए।।इतिश्रीगीतगोविं
देअष्टमसर्गः।।८।। ।।श्लोक।।तांम
थपिन्नांरतिरसभिन्नांविषाद
संपन्नां।।अनुचिंतितहरिचरितां
कलहांतरितामुवाचरहसखी।।१
अर्थ।।अबसखीराधाजीसौंआगि
लीअष्टपदीकरिकहतुहै।।कैसी
हैराधाजीकामकरिकैदीनहै।।बडे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत० ८७

कथितमिदमनुपदमचिरां॥मापरह
रहरिमतिशयरुचिरां॥३॥अर्थ॥रा
धाजीकहतहै॥जबहरिजीआएत
बकूंनहींबोले॥तातैंसखीकहतहै॥
श्रीराधाजबतूहरिजीसोंपिजती
हीतातैंनबोले॥सखीकहतहैश्री
राधेमैंतोकोंकेबारसमुझाइ॥समु
झाइकेंकह्यो॥अतिसुंदरजुहैश्रीकृ
ष्णजी॥तिनहीतूमतिछांडे॥श्लोक॥
किमितिविषीदसिरोदिषिविकला॥
विहसतियुवतिसभातवसकला॥
४॥अर्थ॥सखीकहतहैश्रीराधा॥र
पहलेंतातैंश्रीकृष्णजीसोंमांनकीनों

अरुअबैंविकलहोयकरिकाहेकों
रुदनकरिदुषकरतहैं॥इनबातनि
औरतरुनीजुहैंसौतितोहिहसती
है॥श्लोक॥मृदुनलिनीदलशीतल
शयनेहरिमवलोकयसफलयन
ने॥५॥अर्थ॥सखीकहतहै॥श्री
राधा॥जलकरिसहितहैकमल
नीदलतिनकरियुक्तपहलैंसेजर
चीहै॥तापरिश्रीकृष्णजीबैठेहैं॥ति
न्हैंदेषिकरिअपनेनेत्रसफलकरो
अरुमांनछांडो॥श्लोक॥जनयसिम
नसिकिमितिगुरुखेदं॥शृणुममव
चनमांनिहितभेदं॥६॥अर्थ॥सखी

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहतहै॥ अरि राधा तू आपनें चित बि
षै काहे कौं दुष करत है॥ तेरे बिरहीनां
ही बांछता॥ औसो जु मेरो बचन है ताहि
सुनि हो॥ अरु तेरो हित कौ बचन कह
तहूं॥ श्लोक॥ श्रीजयदेव भणित म
ति ललितं सुखयतु रसिकजनं हरि
चरितं॥७॥ अर्थ॥ श्रीजयदेव कहतु
है जु या पद मनोहर हरि चरित्र है॥ सो
रसिक जननि कौं परम सुखदाता है
या अष्टपदी मांही कलहंतरिता ना
यका बरनी॥ कलहंतरिता नायका
ताके लछिन कहतु है॥ श्लोक॥ निर
स्तो मनुनां कांतो न मनं प्रियया पुनः

ड पितां तबिना सत कलहंतरिता मु
नां॥८॥ अर्थ॥ जु नायका पाय निपरि
करि मनावतु है॥ प्रियता कौं नमस्का
र करै॥ जब नायक हारि मांनि और
गैर जाय तब नाइका बिनु दुष पाय
करित बस खीसों कहतु है॥ कैसें हूं
मनाय ले आउ॥ औसी जु है नायका
तासौं कलहंतर कहिजे॥ इति श्री गी
त गोविंदे अष्टादशा अष्टपदी समाप्तं
॥१८॥ श्लोक॥ स्निग्धे यत्परुषासि यत्
प्रणमति स्तब्धासि यद्रागिणि द्वेषस्था
सि यदुन्मुखे विमुखतां याता सि त
स्मिन्प्रिये युक्तं तद्विपरीतकारिणि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत०
९१

तबश्रीषंडचचौबिषैंशुल्लपनोहि
मंकुलबहः क्रीडामुदोयातना॥१॥
अर्थ॥ बसिनयेप्रीतमजिनकेमां
नयुक्तजोराधाजू॥ तिनसौंसखीक
हतहै॥ अरीबिपरीतिजलटीकी
करणहारा॥ संकोचरहितराधा॥
मधुरबोलतहैश्रीकृष्णजी॥ तिन
सौंतूंकठोरहै॥ अरुवैशरणांमकर
तुहै॥ अरुतूंफिरिबैठीहैताहीतें
तोकौंचंदकीबातपनिबिषसीला
गतिहै॥ अरुचंद्रमांसूरजसोलाग
तहै॥ अरुतुषारतौकूंअग्निसोला
गतहै॥ अरुक्रीडाजुहै॥ सोपीडासी

लगतिहै॥ सोवहतौयुक्तहै॥ जोतूं
मेरोकह्योनकरैं तौतूंजांनैं॥ श्लोक
॥ मंतमोहनमौलिघूर्णनचलन्मंदा
रविभ्रंसनस्तभ्राकर्षणदृष्टिहर्ष
णमहामंत्रः कुरंगीदृशां॥ दृप्यद्दान
वदूयमानदिविषदुर्वारदुःखापदां
भ्रंसः कंसरिपोर्मपोहतुवःश्रेयां
सिवंशीरवः॥१॥ अर्थ॥ कविकहत
है॥ कंसकेरिपुजुश्रीकृष्णजीहैं॥ ति
नकीमुरलीकोजुसबद॥ मृगनैंनी
जोस्त्री तिनकोमनमोहिबेकौं अनुस
रेंऐसेंकही॥ अरुजेस्त्रीगर्बकरैंता
हिआकर्षिबेकूं॥ अरुतेवहहर्षदेन

गीत० ८२ कूं॥ मा हासा भ्रमं त्र है॥ बजरिकै सो
है मुरलीको सबद॥ गर्वयुक्त है जु दै
सतिनतैं डरपत जु देवतातिनकी जु
क्ति बडी है आपदा ताकूं हरि करत
है॥ कहा जु॥ मुरलीके सुनेतैं देवता
निर्नय होत है॥ इति श्रीगीतगोविं
दे नवमः सर्गः॥९॥ श्लोकः॥ अत्रां
तरे मसृणरोषवशामसीमनिःश्वा
सनिःसहमुखीं सुमुखीमुपेत्य॥ सव्री
डमीक्षितसखीवदनां प्रदोषे सानं
दगद्गदपदं हरिरित्युवाच॥१॥ देशव
राडी रागः॥ अष्टतालीतालः॥ ॥श्लो
कः॥ वदसि यदि किंचिदपि दंतरु

चिकौमुदी हरति दरतिमिरमतिघो
रं॥ स्फुरदधरसीधवे तव वदनचंद्रमा
रोचयति लोचनचकोरं॥ प्रियेचारुशी
ले मुंच मयि मानमनिदानं॥ सपदि मद
नानलो दहति मम मानसं देहि मुख
कमलमधुपानं॥ ध्रुपद॥ अर्थ॥ श्री
कृष्णजी कहत है॥ श्रीराधाजी प्रति
श्रीराधा॥ अहो प्रिया राधा॥ मो बि
षे तृष्णा की मैं तुम मान॥ ताहि तूं छा
डि॥ सो काहे तैं॥ कामाग्नि करिकैं मे
रो हृदय दग्ध होत है॥ तातैं कामाग्नि
कौं तू हरि करि॥ तातैं तेरा अधरामृत
कौ पान करवाय॥ श्री प्रियाजी कहु

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोसो बोलह्म॥ता तै तैरै दांतनिकी
क्रांतिकरि मेरा द्रिदा विषेनयो तुम्ह
दा॥श्रीराधा तेरो मुखारबिंदचंद्रमा
सा मान्यहै॥ सो मेरे लोचनचकोरति
नहीं तै तेअधरको जु अमृत ताके नि
मितिरुचि कूं उपजावतहै॥ अरु कै
सी है तुम॥ चारुमनोहरहै श्रीलख
नाकृजाको॥ श्लोक॥ सत्यमेवासिय
दि सुंदति मयि कोपिनी देहि खरन
खरश्चारघातं॥ घटयभुजबंधनं जन
यरदखंडनं येन बा नचति सुखजातं
॥४॥ अर्थ॥ बकरिष्षीकृष्णजी कहत
है॥ अतिसुंदरहैं दांत जाके ऐसी॥ अ

री राधा जो तू मोस्यूं सांचही षिजी है॥ तौ
तेरे नष तुम्हए अतितीक्षणतिनक
रि मोहि मारत मुकहा॥ जा परि क्रोध
होइ सो बांणनिकरि मारिजे॥ अरु
जो इतने हूं तै क्रोध दूरि न होय तौ॥१
आपनी भुजा करि मोहि बांधौ॥ बांधि
करि अपने दंतनि सो मेरे अधरनिकौं
पंडनकरहु॥ अरु औरतुमसो मैं कहा
कहा कहूं॥ जा बात तैं तुमसुषपावो॥
सो तुम अबही करौ॥ श्लोक॥ त्वमसि
ममजीवनं त्वमसि मम भूषणं त्वम
सि मम भवजलधिरत्नं॥ भवतुभवती
ह मयि सततमनरोधिनी तत्र मम हृ

गीत० ८४

दयमतियत्नं॥२॥ अर्थ॥ श्रीकृष्णक
हतहैं श्रीराधा॥ तूंहीमेरीजीवनिहै
तूंहीमेरोआभूषणहै॥ अरुतूंहीसं
सारसमुद्रविषेरत्नहै॥ पहिलेंप्रणाम
करतही अनुरोधकरतुहों॥ अबतूं
बोलतनांहीजातेंमेरौक्रिदौबऊत
जतनकरतहूं॥ श्लोक॥ नीलनलि
नाभमपितन्वितवलोचनंधारयति
कोकनदरूपं॥ कुसुमशरबाणभा
वेनयदिरंजयसिकृष्णमिदमेतद
नुरूपं॥३॥ अर्थ॥ श्रीकृष्णजीकहत
हैं॥ श्रीराधानीलकमलसामामृजु
हैतेरेनेत्रतेअबहीकोकनंदलाल

कमल॥ तिनकेरूपहीधरतिहैं॥ सोर
क्रोधअंतकरिलालभयेहैं॥ सोयह
युक्तनांहीं॥ जोमोहिमिलिकरिकुस
मसरजुहैकामताकेजुबाणफूल॥
तिनतेंहैउतपतिजाकी॥ ऐसोजुहैम
धु॥ ताकोपानकरिकैं॥ नेत्रनिकोंआ
रक्तकरऊतौयायुक्तहै॥ श्लोक॥ स्फु
रतुकुचकुंभयोरुपरिमणिमंजरी॥ रंज
यतुतवहृदयदेशं॥ रसतुरसनापित
वघनजघनमंडलेघोषयतुमन्मथ
निदेशं॥४॥ अर्थ॥ तवश्रीकृष्णजीब
ऊरिकहतुहैं॥ श्रीराधामणिकोजु
हार॥ सोतेरेकुचकलशनिपरिविरा

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत· जतुहै।अरुतेरेहृदयकोंसोनादेत
गो५ हे।अरुरसनांजुहैछुद्रघंटिकासो
तेरेजघननिपरिसबदकरत।मानों
सबदनांहीकरतुहै।कांमकीजुआ
ग्यातांहिप्रगटकरतहैमानों॥श्लोक
स्थलकमलगंजनंममहृदयरंजनं।
जनितरतिरंगपरिभागं॥भणिमसृ
णवाणिकरवाणिचरणद्वयंसरस
दलक्तकरागं॥५॥अर्थ॥श्रीकृष्णजीक
हतहै।अतिगंभीरअरुमधुरबचन
हैजाके।असेतेराधाचरणकंवल।
तिनहिंतूकहैतौमहावरयुक्तकरौं॥
सोकैसेहैंचरणकंवल।जितेकहैस्थ

लकमलनिकीजुसोभाजितिवकुं
रिमेरेहृदयकोंअनुरागउपजावति
है।बक्रुरिसुरतसमयकेविषैउप
ज्योहैआनंदजिनकै।श्लोक॥स्मर
गरलखंडनंममसिरसिमंडनंधेहिपद
पल्लवमुदारं।ज्वलतिमयिदारुणो
मदनकदनानलोहरतुतदुपाहि
तविकारं॥६॥अर्थ॥श्रीकृष्णजीक
हतहै।श्रीराधा।तेरेजुमनोहरअ
तिचरणपल्लवतिनहीमेरेमस्तक
परिअलंकारकरेसुकहा।मेरेअति
दारुणजुहैकामाग्निसोजालतहै॥
ताकोंसंतापहरिहोइ।अरुकेसेहैते

गीत॰
९६

रिचरणकमल॥ कामकौजुदैमहावि
षतिनकौंहरणहारहै॥ श्लोक॥ इति
चाटुलचाटुपटुचारुमुरवैरिणोरा
धिकामधिकवचनजातं॥ जयतिजय
देवकविभारतीभूषितंमानिनीजन
जनितशातं॥७॥ अर्थ॥ इहिंभांतिश्री
कृष्णजीराधिकाप्रतिकहतभयेश्री
सजुश्रीकृष्णजीतिनकेवचनतैंअ
तिसोभितहैं॥ कैसेहैंश्रीकृष्णजीके
वचन॥ चटुलकहतौंअतिमनोहर
है॥ अरुचाटुकनामदैकोमलकौ
अरुजयदेवकविकीजुहैबांणी॥ ता
कौनामकहीजेभारतीबांणी॥ ताक

रिकैंअतिसोभायमांनहै॥ अरुमांनि
नीकहिजेस्त्री॥ तिनकौंसुषदायकहै
॥ इतिश्रीगीतगोविंदेएकोनविंशा
ष्टपदी॥१९॥ ॥श्लोक॥ परिहरकृ
तातंकेशंकांत्वयासततंघनस्तनज
घनयाक्रांतेस्वांतपरानवकाशिनी
॥ विशतिवितनोरन्योधन्योनकोपि
ममांतरंप्रणयिनिपरिरंभारंभेविधे
हिविधेयतां॥८॥ अर्थ॥ श्रीकृष्णजी
कहतहैं॥ वृथाकीनोंहैकोपजिनि॥
अैसेराधातूंऔरनायकाकेसंगिजा
बेकौधोषौछाडि॥ सोकाहेतैं॥ तूंमेरौ
हिदैरोकिराष्यौहै॥ तातैंमेरेहिय

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत०
९०

मैं एक बित तु नाहीं है तनु देह जाकै
ऐसे कांमदेव बिनां तू औरकै पेषि
ही नांही सकति॥ अर्थ यह है जु तेरे हि
यमैं रहत कांम॥ सरीर रहित है॥ सो
जोर पावत है॥ औरकौ मेरे हियमैं
प्रकास कहां है॥ जायगा वाकै सीहै
॥ अंतर रहत है अंगनाकौं॥ तातैं क
हत है॥ अब मनमैं धोषो उपज्यो है॥
ताहि दूरि करिकैं मोहि आलिंगन
देहु॥ श्लोक॥ मुग्धे विधेयमयि निर्द
यदंतसंददोबल्लिवंधनिबिडस्तन
पीडनानि॥ चंडि प्रखेदमयि मुंचन
पंचबाणचंडालकांडदलनादस

वःप्रयांतु॥ २॥ अर्थ॥ अहो परम सुंद
री श्रीराधा मेरैं तुम परम निर्दय क
रि दंत दित करहु॥ अरु भुजानि
सौं मोहि बांधि करि गाढे अंगनि सौं
पीडा करहु॥ सु काहे तैं॥ अपराधी
होइ ताकौं सजा दीजै॥ तब ही सुष
पाइजै॥ अपराधी तौ नांही॥ तुम सू
नैं दोस लगायो है॥ तातैं भुजानि सौं
बांधि करि॥ स्तननि सौं गाढे पीडा
करहु॥ जातैं तुम सुष पावहु॥ जो
ऐसैं करिहौ तौ चांडाल जु है कांम॥
ताके बाणन के मारे प्राण जातु है॥
तातैं कहत हूं॥ दंड देबेकौं होइ सौ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत०
१५८

देकरिप्रसनहोऊ॥श्लोक॥शशि
मुखितवभातिभंगुरभ्रूयुव जनमो
हकरालकालसर्प्पी॥तदुदितभ
यभंजनाययूनांत्वदधरसीधुसुधै
वसिद्धमंत्रः॥३॥अर्थ॥श्रीकृष्णजी
कहतहै॥अहोचंद्रबदनीराधातु
म्हारिभ्रुकुटीहअतिसोभितहै॥
कैसीभौंह॥ज्वानजननजुतरुनीजन
तिनकूंमोहिबेकौंनयकरिस्यामस
र्परूपीहै॥अरुभौंहसर्पतेंउपज्यौ
जुभय॥ताहिदूरिकरिबेकौंतुमारो
जुअधरअमृत॥सोईमानौंसिद्धमं
त्रहै॥श्लोक॥व्यथयतिवृथामौनंत

न्विप्रपंचयपंचमंतरुणि॥मधुराला
पैस्तापंविनोदयदृष्टिभिः॥सुमुखि
विमुखीभावंतावद्विमुंचनमुंचमां
स्वयमतिशयस्निग्धोमुग्धेप्रियोदमु
पस्थितः॥४॥अर्थ॥श्रीकृष्णजीकह
तहै॥अहोराधा॥तेरोजुवृथामौंन
करिबोसोमोहिउषदेतुहै॥तातें
अहोपरमसुंदरी॥हेतरुणीकोम
लबचननिकरिकैंपंचमरागहिअ
लापऊ॥अरुशीतलदृष्टिकरिचित
कारिसंतापहैउषताहितूंदूरिकरि
अहोसुंदरमुषहैजाकोऐसीराधा
पीठिदेकरिबैठीहै॥सोमौंनछाडि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत०
९९

मुग्धकहा लइहै॥ मुग्धग्यांन रहित
कहिए॥ बिनुहीं जतन कीनैं आयो
आपहीतें॥ तातें मोहि मति छोडो॥ है
कैसो हैं॥ अतिराग करि स्निग्ध॥ अ
ति अनुरागयुक्त है॥ श्लोक॥ बंधूक
द्युति बांधवोयमधरः स्निग्धो मधू
कच्छविर्गंडश्चंडि चकास्ति नीलनलि
नश्रीमोचनं लोचनं॥ नासाभ्येति ति
लप्रसूनपदवीं कुंदाभदंति प्रिये प्रा
यस्त्वन्मुखसेवया विजयते विश्वं
स पुष्पायुधः॥ ५॥ अर्थ॥ श्रीकृष्णजी
बकरि कहत है॥ माननीजु राधाजी
तिनकौ मांन दूरि करिबेकूं कहत

है॥ अहो परम क्रोधशीला॥ अरु रा
धा तुमारो अधर दुपहरिया के फूल
सामान्य सोभित है॥ अरु मधूवा के
फूल समांन पांडुर बरण॥ अतिही ची
कने कपोल सोभित है॥ अरु नील क
मलनि की सोभा तुमारे नैननि हरी
है॥ अरु नासिका तिल प्रसून समान
है॥ कुंद समान दंत जिनको॥ अहो प्रि
या हूं यों जांनत हों॥ तुम्हारे मुखकी
सेवा करि पुष्पायुध जु कामदेव॥ ति
न सकल बिश्वकूं जीत्यो है॥ श्लोक॥
दृशौ तव मंदालसे बदनमिंदुसंदीप
कं गतिर्जनमनोरमा विधुतरंभमू

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रुद्धयं॥ रतिस्तवकलावती रुचिर
चित्रलेखे रुवावहे॥ विबुधयौवतं
वहसि तन्वि पृथ्वीगता॥८॥ अर्थः॥
तातें वृक्षरि श्रीकृष्णजी श्रीराधीका
जीसों कहत है॥ अहो परमसुंदरी
राधा॥ भूमि विषे स्थित हौ॥ तथापि
तुम अपछरानि के समूह लीनें हौं॥
सो कौन प्रकार करिकैं॥ सोइ कह
त हैं॥ तुंतुमारी दृष्टि मंद करि आल
स है॥ सो मंदालसा अपछरा नेत्रनि
मैं है॥ मुष देषत ही मांनौं पूर्णे सोल
ह कला चंद्रमां की सुधि होत है॥ अ
रु इंदुमुषी अपछरा मुष करि कै जी

ती है॥ अरु तुमारी गति जन लोकनि
न के मन हरति है॥ सो गति करि मनो
रमा अपछराजीती है॥ अरु तुम्हारी
गती जांनौं उरबसी रंभा कै है॥ कनि
की सो नामांनौं हरि करत है॥ अरु
तुम्हारे जु रु कहिए जंघा॥ तिनकरी
नामां अपछराजीती है॥ अरु तुमा
री रति जो सुरत विलास जु है॥ सो का
म कला विषे अति ही निपुन है॥ सो
रति करि कैं कलावती नाम अपछ
राजीती है॥ अरु लोहनि करि कैं चि
त्रलेषा नाम अपछराजीती है॥ श्री
कृष्णजी राधिकाजी सों कहत हैं॥८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत० रुचयं॥ रतिस्तव कलावती रुचिर
१०० चित्रलेखे भ्रूवा बहो विबुध योवतं
बहसितत्वि पृथ्वीगता॥८॥ अर्थ॥
तातें वृक्ष रिश्री कृष्णजी श्रीराधीका
जीसों कहत हैं॥ अहो परम सुंदरी
राधा॥ भूमि विषे स्थित हौ॥ तथापि
तुम अपछरानि के समूह लीने हैं।
सो कौंन प्रकार करि कैं॥ सोइ कह
त हैं॥ जु तुमारी दृष्टि मंद करि आल
स है॥ सो मंदालसा अपछरा नेत्रनि
मैं है॥ मुष देषत ही मांनों पूर्ण सोल
ह कला चंद्रमां की सुधि होत है॥ आ
रु इंदुमुषी अपछरा मुष करि कै जी

ती है॥ अरु तुमारी गति जन लोकनि
न के मन हरति है॥ सो गति करि मनो
रमा अपछरा जीती है॥ अरु तुम्हारी
गती जांनों उरबसी रंभा कैं है॥ कटि
की सो ना मांनों हरि करत है॥ अरु
तुम्हारे ऊरु कदलि एजंघा॥ तिन करी
नामां अपछरा जीती है॥ अरु तुमा
री रति जो सुरत बिलास जु है॥ सो का
म कला बिषे अति ही निपुन है॥ सो
रति करि कैं कलावती नाम अपछ
रा जीती है॥ अरु लोहनि करि कैं चि
त्रलेषा नाम अपछरा जीती है॥ श्री
कृष्णजी राधिकाजी सों कहत हैं॥ ८

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिराधांजगाद॥१॥अर्थ॥अबकोईए
कसषीसंध्यासमयजनयेतैंश्रीराधाजी
सोंआगिलीअष्टपदीकरिकहतहै॥
प्रीतिबचनतिनकरिबहुतहीवार
नौं॥श्रीराधाजीकोंसंतुष्टकरी॥संतु
ष्टकरि॥संतुष्टकरिकैंश्रीराधाजीको
बेषआपधर्‍यो॥पीछैंश्रीकृष्णजीआ
पकुंजसेजमैंपधारे॥अरुश्रीराधा
जीकेसीहै॥पैहरेहैंअतिमनोहरश्री
कृष्णजीकेआभूषणजिनायहैक
हाजुश्रीकृष्णजीनैंराधाकोरूपध
र्‍यो॥अरुराधीकाजीश्रीकृष्णजी
कोरूपधर्‍योहै॥बहुरिराधाजी

कैसीकसोभितहै॥हरिनयोहैमां
नअंगकोसंतापजिनकों॥संध्यास
मयकेसोहै॥सोईदष्टिकोचोरहै॥
बसंतरागः॥रूपकताल॥एताका॥
बिरचितचाटुबचनरचनंचरणेर
चितप्रणिपातं॥संप्रतिमंजुलवंजु
लसीमनिकेलिशयनमुपजातं॥मु
ग्धेमधुमथनमनुगतमनुसरराधि
के॥ध्रुपद॥अर्थ॥सषीकहतहै॥
श्रीराधा॥मधुदैत्यकेमारणहारजु
हेश्रीकृष्णजी॥तेतोकोंअनुकूलभये
हैं॥ताकैंतांईतूआपतहोजा॥कैसे
हैमधुमथन॥कहतुहैअतिहीप्रि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यवचनतिनकरिकैं।बक्ररितेरचरण
निविषैकीनौंहैनमस्कारजिनां।अरु
सबतैंमनोहरहैवेनकौकुंज।।ताकेनि
कटसुरतनिमतिरचीहैजोसेज।।ताबि
षैप्राप्तभयेहैं।तातैंतुमबेगिचल
ह।।श्लोक।।घनजघनस्तनभारभरे
दरमंथरचरणविहारं।।मुखरितम
णिमंजीरमुपैहिविधेहिमराळनि
कारं।।१।।अर्थ।।जघनअरुस्तनस्थूल
हैजिनको।जाकोहैभारऐसीजुराधा
अरुसबदकरतहैमणिजटितनूपु
रजाविषै।।ऐसीजुगतिताकरिनूश्री
कृष्णजीकेनिकटचलि।।अरुमरा

लजुहैहंस।।ताकीगतिलियेचलि
कछुएकमंदहैचरणनिकौंधरिबे
जाविषै।।श्लोक।।श्रणुरमणीयत
रंतरुणीजनमोहनमधुरिपुरावं।।
कुसमसरासनसासनबंदिनिपि
कनिकरेतजभावं।।२।।अर्थ।।सर
षीकहतहै।।श्रीराधा।।अतिमनो
हरतरुणीजनजुहैस्त्रीजन।।तिन
कौंमोहकोउपजावनहार।।ऐसो
जुहैश्रीकृष्णजी।।तिनकोरजुसबद
ताहिसुन्यकामजीआग्यादीकरत
है।।ऐसेजुकोकिलसबद।।सुनिकै
श्रीकृष्णजीबिषैअनुरागयुक्तहो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत०
१०४

३॥श्लोक॥अविरलतरलकिसलय
निकरेणकरेणलतानिकुरंबं॥प्रेर
णमिवकरमोरुकरोतिगतिंप्रति
मुंचविलंबं॥३॥अर्थ॥सषीकहत
है॥करजुहैहाथीकीसूंडितैसीहै
॥ऊरुजाकीऐसीजुराधा॥सोचलि
बेबिषैबिलंबकरतीहैताहिछो
डिकैंबेगिचलि॥वृक्षकीडारहैति
नकेनएजुपल्लव॥तेजुनयसहित
हस्तनिकरिलतामारतेतोकोंश्री
कृष्णजीपैंपठावतहै॥सोकहावा
युकरिकैंवृक्षनिकीमारहालतहै
तिनहींदेषिकरिसषीकहतहै॥

अरिराधाएवृक्षहैंजुअचेतनहैं॥
तेकुलतारूपजुहस्ता॥तिनकरितो
कूंश्रीकृष्णजीपैंचलनकहतहै॥ता
तेंतूबेगिचलि॥श्लोक॥स्फुरितम
नंगतरंगवशादिव॥सूचितहरिप
रिरंभं॥पृच्छमनोहरहारविमलज
लधारममुंकुचकुंभं॥४॥अर्थ॥स
षीकहतहै॥अरीराधा॥तूअपनेकु
चकुंभनिसोंपूछिकैसेहै॥तेरेकुचकुं
भकामकेजुतरंग॥तिनकेबसजुहो
तहैंकंप॥ताकरिजनायोहैश्रीकृ
ष्णजीकोआलिंगनजिन॥बहुरिश्र
तिललितहैजुमुक्तानिकोहारसोई

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है जल जिन बिषे॥श्लोक॥अधिगत
सकलसषीभिरिदं तव बपुरपि रति
रणसज्जं॥चंडि रसितरसनाभिवडि
डिममभिसर समलज्जं॥५॥अर्थ॥
सषी कहत है॥अरी राधा॥चंडी कोप
युक्त सलज्जा॥सषीन वहनी कैं जांनी
जु तेरो सरीर कामसंग्राम कौं सावधा
न नयो॥अथ कहा जु तैं मांन छोड्यो
तातैं लाज हू छाडि॥कटि बिषे बाज
त है छुद्र घंटिका सोई जयो झिंझिम
होन ताहि बजाय करि निसंक थकी
तू श्री कृष्णजी पै चलि॥श्लोक॥स्मर
शर सुभग नखेन सखीमवलंब्य क

रण सलीलं॥चल वलय क्वणितैरव
बोधय हरिमपि निगदित शीलं॥६॥
अर्थ॥सषी कहत है॥अरी राधा तू
हाथ करि सषी अवलंबन करि बि
लासपूर्बक चलि॥कैसो है जु तेरो क
र॥काम बाणनि सामान्य है॥सुंदर है
नषजा बिषे॥अरु श्री कृष्णजी काम
के बसि होय करि॥एकाग्र चित्त करि
रहे हैं॥तिनहीं अनेक कंकननि के सब
द करि जगाय॥श्लोक॥श्रीजयदेव
भणितमधरीकृत हारमुदासितवामं
॥हरिबिनिहितमनसामधितिष्ठतु कं
ठतटीमविरामं॥७॥अर्थ॥श्रीजयदे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रकरिकह्यौजुयहगीत॥सोहरिभक्त
निकेहृदैबिषैसर्बदाबिराजौ॥कैसो
हैगीत॥आपनेगुननिकरिजीत्यौहै
हारजिन॥बहुरिश्रीकृष्णकेनिकट
कौंप्रीहैराधिकाजाबिषै॥औरूपर
ममनोहरहै॥कैसीहैभक्तिश्रीकृष्ण
जीबिषै॥राख्यौहैलगायचित्तजिन्है
॥इतिश्रीगीतगोविंदेदशमाष्टपदीसं
पूर्णसमाप्तं॥ ॥२०॥श्लोक॥सामा
दूक्ष्यतिवक्ष्यतिस्मरकथांप्रत्यंमालि
गनैः॥प्रीतिंयास्यतिरंस्यतेसखिसमा
गम्येतिचिंताकुलः॥हरंपश्यति
वेपतेपुलकयत्यानंदतिस्विद्यति।

प्रत्युद्गच्छतिमूर्छतिस्थिरतमःपुंजेनि
कुंजेप्रियः॥७॥अर्थ॥अबदूतीराधा
जीकैआगैंश्रीकृष्णजीकेप्रेमकौंब
र्णतहै॥औरिराधाद्वैश्रीकृष्णजीकूं
जमैंतोहिदेषतहै॥औरुध्यानकरि
तोहिदेषिकांपतहै॥सोक्याहैं तैंसूं
मोसौंबोलिहैराधा॥किधौंनांहीं॥ध्यान
पते॥बहुरिध्यानहीतैंतुम्हारौंअंगसं
गहीपायकरिरोमांचयुक्तहोतहै॥ब
हुरिध्यानहीमैंतुमसौंरतिपायकरि
आनंदपावतहै॥औरुप्रस्वेदपावत
है॥बहुरिक्रीडाकरिकैंउभिचलैहैं॥मो
नौं॥परिश्रमकरिकैंमांनौंउभिचलैहै

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अरु मूर्छित होत है॥ अरु रजबैरे ध्या
न मिटत है तब कहत है॥ राधा आय
करि मो तन कौं चितवैगी॥ अरु चितव
नि करिकैं कामकथानि की बात कहै
गी॥ अरु अंगनि सौं मिलि संतोष पावै
गी॥ अरु संतोष पाय करि मन सुध की
डार मैंगी॥ किधौं मो सौं नां ही॥ ऐसी
चिंता करिकैं अति ही अकुलात है॥ ४
श्लोक॥ अरु स्त्री विदिपदं जनं श्रवणो
यो स्ता पिछ गुञ्जावली मूर्द्धि स्पाम सरो
ज दाम कुचयोः कस्तूरिका पत्रकं॥ धू
र्त्तो नां म भिसार संभ्रम जुषां विष्वङ्नि
कुंजे सखि ध्वांतं नील निचोल चारु सु
दृशां प्रत्यंग मालिंगति॥ ३॥ अर्थ॥ अब
सखी चलिबे योग्य अंधकार बर्णती है
सो ई कहत है॥ श्री राधा यह देषि अंध
कार नायकनि अंगनि अंगनि लग
ति है॥ सो कैसौ है अंधकार॥ नेत्रनि मैं
अंजन कज्जल देतु है॥ नेत्रनि मैं स्पा
मु कज्जल की सोभा पावत है॥ अंधकार
कारण नलग्यो सुतमालहृदि॥ ताके फु
लकर्णनि रण की सोभा पावत है॥ अरु
अंधकार कुचनि लग्यो॥ सो कस्तूरी की
सोभा नै पावतु है॥ अरु कैसो है नायका
पर पुरुषनि कूंडहकावति है॥ बकरि कुं
ज निमें सर्वत्र फिरिबे कौं साहस है जिन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत० केहृदयमैं॥बहुरिकैसोहैअंधकार॰
२०८ नीलबस्त्रसदृशहै॥श्लोक॥कास्मी
रगौरबपुषामभिसारिकाणामाबद्ध
रेखमभितोरुचिमंजरीभिः॥एततम
लदलनीलतमंतमिस्रंतत्प्रेमहेमनिक
षोपलतांतनोति॥३॥अर्थ॥बहु
रिजेअंधकारहैताकौंबरणतहै॥स
षीकहतहैश्रीराधेयहजुअंधका
रहै॥सोअभिसारिकानायकानिकौ
है॥प्रेमरूपजुबनितानिकौंकैसोक
हतहै॥अर्थकहाजुअभिसारिका
निकौप्रेमअंधकारहीसूंकहीजतहै
दृष्टांतकहतहै॥जैसैंकसौटीमैंसो

वर्णकीरेषहोतीहै॥अभिसारिका
नायकाकसौटीकीरेषासमानकरि
वरणीहै॥सोअभिसारिकानायका
निकेजोआभूषणसोमणिनकीकां
तिकरिसोभितहैरेषाअंगविषेंमानौं
॥अरुअभिसारिकानायकाकैसीहै
केसरिसामानुगौरवपुहैजाकौ॥अं
धकारकैसोहै॥तमालवृक्षकेदल
समाननीलहै॥श्लोक॥हारावली
तरलकांचनकांचिदाममंजीरकंक
णमणिद्युतिदीसतस्य॥द्वारनिकुंज
निलयैस्यहरिनिरीक्ष्यब्रीडावतीमथ
सषीमिदमित्युवाच॥४॥अर्थ॥अ

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बसखीराधाजीसूंकहतहै॥आगि
लीअष्टपदीकरिकैंकहतीहै॥कैं
सीसोभितहैकुंजगृहकेद्वारश्रीरा
धाजी॥श्रीकृष्णजीकूंदेषिलज्जाय
मानभईहै॥सोकाहेतैं॥इनसूंबेन
निकुरबोलैहै॥अबसामुहैकैसेक
रिजांउं॥याकारणतैंसलज्जहै॥कै
सोहैकुंजगृहद्वारकौजुमणितिन
कीकांतिनकरि॥अरुसोनेंकीजोक
टिमेषला॥ताकीकांतिकरिकैं॥अ
रुनूपुरनकीमणिकीकांतिकरि॥
अरुकंकणकेमणिकीकांतिकरि
कीनौहैप्रकासजामैं॥इतनीकांति

नकीजोतिकरिकैंअंधकारमांहितै
निर्यारौभयो॥तनियारामांहिद्रश्री
नपायकरिलज्जायमानभई॥वैरा
डीराग॥मठताल॥श्लोक॥मंजुतर
कुंजतलकेलिसदने॥प्रविशराधेमा
धवसमीपमिहविलसरतिरभसह
सितवदने॥ध्रुवपद॥अर्थ॥सषी
कहतहै॥अरीराधामाधवजुहैंश्री
कृष्णजी॥तिनकेंजुमनिकटिचलौ॥अ
रुअतिमनोहरजुहैकुंजतेईजुभए
एक्रीडागृह॥तिनविषैश्रीकृष्णजी
सोंक्रीडाकरि॥कैसीजुहैरतिसुरतता
विषै॥रसरंभउछाहताकरिहास्ययु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहै मुखारबिंद जाकौ ॥ श्लोक ॥ न
वलवदलशयनसारे ॥ प्रविश राधे
माधवसमीपमिह बिलसकुचक
लसतरलहारे ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ सषी कह
तहै ॥ श्री राधा ॥ नूतन जु है अशो
कटकि ॥ तिनके दलनि करि रची
है महासुंदर सुषशय्या ता बिषै ॥ २
ऐसो जु है कुंजगृह ॥ ता बिषै श्री मा
धवजी कै निकट चलि ॥ अरु क्रीडा
करि ॥ कैसी है तु कुचकलस निपरि
चंचल होत है हार जिनकै ॥ श्लोक ॥
कुसुमचयरचितशुचिबासगेहे ॥ प्र
विश राधा माधवसमीपमिह विल

स कुसुम सकुमार देहे ॥ ४ ॥ अर्थ ॥
सखी कहत है ॥ कुसुम समान कोम
ल शरीर है जाकौ ॥ असी है राधा अ
रु कुसुम जु है फूल ॥ तिन करि रच्यो
है अति पवित्र जु संकेत स्थल ॥ तहां
अति मनोहर सेज रची है ॥ ता बिषै
श्री माधवजी के निक चलि ॥ अर
बिलास जु है ताके ताईं तू करि ॥ श्लो
क ॥ चलमलयपवनसुरभिशीते
प्रविश राधे माधवसमीपमिह बि
लसरतिबलितललितगीते ॥ ५ ॥
अर्थ ॥ सषी कहत है श्री राधे ॥ रस
सहित मनोहर जु है गायबौ जा बि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत० १११

धे॥ श्रीराधा॥ वहत सुगंध है मलया
चलकौ पवन ता बिषै॥ ताकरि सुगंध
अरु शीतल लयो है संकेत स्थल॥ ता
बिषै श्रीमाधव जी के निकट तु चलि
अरु बिलास क्रीडा करि॥ श्लोक॥ बि
तत बहु वल्लिन पल्लव घने॥ प्रबिशा रा
धे माधव समीप मिह बिलस चिरमल
सखी नव घने॥ ५॥ अर्थ॥ सखी कह
त है आलस युक्त है अति ही स्थूल
जंघ वा की॥ ऐसी जु राधे॥ अति ही बि
स्तीर्ण नई जु लता॥ तिन के जु नूतन प
ल्लव॥ ताकरि सो मिलत है संकेत स्थ
ल॥ ता बिषै श्रीमाधव जी के निकट

चलि॥ अरु परम बिलास आनंद क
रो॥ श्लोक॥ मधु मुदित मधुप कुल
कलित रावे॥ प्रविश॰ मदन सम्भावे
॥ ६॥ अर्थ॥ सखी कहत है॥ मदन र
सजु है कामरस॥ ताकौ है अधिक ज
बिषै॥ ऐसी जु है राधे॥ मधु जु है फूल
नि कौ रस ताकरि॥ मस्त भये जु भ्रम
रा तिन की नौं है जु गुंजार ता बिषै॥ ऐ
सो जु है संकेत स्थल॥ ता बिषै माध
व जी के निकटि चलि॥ मन के बिषै आ
नंद उपजाय॥ बहुत ही हर्ष सौं चलि
करि क्रीडा रति करि॥ श्लोक॥ मधुत
रल पिक निकर निनद मुखरे॥ प्रवि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत०
१२२

द्रू॥८॥विलसच्छुचिरुचिरदशनशि
खरे॥७॥अर्थ॥सषीकहतहै॥अति
निर्मलजुहैमणि॥जाकीजेआभाकौं
तासमानदंतहैंजाके॥ऐसीजुराधा
अतिमधुरहैकोकिलानिकोसबद
तिनकरिमनोहरहै॥ऐसोजुसंकेत
स्थलताविषैश्रीमाधवजीकेनिक
टचलि॥अरुबऊतसुखबिलासहै
ताहितूंकरि॥श्लोक॥बिहितपद्मा
वतीसुखसमाजेकुरुमुरारेमंगल
शतानि॥भणतिजयदेवकबिराज
राजे॥८॥अर्थ॥तुम्हारेगुणनिकौंक
हतुहैकविनकेराजा॥ऐसेश्रीजय

देव॥अहोमाधवजी॥श्रीगिरधारीमुरा
री॥तुमबऊतपरमकल्यानकरऊ॥
ऐसेजुश्रीजयदेवकविहैं॥पद्माव
तीनामजुहैआपकीस्त्री॥ताकेमुखा
रविंदकेदायकहैं॥इतिश्रीगीतगो
विंदएकविंशाष्टपदीसंपूर्णम॥२१॥
श्लोक॥त्वांचित्तेनचिरंबहन्नयम
तिःश्रांतोभृशंतापितःकंदर्पेणच
पातुमिछतिसुधासंबाधबिंबाधरं॥
अस्यांकंदलंकुरुक्षणमिहभ्रूक्षे
पलक्ष्मीलवक्रीतेदासइवोपसेवि
तपदांभोरुहेकुतःसंभ्रमः॥१॥अर्थ॥
सषीकहतहै॥श्रीराधाएजुश्रीक

गीत० ष्णजी है॥ सो अमृत करि पूरन है॥
११५ परितें अधरनि को पान कियो चा
हत है॥ अरु कैसे हैं श्रीकृष्णजी॥ वि
तकरि तुम लीन है॥ अति अमित
है॥ जैसे और ही नार लीनै होय॥ अ
रुजलपान पियो चाहैं॥ तातें कहू
ती हौ॥ इनकी गोद ही घरी एक सो
नाहे कू॥ कदाचित कहै सषी इन
के निकट ही जाति डरपति हौं॥ तो
कूं कहत हौं॥ श्रीराधा तू इनको
कहा नय करत है॥ एसो नलीनें दा
स है॥ सो काहे करि मोल लीनें हैं॥ क
टाक्षिन करि मोल लीने है॥ सो दास

लो तेरे चरन सेवत है॥ तिनको कहा
नय मानिये॥ श्लोक॥ सा ससाध्वस
सानंद गोविंद लोललोचना॥ सिंजा
नमंजुमंजीरं प्रविवेश निवेशनं॥२
अर्थ॥ सो राधाजी की सषी वचन तें
कुंज गृह विषै राधाजी को प्रवेश क
रावत भई॥ कैसी है कैसी है श्रीराधा
जी॥ गोविंदजी तन लाजतें चंचल है
लोचन जिनको॥ बहुरि मनोहर सब
द करि युक्त है मंजीर नूपुर तिन है
गमन तें बजावत है॥ और श्रीकृष्णजी
गोविंदजी कैसे हैं॥ पहले अपराध
तें सनय है॥ अब श्रीराधाजी को दे

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षिकैं आनंद भयो है॥ अथ बराडी राग॥
रूपकताल॥ श्लोक॥ राधा बदन बिलो
कन बिकसित विविध बिकार बिभंगं॥
जलनिधि मिव बिधुमंडल दर्शन तर
लित तुंग तरंगं॥ हरि मेकरसं चिरम भि
लषित बिलासं॥ सा ददर्श गुरु हर्ष
वशं वद बदन मनंग विकासं॥ १॥ ध
अर्थ॥ सषी कहत है॥ श्री राधा जी सूं
श्री कृष्ण जी कूं नेत्र नि देषत भई॥ कै
से है श्री कृष्ण जी॥ श्री राधा जी को बद
न बिलोकि कैं॥ तातैं उपज्यो है नांति
नांति को बिकार ज्या बिषै॥ कैसो क दे
षियतु है॥ बिधुमंडल जे चंद्रमंडल॥

ताके दर्शन तैं अति चंचल भये हैं
बडे रंग जाके॥ ऐसो जु है समुद्र सो
देषिये सो कहा॥ जैसे चंद्रमा के देषे
तैं समुद्र के तरंग उठत है॥ तैसें श्री
राधा जी को मुष देषें तैं श्री कृष्ण जी
के काम चेष्टा की तरंग उठत है॥ बहु
रि कैसे है हरि जी॥ एक श्री राधा जी
बिषै ही है रस प्रीति जिन की॥ बहुरि
बहुत काल तैं श्री राधा जी सों काम
केलि की बांछा करतु है॥ बहुरि अति
आनंद युक्त है मुषारबिंद जिन को॥
अरु काम सामान्य सुंदरता है जिन बि
षै॥ श्लोक॥ हार ममल तर तार मुरसि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दधतं परिलंबमुदारं॥स्फुटतरफेन
कदंबकरंबितमिव यमुनाजलपू
रं॥४॥अर्थ॥बक्रुरिकैसेहैं हरि श्रीकृ
ष्णजी॥श्रीराधाजीकूं आलिंगन देक
रिअतिही निर्मल है मोतिनको हार
ताहि हृदयाविषे पैहरे हैं॥सोकै
सोकदेषियतु है॥श्रीकृष्णजीको य
मुनांजलकी वोपमां है॥अरु मुक्ता
हारकौं फेनकी वोपमां॥श्लोक॥
स्यामलमृदुलकलेवरमंडलमधिग
तगोरदुकूलं॥नीलनलिनमिव पी
तपरागपटलभरवलयितमूलं॥
अर्थ॥बक्रुरिकैसेहै हरि श्रीकृष्णजी

श्यामवरण॥अरु मनोहर है शरीर जि
नको॥अरु पीतांबर वोढे है॥सोकै
सोकदेषियतु है॥पीतजु है पराग॥ता
करि बेष्टित मूल जिनको॥असो नील
कमल देषिजे॥श्रीकृष्णजीको नील
कमलकी वोपमां है॥पीतांबरको
पीतपरागकी वोपमां है॥श्लोक॥
तरलदृगंचलचलनमनोहरवद
नजनितरतिरागं॥स्फुटकमलोद
रखेलितखंजनयुगमिव शरदि त
डागं॥६॥अर्थ॥बक्रुरि कैसे है हरि
॥चंचल जु है कटाक्षि तिनकरिओ
नित है जो मुष॥अरु राधाजीकूं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत० पजाई है प्रीति जिन।। सो कैसी दे षि
१२६ यतु है।। आरक्ताल बिषे फूले जु हैं क
मल। तिन करि कैं तलाव ऐसो दे
षियतु है। कैसे हैं कमल। क्रीडा कर
त है पंजरीटना बिषे।। श्रीकृष्णजी
का मुषकौं कमल की वोपमां।। नेत्र
निकूं पंजरीट की वोपमां।। श्लोक।।
वदनकमलपरिशीलनमिलित
मिहिरसमकुंडलशोभं।। स्मितरुचि
रुचिरसमुज्वलिताधरपल्लवकृ
तरतिलोभं।।५।। अर्थ।। बक्षरि कैसे
हैं हरि।। वदन जु नयो कमल। ता
कौ जु परिशीलन। प्रकास करिबौ

ताकै निमति प्रगट भए हैं दोइ सूर्य
ऐसे जु हैं कुंडल तिन करि शोभित
है।। बक्षरि मंद हासि करि कैं जु सो
भित है अधरपल्लव।। तिन करि की
नो है रति बिषे लोभ जिन।। श्लोक।।
शशिकिरणछुरितोदरजलधरसुं
दरसकुसुमकेशं।। तिमिरोदितबि
धुमंडलनिर्मलमलयजतिलकनि
वेशं।।६।। अर्थ।। बक्षरि कैसे हैं हरि
श्रीकृष्णजी।। चंद्रमां करि व्याप्त है म
ध्य जाकै ऐसे जु है मेघता सामान शो
भित है। और बिराजत है फूलनि स
हित केश जिनकै।। बक्षरि अंधकार

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

विषेजु दितनयोजु निर्मल पूर्णचंद्र
माता सामानि स्वेत तिलक है जिन
को॥ श्लोक॥ विपुलपुलकं [illegible] रदंतु
रितं रतिकेलिकलाभिरधीरं॥ मणि
गणसमूह समुज्वल भूषणसुभग
शरीरं॥७॥ अर्थ॥ बज्रारि कैसे हैं ह
रि॥ बढत रोमांच तिन करि व्याप्त है
अरु रतिकेलिकला जु है चुंबन आ
लिंगन आदि॥ तिन बिषे अधीर हैं
बहुरि मणि जटित जु है हिम आ
भूषण तिनकरि सोभित है शरीर
जिनको॥ श्लोक॥ श्रीजयदेव भणि
तमतिशोभनन बिनव बिभूषणभ

रं॥ प्रणमत हृदि बिनिधाय हरिं सुचि
रं सुकृतोदयसारं॥८॥ अर्थ॥ ऐसे
जु हैं हरि तिनकौं हृदय बिषे राषि कै
नमस्कार करहु॥ कैसे हैं हरि पुन्य
ते पायतु है॥ श्रीजयदेव करि भणित
बरणतु है॥ अति ही सुंदर है॥ आ भूष
ण जिनकौ॥ बहुरि संसार समुद्र ता
रिबेकौं जिहाज है॥ अरु जिनको भ
कमे सार है॥ इति श्रीगीतगोविंदे
[illegible] संपूर्णो समाप्तः॥१२॥ श्लो
क॥ अतिक्रम्यापांगं श्रवणपथप
र्यंतगमनप्रयासेनेवाक्ष्णो स्तरलत
रतारं पतितयोः॥ तदानीं राधायाः

गीत० प्रियकृतमस्समालोकसमयेपपात
११८ स्वेदांबुप्रसरइवहर्षाश्रुनिकरः॥
५॥ अर्थ॥ अबकविश्रीकृष्णदर्शन
तें॥ राधाजीकोसात्विकभाववर्णत
है॥ सोकहतहै॥ प्रीतमकेदर्शनतें
श्रीराधाजीकेनेत्रनितैंआनंदाश्रु
चलेसोआनंदकेजलनहोहि
प्रस्वेदकोजलहैमांनों॥ सोकहाश्र
मजलकेकननए॥ सोअपांगकहि
एनेत्रकीकोर॥ तिनकौउलंघिकर्णां
मार्गलौंगएजुनेत्र॥ तातैंप्रयासक
हिखेदनयो॥ तातैंश्रमकणनए
हैंमांनों॥ सोकैसेंहैंनेत्र॥ अतिचंच
लहैंतारजिनकें॥ अरुश्रीकृष्णजीमें
प्रापतभएहैं॥ श्लोक॥ भजंत्यास्तल्पां
तंकृतकपटकंडूतिपिहितस्मितेया
तेगेहाद्बहिरबहितालीपरिजने॥ प्रि
यास्यंपश्यंत्याःस्मरशरवशाकूतसु
भगंसलज्जायालज्जाप्यगमदिव दू
रंमृगदृशः॥ ६॥ अर्थ॥ कविकहत
है॥ सलज्जहैश्रीराधिकाजी॥ तिन
कीलाजगइहैमांनों॥ कैसीहैराधा
जी॥ सावधानहुहैसषीजन॥ तिन
कौंगृहकेबाहरिभएपीछेंसेज
लौंप्रापतभयेहैं॥ कैसीहैसषीज
नकांनषुजाइवेकेमिसकरिकैं॥

गीत० ताधरां॥ सरसमनसंदष्टास्यहंतु
१२० रुनवपल्लवप्रसवशायने निद्रि
प्मादी मुवोच हरिः प्रिया॥ ३॥ अर्थ
अब हरिश्रीकृष्णजी॥ अनुरागसहि
तश्रीराधिकाजी कूं देषि कैं॥ आगि
लीजो अष्टपदी॥ तिनकरि कहतहैं
कैसी है श्रीराधाजी सषीनकें गहैपी
ड़ें॥ अल्पजो गुजन ताकरि उपज्योजु
काम॥ तातें नयोजु मंदहास॥ ताक
रिकैं आपतहैं अधरजिनको॥ बकु
रिकैसी है श्रीराधिकाजी॥ नूतनप
त्र अरु नूतनफूल॥ ताकेजु सेजषि
षे॥ रापे हैं नेत्रजिन॥ अष्टपदी वि

नासरागः॥ जतिताल॥ ॥ श्लोक
किसलयशयनतले कुरु कामिनि
चरणनलिनविनिवेशं॥ तवपदप
ल्लववैरिपराभवमिदमनुभवतु
सुवेशं॥ क्षणमधुनानारायणमनु
गतमनुगतमनुसर राधिके॥ १॥ ध्रु
पदं॥ अर्थ॥ अब श्रीकृष्णजी कहत
हैं॥ अरी राधा॥ अब याही छिण॥ ष्या
गें मही जु हूं नारायण ताहि अनुस
रि कैं प्राप्त होहु॥ अहो कामिनी॥ का
मभोगके विषैं इछा है जाकी॥ अरी
राधा त्रैहै जु नूतनपल्लव की शय्या
तापरि तू अपनें चरणनि को धरि

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अरु तेरे चरणकमलनि की बराब
रि करत है॥ औ बनि के आरक्तपु
त्र॥ तिन की सेजता हित जीति॥ श्लो
का॥ करमलेन करोमि चरणमह
मागमितासबिदूरं॥ क्षिणमुपकु
रुष्व यनो परिमामिव नूपुरमनु
गतिशूरं॥ ४॥ अर्थ॥ श्रीकृष्णजी
कहत है॥ श्रीराधा तू बकुत हरि
आई है॥ तातें कहि हौं॥ अपने ह
स्तनि करि तेरे चरण पलोटों॥ द्वि
कनूपुरनि तुम सेज पर उतारि धरो
कैसे हैं नूपुर॥ चलिबे बिषे सबद
करि सो ना करतु है॥ अरु जे संके

स्थल बिषे इनको सबद न बूझिजै॥
तातें तुम नूपुर उतारि धरो॥ श्लोक
॥ बदसुधानिधिगलितममृतमिव
रचय बचनमनुकूलं॥ बिरहमिवाप
नयामि पयोधररोधकमुरसि दुकूलं
५॥ अर्थ॥ श्रीकृष्णजी कहत है श्री
राधा॥ तुम मो कूं अनुकूल करि रुचे
हौ॥ ऐसे ऐसु अमृतसामान्य बचन॥
तेरो मुष सोई भयो सुधानिधि चंद्रमा
तातें अमृत प्रगट भयो है॥ और तेरे
जो पयोधर को ढांपर हैं॥ ऐसो जु व
क्षस्थल॥ अरु परदुकूल कहिजे अं
चल॥ ताहि दूरि करत हौं॥ सो अंच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत०
१२२

लहरिकरतनांहीं॥मानूंतेरेबिरह
कूंहरिकरतहै॥श्लोक॥प्रियपरि
रंभणरतसवलितमिवपुलिकति
मतिडरवापं॥मदुरसिकुचकलशं
विनिवेशयशोषयमनसिजतापं
॥४॥अर्थ॥श्रीकृष्णजीकहतहैं॥
श्रीराधातूंमेरेबक्षस्थलविषैकु
चकलशनिकूंराषि॥अरुमेरेउ
पज्योहैकामताकोसंतापहै॥ताहि
तूंहरिकरि॥जहांसंतापहोइतहां
कलशनिकौंधरि॥सीतलतासंजु
क्तहै॥अरुकैसेहैंतेरेकुचकलश
परिरंभणजुहैआलिंगनतिनके

निमतउगाहैं॥ताकरिसनमुषहोय
रहे॥अरुभयोहैअतिउमंगरोमांच
जाविषै॥अरुहौंबऊतउपकरिया
म्रहौंसोतुमहरिकरऊ॥श्लोक॥अ
धरसुधारसमुपनयभामिनि॥जीव
यमृतमिवदासं॥त्वयिविनिहितम
नसंबिरहानलदग्धवपुषमविला
सं॥५॥अर्थ॥श्रीकृष्णजीकहतहैं॥
अहोभामिनीराधा॥कामकलाकै
विषैअतिचतुरहौ॥सरूपहौ॥तूंअ
पनौंअधरामृतदेकरिमोकूंजिवाय
ह्वैकैसोहूं॥तेरौदासहूं॥अरुतेरा
वियोगस्यूंहूंमृतकसामानहोय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत०
२२३

रह्यौहौं॥बहुरिहौंकैसौहौं॥तोबिषै
राख्योहैमनजिन॥अरुबिरहाअग
निकरिदग्धनयोहौं॥बपुशरीरतैंरे
बिलासतैंतैंच्यवनरह्योहै॥श्लोक॥
शशिमुखिमुखरयमणिरसनागु
णमनुगुणकंठनिनादं॥श्रुतियुग
लेपिकरुतबिलेममशमयचिराद
वसादं॥६॥अर्थ॥श्रीकृष्णजीकह
तहैं॥शशिजेचंद्रमांसामान्यमुख
हैजिनकेऐसीराधाहै॥मणिजटि
तहैरसानागुणछुद्रघंटिकाहैस
बदजुकरतकरी॥अरुताछुद्रघंटि
केसमानकंठनिनादजुरतिसम

यकेसबदतिनकरि॥मेराजोदोऊ
करण॥पिकजुहैकोकिलातिनको
रुतसबदताहिकरिअतिबिकल
नयेहैं॥श्लोक॥मामतिबिफलरुषा
बिकलीकृतमवलोकितमधुनेदं॥
मीलितलज्जितमिवनयनंतवबि
रमबिसृजरतिखेदं॥७॥अर्थ॥श्री
कृष्णजीकहतहैअरिराधा॥एजुते
रेनेत्रनितैं॥अबहीलाजकरतिदे
षतिहै॥अरुहौंकैसोहौं॥अतिनि
रा फलजुहैतैंक्रोधताकरिकैंअतिडु
षपावतहौं॥तातैंयारूठेक्रोधसौं
रहितहोऊ॥अरुरतिसमयबिषै

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिलंब बिसर्जन करौ॥ अरु रति बि
लास बिषै सावधान होऊ॥ श्लोक
॥ श्रीजयदेववचनेन तेमिदमनुपद
निगदितमधुरिपुमोदं॥ जनयति
रसिकजनेषु मनोरम रतिरसराग
बिनोदं॥८॥ अर्थ॥ पद पद प्रति क
ह्यो है मधुरिपु॥ श्रीकृष्ण कौ हर्ष बि
नोद जा विषै॥ ऐसौ यह श्रीजयदे
व करि कह्यो जु गीत॥ सो रसिक ज
न है नेक जन॥ तिनहिं रति रसज
नित आनंद ताहि उपजावत है॥ या
अष्टपदी मैं स्वाधीनपतिका नाय
का कौ वर्नन कह्यौ॥ श्लोक॥ यस्य

रतिगुणाकृष्टपतिपार्श्वेन मुंचति॥
विचित्रविभ्रमाक्रांतमस्या स्वाधी
नभर्तृका॥८॥ अर्थ॥ जा नायका नि
के गुणही करि बष्य कीनौं ऐसो जु
पति सो निकटतैं हरिन होय॥ अरु
नायका कै विभ्रम हाव भाव॥ तिन
ही करि आक्रांत भयो है नायका ज
के ऐसी जु है नायका॥ ता सौं स्वाधी
नपतिका कहिजै॥ इति श्रीगीतगोविंदे
स्वाधीन॰ अष्टपदी समाप्ता॥ ॥ श्लोक॥
प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निविडाश्लेषे
निमेषेण च क्रीडाकूतविलोकिते ध
रसुधापाने कथानर्मभिः॥ आनंदा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत० धिगमेनमन्मथकलायुद्धेपियस्मि
१२५ न्नभूदुद्भूतःसतयोबभूवसुरतारं
भःप्रियंभावुकः॥१॥अर्थ॥कबिक
हतहै॥श्रीराधाकृष्णजीकोंपरम
सुषदेसुरतकोआरंभहोतभयो॥
जासुरतआरंभकेबिषैदृढआलिं
गनकरिकैं॥रोमांचकीनौं॥सोका
मउद्भूतनौंरोमांचकैसैंभयो॥किनौं
आलिंगनकोअंतरकीनौ॥तातेंमि
लेंपीछैआनंदरोमांचभयो॥अरुजा
सुरतआरंभबिषै॥जेकटाक्षिपूर्बचित
वनिमैंपलकनिकीलगनिकिधौंअं
तरहिपारतभयो॥अरुजोसुरतआ

रंभमैंअधरपानकोंकथाकेलिकरि
अंतरहोतभयो॥अरुजेसुरतआरंभ
मैंकामकलासहित॥सुरतयुद्धकोआ
नंदप्राप्तिसोअंतरकरतभई॥श्लो०
॥दोर्भ्यांसंयमितःपयोधरभरेणापी
डितपाणिजैराविद्धोदशनैःक्षताध
रपुटःश्रोणीतटेनाहतः॥हस्तेनान
मितःकचेधरमधुस्यंदेनसंमोहितः
कांतःकामपिटप्तिमापतदहोकाम
स्यवामागतिः॥१॥अर्थ॥कबिकह
तहै॥श्रीकृष्णजीअधिकआनंद
पावतभये॥कैसेहैंश्रीकृष्ण॥राधा
जीकेहस्तकरिबांधेहैं॥अरुपयो

धरनकेनारसौंपीडितकीनौं॥अरु
नषनिकौंनषछितदीनौं॥अरुअध(
रनिमेंदंतछितकीनौं॥अरुकटित
टताडनकीनौं॥अरुकेसग्रहिहाथ
सौंनवायौ॥अरुअधरमधुपापान(
करायकैंमोहै॥तथापिसंतोषनपा
वतनयो॥तातेंकामकीगतिबामत्र(
लटीहै॥श्लोक॥बामांकेरतिके(
लिसंकुलरणारंभेतथासाहसप्रा
यकांतजपायकिंचिदुपरिप्रारंभय
संभ्रमात्॥निस्पंदाजघनस्थली(
शिथिलितादोर्बल्लरुत्कंपितंचक्षो
मीलितमक्षिपौरुषरसस्त्रीणांकुतः

सिध्यति॥१॥अर्थ॥कबिकहतहै॥
श्रीराधाजीतिन॥श्रीकृष्णजीकौंजी(
तिबेकौं॥कांमसंग्रामकेआरंभबिषे
साहसअधिककीनौं॥जोबिपरीत(
सुरतसौप्रेमकेवेगतेंआरंभकीनौं॥
तबैजघनतौनिश्चलभयौ॥अरुबाहु
शिथलनएवद्वौस्थलकांपतहै॥
नेत्रमूंदे॥तातेंस्त्रीनकौंपुरुषरस(
कहांतेंसिद्धिहोइ॥संग्रामकौआ(
रंभकैसौहै॥रतिकेलिजोहैंचुंबना(
दिकताकरिग्यापतहै॥श्लोक॥त
स्यापाटलपाणिजांकितमुरोनिद्र
कषायेदृशौनिर्धौताधरशोणिमा

गीत०
१२७

विलुलितस्रस्तस्रजो मूर्द्धजाः॥ कों
चीदाम दरस्थलांचलमिति प्रातर्नि
खातैर्दृशोरेभिः काम शरैस्तदद्भुत
मस्मत्पत्युर्मनः कीलितं॥४॥ अर्थ॥
कवि कहत है॥ ए जो है काम के पं
च शर जु हैं अति तीषे॥ ते पति जो
श्री कृष्णजी तिनके नेत्रनि मैं श्री
राधाजी के बांण लगे हैं॥ अरु मन
बेध्यो है॥ तब यह आश्चर्य होत न
यो॥ ते पांच बांण कौंन॥ सो कहत हैं
एक तौ नषछित राधाजी को वक्षस्थ
ल विषै दूसरो॥ निशाकरि नेत्र आर
क है॥ तीसरो पांन तै गई है ललाई

तिनके ऐसे अधर॥ चौथो बांण कं
पित भयो॥ तातैं गिरत रहत है फूल
तिनतें ऐसे जु केश॥ पंचम कि धूए
कस्थल है अवलांना विषै ऐसे जु पं
च शर॥ ते श्रीकृष्णजी के मन मांहि
लगे॥ अरु मनकों बेध्यो है॥ सो यह
आश्चर्य भयो है॥ श्लोक॥ त्वामप्राप्य
मयि स्वयंवरपरां क्षीरोदतीरोदरे शं
के सुंदरि कालकूटमपिवन्मूढो मृ
डाणीपतिः॥ इत्थं पूर्वकथाभिरन्यम
नसो विक्षिप्य वक्षोंचलं राधायाः स्त
नकोरकोपरि लसन्नेत्रो हरिः पातु वः॥
॥५॥ अर्थ॥ कवि कहत हैं॥ ऐसे जु

गीतगो
१२८

श्रीकृष्ण॥ तेतु मारी रक्षा करजा॥ कैसे
हैं हरि श्रीकृष्णजी॥ श्रीराधिकाजी को
जु है अंग॥ तिन परि चंचल है नेत्र जि
नको॥ अरु कैसी कहै राधाजी॥ इंहि
भांति जे पूर्व कथानि सुनि करि उ चि
तो भयो है मन जिनको॥ सो कैसी है
पूर्व कथा॥ ता कथा के ताई श्रीकृष्ण
जी कहत है॥ अहो सुंदरी राधा॥ क्षीर
समुद्र की तीर मेरो जु बरण॥ सो करि
बे कौं उदित भई है॥ सो तुम्हैं तिन्ह पा
ये बिनु महा रुद्र षिजि करि कैं॥ विष
पान न्हात भयो॥ यह पूर्व कथा श्रीकृ
ष्णजी पैं सुनि करि राधाजी उचित भई

तब श्रीकृष्णजी राधिकाजी कौ अंचल
पट हरि करि कैं॥ राधिकाजी कौ अंग दे
षत भए॥ श्लोक॥ मा कोशः केश स्तर
लितमनके: स्वेदलो लौ कपोलौ स्प
ष्टा दष्टाधर श्रीः कुच कलश रुचा हारिता
हार यष्टिः॥ कांची कांचीज्जताशां स्तन
जघन पदं पाणिना छाद्य सा पश्यं
ता त्रम रूपं तदपि विलुलिता स्रग्धरा
यं धिनोति॥ ९॥ अर्थ॥ कवि कहतु है
स्रज्ञु राधा तथापि श्रीकृष्णजी के मन
कूं संतुष्ट करती है श्री राधिकाजी ह
स्त करि अंग अरु जघन॥ ततकाल
ही ढांपि करि अपनौं रूप देषति है॥

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोरूपकेसौकविराजमांनश्रोनि।
तहै॥केशपाशसबछूटिगयेहैं॥घू
घरवारेकेशगौरछोछिगयेहैं॥अ
रुकपोलपसीजिगयेहैं॥अरुपंडि
तजेअधर॥ताहिबारंबारदेषतहै
अरुस्तनकांतिकरिमोतिनकोहा
रहरिकियोहै॥अरुजदपिकांची
जुहैछुद्रघंटिका॥सोकौनहूं
छोरगईहै॥तथापिश्रीकृष्णजीके
मनहिंश्रीराधाजीतेहैं॥श्लोक॥ई
षन्मीलितदृष्टिमुग्धहसितंशीत्का
रधाराबशादव्यक्ताकुलकेलिका
कुविकसद्दंतांशुधौताधरं॥श्वा

सोत्तुंगपयोधरं॥श्वासोत्तुंगपयोधरो
परिष्वंगात्कुरंगीदृशोहर्षोत्कर्षवि
मुक्तनिसहतनोर्धन्योधयत्याननं।
७॥अर्थ॥कविकहतहै॥हरीणके
नेत्रसमाननेत्रहैंजिनको॥ऐसीजु
हैनायकाजाकोमुषदेषिबेकूंधन्य
हैजोपुरुषउनकेरूपकोपानकर
तुहै॥अरुकैसीहैनायकामतेउप
ज्योजुहैउसास॥तातैंनयेहैहर्षउत्क
र्ष॥तातैंआलसउपज्योंहै॥तातैंअ
तिशिथिलशरीरभयोहैजाको॥मु
षकेसोहै॥कछुएकमूंदेनेत्रहैजा
विषे॥बहुरिसुंदरताहास्यहैजामें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत० वक्रिकामकोप्रकासअधिकता
१२० को॥ताकेबसतैंजुअधिकआकु
लता॥कामकेलिमैंजुकुबचननयु
बचन॥तिनतैंजोप्रगटनईदंतनिकी
किरण॥तिनकरिसोभितहैअध
रजाबिषै॥श्लोक॥अथसहसामुग्धी
तंरतितांतेनितांतेनितांतखीनांगी॥रा
धाजगादसागाररमिदमानंदेनगोबि
दं॥८॥अर्थ॥राधाजीसुरतकेलिबि
षैआदरयुक्तआनंदसहितश्रीगो
बिंदजीसौंआगिलीअष्टपदीकरि
कहतहैं॥श्रीगोबिंदजीकैसेकहैं
॥अतिहीसदासंतुष्टहैं॥अरुराधा

जीकैसीकहैं॥अतिखेदयुक्तहैअं
गजिनको॥अथअष्टपदी॥ ॥राम
कली राग॥जतिताले॥श्लोक॥कुरु
यदुनंदनचंदनशिशिरतरेणकरे
णपयोधरे॥मृगमदपत्रकमत्रमनो
नवमंगलकलशसहोदरे॥निज
गादसायदुनंदनेक्रीडितहृदयानं
दने॥१॥ध्रुपद॥अर्थ॥हृदयको
आनंदकेदेनहारे॥ऐसेयदुनंदन
श्रीकृष्णजी॥तिनसौंक्रीडाकरतसं
तोषतैंश्रीराधाजूकहतहैं॥अहोश्री
यदुनंदनकृष्णजगबंदन॥अतिसी
तलजुहैतुम्हारेहस्तकमल॥तिनक

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रिमेरेपयोधनिबिषेमृगमदद्रुहै।
कस्तूरी॥ताकेपत्रकाकहिजेचित्र
॥तिनहीलिष्योकैसैंमेरेपयोधर
मनोभवजुहैकाम॥ताकौंमंगल
करिबेकोंकैसैंहै॥कलशसामा
नहैं॥श्लोक॥अलिकुलगंजनं
कंरतिनायकमोचनं॥त्वदधरचुं
बनलंबितकज्जलमुज्वलयप्रिय
लोचनं॥१॥अर्थ॥श्रीराधाजीक
हतहैं॥अहोश्रीकृष्णजी॥तुम्हा
रेचुंबनतैंजुफैल्योहैकज्जल॥ति
नबिषैंजैसैंजुमेरेनेत्रहैं॥सोतुम
अपनेंहस्तकरिकैसुधारऊ॥कैं

सेकहैंमेरेनेत्र॥अतिस्यामजोहैंभ्र
मर॥तिनकीसोभाकूंजीततहैं॥बङ्ग
रिरतिनायकजोहैकामदेव॥ताके
जोसायकबांण॥तिनहींबारंबार
प्रेरतुहैं॥तिनकीआग्यातैंकामबाण
निकौंछोडतहैं॥श्लोक॥नयनकुरंग
तरंगबिलासनिरासकरश्रुतिमंड
ले॥मनसिजपासबिलासधरेशुभ
वेशनिवेशयकुंडले॥२॥अर्थ॥श्री
राधाकहतहैं॥परमसुंदरहैवेषजि
नकौ॥अहोश्रीकृष्णजीमेरेकरण
निकुंडलपहिराऔ॥कैसेकहैंमेरे
करण॥मनसिजकहीजेकाम॥ता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत० केबिलासहीकरतहै॥सोकहा॥क
१३५ टाछनहीं॥कांमकीपासिहै मानों॥
ताहिनेत्रजोलयेकुरंग॥तिनकेजो
तरंगकटाछि॥तिनहींरोकिराषतहै
॥श्लोक॥भ्रमरचयंरचयंतमुपरि
चिरंसुचिरंममसंमुखे॥जितकमले
बिमलेपरिकर्मयनर्मजनकमलकं
मुखे॥२॥अर्थ॥श्रीराधाजीकहतहै
अहोश्रीकृष्णजी॥मेरोजुहैअतिसुंद
रमुष॥तापरिबिथुरीजुहैअलका॥ति
नहींसुधारो॥सोकैसीहैअलका॥जि
नदेषिकरिभ्रमरआवतहै॥स्यामअ
लकहै॥तिनमैंभ्रमरआपनीकांति

पावतहै॥श्लोक॥मृगमदरसबलितं
ललितंकुरुतिलकमलिकरजनीक
रे॥बिहितकलंककलंकमलानन
बिश्रमितश्रमसीकरे॥७॥अर्थ॥रा
धाजीकहतहै॥कमलसमानमुष
हैजिनको॥अहोश्रीकृष्णजीमेरोल
लाटचंद्रमा॥ताबिषैमृगमदजुहैक
स्तूरी॥ताकरितिलककरउललित
जुहैमनोहरतिलक॥कीनीहैकलं
ककीजोसोभा॥सोकहा॥ललाटचं
द्रमांताबिषैअरुकलंकचाहिजो॥से
द्रस्थोकस्तूरीकोतिलक॥कलंक
समानहै॥बहुरिकैसोहैललाटहरि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

नयेहैंप्रस्वेदकणजातैं॥श्लोक॥मम
रुचिरेचिकुरेकुरुमानदमनसिज
ध्वजचामरे॥रतिगलितेललितेकुसु
मशिखंडिशिखंडकडामरे॥२॥
अर्थ॥श्रीराधाजीकहतहै॥मानके
दैनहारऐसे॥अहोश्रीकृष्णजी॥मे
रेजोअतिरुचिरहे॥चिकुरहेकेस॥ति
नविषेफूलगूंथ्यउ॥कैसेहैकेस॥का
मध्वजकहिएकाम॥तिनकेचमरहै॥
मानउ॥बहुरिजेरतिकलिविषेछू
टेतबअतिहीसोभापावतहै॥बहु
रिशिखंडीजुहैमयुर॥तिनकीजोपि
छुतिनकीसोभाजीतीहै॥श्लोक॥स

रसघनेजघनेममसंबरदारणवार
णकंदरेमणिरसनाबसनाभरण
निशुभाश्रयबासयसुंदरे॥३॥अर्थ
राधिकाजुकहतहै॥मनोजुचित्तजि
नकोहै॥अहोश्रीकृष्णजी॥मेरीअ
तिसुंदरहैजघनकटिस्थल॥ताविषे
मणिजटितहैक्षुद्रघंटिका॥औरब
स्त्रआभूषनपहिराउ॥बहुरिकै
सीकहैमेरीजघन॥अतिसरसस्थूल
है॥बहुरिसंबरदारणजोकाम॥सोई
नयोवारणहस्तीताकोवासजावि
षे॥श्लोक॥श्रीजयदेवबचसिजयदे
वहृदयंसदयंकुरुमंडने॥हरिचरण

गीत॰ १३४ स्मरणामृतनिर्मितकलिकलुषज्व
रखंडनो॥७॥ अर्थ॥ श्रीजयदेवकवि
करि कह्योहै सोजुगीतरूपीवचनताबि
षैदयाजुकमनकूंराषऊ॥ कैसोजुहै
वचन॥ श्रीहरिकेचरणनिकोस्म
रण॥ सोईभयोअमृत॥ ताकरिकै
कलियुगकैबिषैहरिकरतहै॥
अरुजनकनिकूंजयकेदैनहारहै
अरुजनकनिकोआभूषनहै॥ इ
तिश्रीगीतगोविंदेचतुर्विंशाष्ट
पदीसमाप्ता॥२४॥ ॥श्लोक॥ रच
यकुचयोःपत्रंचित्रंकुरुष्वकपोल
योर्घटयजघनेकांचीमंचस्रजा

कबरीभरं॥ कलयवलयश्रेणीं
पाणौपदेमणिनूपुराविति निग
दितःप्रीतःपीतांबरोपितथाकरो
त्॥१॥ अर्थ॥ कविकहतहै॥ श्रीरा
धिकाजीकहतभई॥ अहोश्रीकृ
ष्णजी॥ मेरेकुचनिऊपरिचित्रलि
षऊ॥ अरुजघनबिषैछुद्रघंटिका
बांधऊ॥ अरुफूलनसूंगूथिमेरेके
शशोभितकरो॥ अरुफूलनिकीमा
लापहिरावो॥ अरुहस्तनिबिषै
कंकनपहिरावो॥ अरुमेरेचरण
निकूंनूपुरसोभितकरऊ॥ इहिभां
तिश्रीराधिकाजीकह्यो॥ तबपरम

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संतुष्टश्रीकृष्णजीहोयकरिकरतन
यो॥श्लोक॥पर्यंकीकृतनागनायक
फणाश्रेणीमणीनांगणेसंक्रांतप्र
तिबिंबसंवलेनयाबिभ्रद्वपुःप्रक्रि
यांपादांभोरुहधारिवारिधिसुताम
क्ष्णांदिदृक्षुःशतैःकायव्यूहमिवा
चरन्नुपचितांकूतोहरिःपातुवः॥१
॥अर्थ॥कविकहतहै॥उपज्योजु
हैकामजिनकौ॥ऐसेहैकृष्णजीतु
मारीरक्षाकरहु॥कैसेहैंहरिकृ
ष्णजी॥सेजकीठौरकीनौंजुहैसेष
नाग॥ताकेफणाकीमणितामेंप्र
तिबिंबतनयेहैं॥सोप्रतिबिंबनहीं

यो॥चरणपलोटतहैमांनडुंलक्ष्मी
जी॥तिनहींबहुतनेत्रनिकरिदेषि
बेकौंबहुतदेहधरीहैमांनौं॥श्लोक
॥यज्ञांधर्वकलासुकौशलमनुध्यानं
चयद्वैष्णवंयच्छृंगारविवेकतत्वमपि
यत्काव्येषुलीलायितं॥तत्सर्वंजयदेव
पंडितकवेःकृष्णैकतानात्मनःसा
नंदाःपरिशोधयंतुसुधियःश्रीगीत
गोविंदतः॥२॥अर्थ॥श्रीजयदेवपं
डितजू॥कवितनकेगाइबेमेंचतुरा
ईकीनीहै॥अरुश्रीनारायणजीकौ
स्मरणहै॥अरुकामकंरिबेकौंबल
है॥सोसबपंडितआनंदपूर्वयागी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत० १२६

तगोविंदटीदेपिबिचारिस्तुइकर
ज्ञाकिसेहैश्रीजयदेव॥श्रीकृष्णच
रणनिमेंएकाग्रलग्योहैमनजिन
कौ॥इतिश्रीगीतगोविंदमहाका
व्यजयदेवकृतेस्वाधीनभर्तृकाव
र्णनश्रीतिपीतांबरोनामद्वादशस
र्गः॥१२॥ ॥अथाष्टपदीरामक
रीरागे॥श्लोकः॥मधुमथनमूर्त्तिव
रहंडुकरकामुकं॥बहसिबक्रबारि
सतरंगे॥हरिचरणनखमिंडरजगदं
डनिर्गताब्रह्मजलपात्रकृतसंगे॥
नमोदवीगंगेनमोमातगंगेहरिपि
धमगमलकनंदे॥१॥ध्रु०॥जयदे

वकबिकहतहै॥अहोदेवीगंगातुम
कोंनमस्कारहोउ॥अहोदेवीअलक
नंदा मेरेसोसकलपापतिनहीहरौ
कैसीहोतुम॥मधुमथनजुहैश्रीत्रि
बिक्रम॥तिनकीमूर्त्तिरूपहैबक्रता
ना बकृतकेसोहैजनो॥ईंदुकोहिस
चंद्रमां॥ताकीजोकिरणतिनसामा
न्यनिर्मलहै॥अरुकैसीहोतुम॥हरि
केजोचरणनखपिंड॥तिनकरिभेदौ
जुहैजगदंडब्रह्मांडतहांतैंनिकसीहो
॥अरुश्रीब्रह्माजीकेजोजलपात्रहै॥
कमंडलता [illegible] बिषैकीनौहैसंगजिन
॥[illegible]॥तीर्थदरकारिणीसगरजो

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धारिणी॥हिमशैलपाषाणभेदःपा
वृयसिनागरंपूरयसिसागरंसंग
ताविधिगिरिपारा॥३॥अर्थ॥बकु
रिकैसीहौतुम॥तीर्थनहूंकौंबरुश्रे
ष्टकरतहो॥बकुरिशुद्धरिहौ॥राजास
गरकेपुत्रजिन॥बकुरिभेदेहैंहिमवं
तपर्बतकेपाषाणजिन॥बकुरिनग
रजोहैलोकजिन्हैंपबित्रकरतहै॥अ
रुसागरजुहैसमुद्रताहिपूरणकर
तहो॥अरुबंध्याचलकोपादुकहि
जेनिकटतहांसंगतैप्रापतभईहौ॥
॥श्लोक॥त्वमसिजनपावनीचतुर्द
धिगामिनीसप्तरिषिसुकृतकुल

सारे॥कनकगिरिलंबिता॥सकल
मुनिबंदिताहरमुकुटसितकुसुम
माले॥४॥अर्थ॥जयदेवकहतहै
॥अहोदेवीगंगाजी॥जनजोहैलोक
तिनकोंपबित्रकरतहो॥अरुचा
रयोंसमुद्रकोंप्रापतहोतहो॥अरु
सप्तऋषीश्वरनकोजुसुकृतसमूह
ताकेतुमसारहौ॥अरुकनकगि
रजुहैसुमेर॥तातेंलंबितप्रगटभई
हो॥अरुसकलजोमुनीश्वरजिन
कीनीहैतुमकोंनमस्कार॥अरुह
रकहीजेश्रीमहादेव॥तिनकोजुमु
कुटमस्तकताबिषैस्वेतपुहपकी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत० मालाहैमानऊं॥श्लोक॥गंगूपज
१३८ लनिसटसतमेघतोजयस्यकर्म
करगंभीरतोये॥परलोकबंधूर
सितटनिसुरसिंधुरासिसुरसदन
साधनपापे॥५॥अर्थ॥श्रीजय
देवजीकहतहै॥अहोश्रीगंगाजी
कीनेंसोजग्यातिनतेंतुम्हारोएक
अंगुलीजलअधिकफलदेतुहै
कैसीहोतुमकरजुहैतरंग॥अरु
मकरजुहैमछ॥तिनकरिगंभीर
हैतोयजिनको॥अरुतुमपरलो
केबंधूसहायकरिबेकों॥अरु
लसैहैतटजिनकें॥अरुसुरजो

हेदेवता॥तिनकीसिंधुनदीहे॥अ
रुसुरसदनजुहैस्वर्गलोकताको
साधनउपाहै॥श्लोक॥सलगस
लिलनिर्धूतपुलिनअतिकुर्वतां
तवनामनिर्मलालापं॥४॥अर्थ॥
जयदेवकबिकहतहै॥अहोश्री
गंगाजी॥तुम्हारोजोनामताकोअ
तिनिर्मलहैआलापताहिजोक
रतहै॥तुमतिनकेपापहिहरतहे
जेमनुष्यतुम्हारेअतिनिर्मलना
मकूंलेतहै॥तिनकेतुमपापकों
दूरिकरतहै॥अरुकैसीहोतुम
॥मंगलजुहैपरममंगलकारी॥अ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोजुसलिलजलता।ताकरिनिर्द्धूत
धोएहैंपुलिनतटजिनके।बज्रा
रितुमकैसीपबित्रपावनहो।वी
सतकहिजेदेषिबौ।चितनकहि
जेस्मरणकीनेंतैं।पीतकहीजेज
लपांनकरिबौ।अरुजोअवगाह
नकीनेंतैं।अरुमंजनस्नानकीनें
तेंपापकौंहरतुहै।श्लोक।सगर
सुतसंगमेजसदमरसुंदरीहृतके
दुःकृतउरापे।निरयगतिबाधकेनि
र्वाणपदसाधकेनकनिनिहित
संतापे।६।अर्थ।जयदेवकबिक
हतहै।अहोश्रीगंगाजीकैसीकहौ

तुम।सगरकेसुततिनकेसंगबिषे
सोभितहो।अमरसुंदरीअप्सरा।
तिनकीजुहृतिहै।सोकहा।जैसेंदू
तीनायकाहै।लेजायनायककूंमि
लावे।तैसेंतुमसगरसुतउधारिकैं
अप्सरनिकूंमिलायेहैं।बजारिउक्
तजुहैडराचारी।तिनकौंगतिकर
तहो।अरुनिर्वाणपदजुहैमोक्ष
ताकीतुमदेनहारहो।अरुभक्त
जननिकोमनकोहरिकीनौहैसं
तापजिन।ऐसीतुममोक्षदायनी
हो।श्लोक।इहनिषिलमुनिगणै
रिहनिषिलसुरगणैरिहनिषिल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीत०
१४०

बेदत्रधारे॥सेव्यसेपीयसेगीयसेजा
न्हंमुनिकम्पकेसंसारसारे॥७॥अ
र्थ॥जयदेवकबिकहतहै॥अहो
श्रीगंगाजी॥ईहांअरुउहांही॥सक
लमुनिजनतुमारीस्तुतिकरतहै॥
अरुसकलदेवतातुमारोजलपां
नकरतुहै॥अरुसकलबेदनिका
रिसंसारमें॥उधारकरिबेकोतुम्हेंगा
वतहै॥अरुजाह्नुऋषीश्वरकीक
न्याहै॥श्लोक॥इतिरामलक्ष्मणो
कोशिकानुज्ञयासुरसरित्कृतन
मस्कारौ॥नतातिमातिमाधवेधीर
जयदेवकबितारयासिनवजल

धिपारे॥८॥अर्थ॥इहिभांतिश्रीरा
मजीअरुलक्ष्मणजी॥कौसिकजु
हैबिश्वामित्र॥तिनकीआग्यापाय
करिसुरसरित्जुहैगंगाहै॥तिनकौं
नमस्कारकरतनए॥अरुपरमधी
रजहै॥जयदेवकबिकहतहै॥अहो
श्रीगंगाजीनवजलधिजुहैसंसार
समुद्र॥ताकौंपारउतारतहो॥ऐसी
तुमत्रैलोक्यपावनीहो॥इतिश्रीज
यदेवकविकृतश्रीगंगाअष्टपदीपं
चबिंशतिभीसंपूर्णंसमाप्तम्॥ ॥ॐ
शुभंभवतु॥ ॥मितिजेठबुदि१०
संवत्१८ २८ वर्षे॥श्रीराधाकृष्ण:

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाण्डुलिपिः समाप्ता

MANUSCRIPT ENDS

ختم شد

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi